पैगम्बर मोहम्मद (ﷺ) कि संक्षिप्त जिवनी

الموجز في السيرة النبوية

النسخة الهندية

लेखकः

डॉक्टर ख़ालिद पुत्र हामिद अल-हाज़िमी

पूर्व प्रोफेसर इस्लामिक यूनिवर्सिटी मदीना मुनव्वरा

अनुवाद:

मुहम्मद रिजवान अल-मदनी

पैगम्बर मोहम्मद स. कि संक्षिप्त जिवनी

लेखकः

डॉक्टर ख़ालिद पुत्र ह़ामिद अल-ह़ाज़िमी

पूर्व प्रोफेसर इस्लामिक यूनिवर्सिटी मदीना मुनव्वरा

अनुवाद

मुहम्मद रिजवान अल-मदनी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह तआलाका फरमान हैः

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللهَ كَثِيْرًا

(सुरतुल अहजाब 21)

अनुवादः यकिनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाहमे अच्छा नमुना है। हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह तआला कि और कयामत के दिन कि उम्मीद रखता है और बहोत ज्यादा अल्लाह का जिक्र करता है।

प्रस्तावना

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लामकि जिवनी इस्लामि शरियतकि व्यवहारिक तस्वीर है। हमारे नबि ने जिवनके हर क्षेत्रमे इस्लामि शरियतका अमलि नमुना पेश किया, आपकि जिवनी इश्वरिय आदेशका व्याहारिक कार्यन्वयन था।

निश्चित रूपसे यह कहा जा सकता है के जबतक इस धर्तिपर जिवनके आसार और मनुश्यका वजूद बाकि रहेगा तब तक मुस्लिम नसल कि प्रशिक्षणके लिए रसूलुल्लाह के जिवनीकि आवश्यक्ता बाकि रहेगि, जिसके नबि कि जिवनी को ऐसि अंदाज मे पेश करने कि आवश्यक्ता है जो नइ नसल के लिए उपयुक्त, उनके जिवन पद्दति के लिए मोनासिब और उनके फिक्रि शैलि के मोवाफिक हो।
उसके अतिरिक्त एक महत्वपुर्ण बात यह भि है कि ऐसे अंदाज मे उनकि परवरिश कि जाए जिस से उन के अन्दर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लामके लिए प्रेमभाव और उनकि आज्ञा पालन का जज्बा पैदा हो, इसि तरह से पैगम्बर कि जिवनी पर लेख और आरटिकल्स से प्रभावित करना भि पैगम्बरकि जिवनीके पढने पढाने का एक उद्देश्य है।

इसि उद्देश्य के तहत पैगम्बर कि जिवनीपर यह किताब लिखी गई है जिसके माध्यम से पैगम्बर कि जिवनीको बताने के साथ साथ नैतिकताको जिवनमे लागु करना है जिसके जरिए नइ पिढि के मन-मस्तिष्क मे सहीह अकिदा और इश्वर-भक्ति मे रसूलुल्लाह कि आज्ञा-पालन का जज्बा पैदा हो ताकि उसके अन्दर अल्लाह और उसके संदेशवाहक कि मोहब्बत पोख्ता हो जाए और ज्ञान व नैतिकता के हर क्षेत्र मे उनका सम्बन्ध मजबूत हो जाए।माता-पिता या उनके अतिरिक्त भि जो लोग ज्ञान और नैतिकता कि जिम्मेवारि निभाते हैं उनके लिए इस पुस्तक मे नई-पिढि के जेहन मे इस विषयको रासिख करने और उनकि तरबियत मे भागिदारि निभानेका मोका उपलब्ध किया गया है जैसा कि आपको पुस्तकके पाद-टिप्पणि मे जगह जगह पर मिलेगा।

ए अल्लाह अपने नबिमोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी को लिखने मे मेरी मदद फरमा, और उसे इस तरह पेश करने मे मुझ सक्षम बना दे जिस से उसका बेहतरीन उद्देश्य, बल्कि उस से बेहतरीन लक्ष्य पुरा हो सके। ऐ दोनो जहाँ के पालनहार मेरा यह कार्य केवल तेरी रजा के लिए है, इस से अपने बन्दोँ को लाभ पहोँचा, और कयामत तक के लिए इसे सदका-ए जारिया बना दे, ए सर्व-शक्तिमान अल्लाह तु अपनकि कृपा से इसे स्विकार कर ले।

5-9-1433 हिज्रि

प्रथम अध्याय

जन्म से पैगम्बर बनाए जाने तक

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्मः

-जन्मभुमीः

शिक्षकः हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका जन्म और पालण-पोषण मक्का मे साधारण बच्चोके तरह हि हुवा, लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको अल्लाह तआलाकि विशेष निगरानि हासिल रहि जैसाकि आपको धर्तिपर चलने वाले सबसे उत्म और सुन्दर बच्चेकि इस आकर्षक जिवनीसे इस बातका बखुबि अनुमान हो जाएगा।

विधार्थीः उस्ताद मोहतरम ! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकि जिवनीके बारे मे जाननेकि इच्छा हमारे अन्दर बढ चुकि है, आप बिना विलम्ब के हमे विस्तार से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी के बारे मे आवगत कराने का कष्ट करेँ।

शिक्षकः प्रिय बच्चोँ! मै खुद मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी से आपको आवगत कराने के लिए उत्सुक हुँ..... आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी के सभि पहलु अति मनमोहक हैँ। लेकिन उस से पहले हमेँ मक्का शहेर के बारे मे जानना भि जरूरी है जहाँ आपका जन्म हुवा, मक्का उस समय एक छोटा सा गावँ था जहाँ कोई खेत खलियान तक न था जैसा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फरमायाः

رَبَّنَآ اِنِّىٓ اَسۡكَنۡتُ مِنۡ ذُرِّيَّتِىۡ بِوَادٍ غَيۡرِ ذِىۡ زَرۡعٍ عِنۡدَ بَيۡتِكَ الۡمُحَرَّمِ

अनुवादः हे मेरे रब ! मैने अपनि कुछ सन्तान इस बंजर जंगल मे तेरे पवित्र घर के करीब बसाया है।(सुरह इब्राहीम 37)

परन्तु अल्लाह कि कृपा से वहाँ हर जगह से रिज्क पहोँचा करता था क्यो के मक्का के वासि व्यापार के लिए गर्मि के मोसम मे सिरिया कि यात्रा करते थे और वहाँ से विभिन्न प्रकार के सामग्रि लाया करते थे। फिर

ठन्डि के मोसम मे वह लोग यमन कि यात्रा करते और वहाँ से भि विभिन्न प्रकार के व्यापारिक सामग्रि ले कर आते, उस जमाने मे मक्का के वासियोका इसि प्रकार गुजर-बसर होता था[1]।

विधार्थीः उस्ताद! क्या उस समय हरम मौजूद था ?

शिक्षकः उस समय भि काबा मौजूद था। इस लिए कि काबा का निर्माण अल्लाह के नबि इब्राहीम अलैहिस्सलामके हाथो हुइ थि जैसाकि अल्लाह तआला ने कुरआन मे इसका उल्लेख किया हैः

---

[1] बेहतर होगा के शिक्षक गर्मि और ठन्डि के यात्रा के बारे मे विस्तार से बच्चोँ को आवगत कराएँ और उस सम्बन्ध मे कुरआन मजिद मे उल्लेखित इशारा से भि आवगत करावेँ।

अनुवादः जब इब्राहीम और इसमाईल अलैहिमुस्सलाम काबा कि बुनियाद और दिवारेँ उठाते जाते थे और कहते जाते थे कि ए हमारे रब! तु हम से स्विकार कर तु हि सुनने वाला और जानने वाला है।

विधार्थीः क्य उस वक्त भि लोग हज्ज के लिए जाया करते थे जैसा कि आज जाते हैँ?

शिक्षकः बहोत खुब मेरे बच्चोँ! लोग उस वक्त भि अल्लाह के घर हज्ज और काबाके तवाफके लिए जाया करते थे इस लिए कि अल्लाह तआला ने अपने नबि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह आदेश दिया था कि वह लोगोँ मे हज्ज का एलान करेँ जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰي كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

अनुवादः और लोगोँ मेँ हज्ज का एलान कर दे, लोग तेरे पास पैदल भि आयेंगे और दुबले पतले उँटो पर भि दूर दराज सभि रास्तों से आयेंगे।(सुरह हज्ज 27)

अर्थात वह अल्लाह के घर के हज्ज के लिए शौक से पैदल भि और उँट कि सवारि पर भि दूर दराज इलाकोँ से आयेंगे।

विधार्थीः मक्का का इतिहास और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हज्ज से जो सम्बन्ध है उसे जानकर हमे बहोत फाइदा हुवा। उसतादे मोहतरम अल्लाह आप को बेहतर बदला अता फरमाए। लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाल्यकाल कि क्य तफ्सिल हैँ? हम यह सुनने के लिए उतसुक हैँ[1]।

शिक्षकः मेरे बच्चोँ! आपने अच्छा प्रस्न किया है। मै पहले आपको मक्का मोकर्मा के बारे मे बता चुका हुँ ताकि आपके मष्तिस्क मे हमारे नबि और रहनुमा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म स्थान का तसौव्वर पैदा हो सके।

-जन्मतिथिः

शिक्षकः हमारे नबि मोहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म सोमवार के दिन 12 रबिउल औव्वल को आमुल फील मे हुई [2]।

विधार्थिः उस्ताद मोहतरम! क्या हि बेहतर होता कि आप हमेँ रबिउल औव्वल के सम्बन्ध मे कुछ बता देते के इस से क्या मुराद है?

शिक्षकः बहोत खूब मेरे शिष्योँ! इस प्रस्न से पता चलता है कि आप मेरि बातोँ को ध्यान पुर्वक सुनते हैँ और यह भि मालूम होता है कि आपके अन्दर ज्ञान प्रप्ति कि तडप है, बहोत खूब।

[1] इस पाठयक्रम मे शिक्षक को चाहिये के बच्चोँ को अवश्यक जानकारी उपलब्ध कराएँ और मक्का कि पुरानी तसावीर के माध्यम से मक्का के इतिहास से उन्है सुचित करेँ।

[2] सहिह मुस्लिम (2/820) हदीस नः (198-1162) अकरम जिया उमरी अल-सिरतुन नबवियह अस्सहिहा (1/96-98)

एक वर्ष मे बारह महीने होते हैं, पहला महीना मोहरर्म कहलाता है, फिर सफर का महीना आता है और तिसरा महीना रबिउल औव्वल है जिस मे हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुवा, इस के बाद रबिउल आखिर, फिर जमादिल औव्वल फिर जमादिल आखिर, फिर रजब, फिर शाबान और उस के बाद रमजान आता है जो कि रोजे का महीना है, उसके बाद शौव्वाल का महीना आता है जिस मे हम ईद मनाते हैँ, फिर जुल्काअदह और आखरी महीना जुल-हिज्जा है जिस मे लोग हज्ज का फरीजा अदा करते हैँ, मक्का मोकरर्मा जाते और मेना, अरफा और मुजदलिफा जैसे मशाइरे मोकद्दसा पर हज्जके अरकान और वाजेबात अदा करते हैँ, जुल हिज्जा साल का आखरी महीना है और हर महीना मे तीस दिन होते हैँ[1]।

विधार्थीः बहोत बेहतर उस्तादे मोहतरम, आपने हमें बडे लाभदायक बात बताया है। लेकिन आमुल-फिल क्या है ? मै समझ नहि पाया ?

शिक्षकः यह एक बहोत हि मनोरन्जनात्मक कहानी है जिसे मै आप लोगोँ के सामने छोटकरि मे बता रहा हुँ।

हबशा नमक एक देश मे एक राजा था जिसका नाम अबरहा था उस के पास एक जगह थि जहाँ लोग हज्ज कि तरह गिरोह दर गिरोह आते थे, लेकिन बहोत सारे लोग उस के इस जगह पर आने के बजाए हज्ज के लिए मक्का चले जाते थे।

तो उस राजा ने सोंचा कि काबा को जड से हि खतम कर दिया जाए ताकि वहाँ किसि के आने का सम्भावना हि बाकि न रहे और सब लोग उसके मुल्क कि यात्रा करने पर बिवश हो जाएँ।

काअबा के बारे मे आप लोग जानते हैँ कि उसे अल्लाह तआला के अदेश पर अल्लाह के पैगम्बर हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तामीर किया था, इसि लिए हम उसे बैतुल्लाह, हरम और काअबा जैसे नामो से पुकारते हैँ।

वह राजा हाथियो कि झुण्ड और इन्सानोँ कि एक फौज ले कर काअबा को ढाने कि गरज से निकल पडा, जब मक्का के करीब पहोँचा तो तो मक्का वासि उसकि फौज और हाथियों का झुण्ड देखकर डर गए क्योँ कि मक्का मे हाथि नाम कि कोई चिज ना थि और उन मे से ज्यादतर लोग हाथि के बारे मे जानते भि न थे इस लिए कि उस समय टि-वि च्यानल और मिडिया का वजूद न था के हाथियो कि तस्विरें प्रसारण कि जाएँ[2]। मोहम्मद

[1] बेहतर होगा शिक्षक महीनो के सम्बन्ध मे बच्चोँ को अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध कराएँ और प्रस्न-उत्तर के माध्यम से महीनो के नाम याद कराने का प्रयास करेँ।

[2] शिक्षक विधार्थियोँ को इस के बारे मे और जानकारी दें के उस समय के लोगों कि स्थति क्य थि और यह के वह लोग नए युग के टेक्नालोजि से अन्जान थे उनके पास उन फल-फुल और जानवरोँ के बारे मे जानकारी भनि न थि जो उनके मुलुक मे नहि पाए जाते थे क्योँ कि उस समय सफर और ढुवानी बहोत मुश्किल था इसि लाए आज जो नेमतें हमे मिलि हैं उसपर हमे अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुतल्लिब काबा के निगहबान थे, वह मक्का वासियों कि सरदारि भि करते थे, लोग उस मामले मे राय-विचार के लिए उनके पास जमा हुवे। अब्दुल मुतल्लिब ने कहा कि हम कुछ नहि कर सकते, लेकिन काअबा का एक रब और मालिक है जो जरूर उसकि हिफाजत करेगा।

हुवा भि यहि कि अल्लाह तआला ने अपनि शक्ति और क्षमता से अबरहा राजा के फौज पर पत्थर बरसाने के लाए बहोत से पक्षियों को भेज दिया, पत्थर उनके सर पर गिरता और उनके नितम्ब से निकल जाता, इस तरह अल्लाह तआला ने उन्हेँ भस्म कर दिया। अल्लाह तआला ने इस किस्सा को कुरअन मे युँ बयान किया हैः

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْل تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ
فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝

अनुवादः क्या तु ने नहि देखा कि तेरे रब ने हाथि वालोँ के साथ क्या किया ? क्या उस ने उनकि चाल को बेकार नहि कर दिया ? और उनपर पक्षियों के झुरमुटको भेज दिया। जो उन्हेँ मिट्रटि और पत्थर कि कंकरियाँ मार रहे थे। जो उन्हे खाए हुवे भुसे कि तरह कर दिया। (सुरतुल फीलः 1-5)

विधार्थीः सुब्हानल्लाहिल अजीम! अल्लाह तआला तो बहोत हि शक्तिशालि और क्षमतावान है।

शिक्षकः हाँ मेरे बच्चोँ! अल्लाह कि क्षमता बहोत हि महान और तुम सब के सोँच से भि ज्यादा है। गौर करो कि अल्लाह तआला ने किस तरह से अबरहा और उसकि फौजको भष्म कर के किस तरह से जुल्म और जालिमों को सजा से दोचार किया। अल्लाह तआफा एसे हि लालच कि सजा देता है ।बरहा ने गलत और नाजाएज तरीके से लोगोँ को अपने देश मे जमा करने कि लालच कि जिस पर अल्लाह तआला ने उसको सजा दिया।

यस भि गौर करो कि अल्लाह तआला ने कमजोरों कि मदद किस तरह से कि, दुश्मनों के मोकाबले मे मक्का वासियोँका साथ दिया, किस तरह अब्दुल मुत्तलिब ने अपने रब से मदद मागाँ और रब ने उनकि मदद कि (उन्हाने कहा कि काबा का एक रब है जो जरूर उसकि हिफाजत करेगा) इस से यह भि पता चलता है कि वह अपने बुजुर्ग व बरतर रब के प्रति मजबूत अकिदा रखते थे।

विधार्थीः तब तो हमारे उपर भि लाजिम है कि जब हम अपने रब से दुवा करें और कुछ तलब करें तो यह आस्था रखें कि वह जरूर हमारी मदद करेगा और हमारी जरूरत पूरी करेगा।

शिक्षकः हाँ मेरे बच्चोँ हमारे आस्था का यह अहम हिस्सा है कि हम दिल से यह अकिदा रखेँ कि अल्लाह हमारी दुवा को सुनता है, चाहे हमारी दुवा मोकम्मल पूरी हों या ना हों, इस लिये कि जितना हम अपने बारे मे जानते हैं अल्लाह तआला उस से कहि ज्यादा यह जानता है कि हमारे लिये कौन सि चिज ज्यादा बेहतर और लाभदायक है।

हमारे उपर अनिवार्य है कि हम लोगोँ पर अत्याचार करने से बचें और उनके पास जो भि नेमत और दौलत है उसपर बुरि नजर न रखेँ क्यों कि उस से बरबादि कि राह निकलति है और अल्लाह तआला अत्याचार, ब्यभिचार और लोभ करने वाले को सजा से देता है।

इसका मतलब यह है कि मक्का और हरम कि अपनि अहमियत और हुरमत है जिस के आदाब का पास व लेहाज रखना जरूरी है, बल्कि हमें अपने घरों से ज्यादा उस क एहतराम का खयाल करना चाहिये[1]।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वंशावलिः

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ बिन कोसै हैं , और आपकि माता का नाम आमना है[2]।

आपके माता पिता कोरैश कि खानदान से थे, हसबो नसब मे यह कबिला अरब का सब से बेहतरीन और इज्जतदार माना जाता था।

कोरैश कबिले का सब से उँचा खानदान बनु हाशिम था जिस से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका सम्बन्ध था।

कोरैश का नसबनामा इस्माईल बिन इब्राहीम तक पहोँचता है जिन्होँ ने काअबा कि तामीर मे अमने पिता कि मदद कि जैसाकि पहले सबक मे उसका जिक्र गुजर चुका।

विधार्थीः यह अल्लाह तआला का बडा हि फजल है कि अल्लाह ने हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको सब से शरीफ खानदाम मे पैदा किया और आपका सिलसिला-ए नसब तमाम नबियोँ के बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम से जोड दिया।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनाथ होनाः

शिक्षकः हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यतीम हि पैदा हुवे क्यो कि आप जब अपनि माँ के पेट मे हि थे तभि आपके पिता का देहान्त होगया यानि आपके पिता आपको देख ना सके। पुराने जमाने मे अरबोँ मे रिवान था के वह अपने दुध पिते बच्चोँ को परवरिश के लिए देहात मे भेज देते थे ताकि वह जिस्मानि बिमारियोँ से बचे रहेँ और देहात मे रह कर उनके अन्दर जिस्मानि ताकत व कुव्वत पैदा हो इस लिए कि देहाति माहोल मे किसि कदर खुशुनत व कुव्वात पाइ जाति है, इसि तरह वह देहात मे रह कर

---

[1] शिक्षक बिभिन्न उदाहरणो के जरिये मक्का मोकर्मा कि अजमत बयान कर सकते है, कुछ एसे उदाहरण भि पेश कर सकते हैँ जिस से मक्का का खुसूसी सफाइ और एहतराम का पहलू वाजेह हो सके और किन-बेच जैसे मोआमलात मे मक्का के अन्दर किसि को तक्लिफ पहोँचाने से दूर रहने का सबक मिले।

[2] इब्ने हजर, फत्हुल-बारिः (14/230)

अमलि मश्शाकि के माध्यम से भाषा भि सिख लेते हैँ, इसि गरज से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको भि हलीमा बिन्ते अबु जोएब अपनै घर ले गईँ और आपको अमना दुध पिलाया[1]।

विधार्थीः यह अच्छि बात है कि हम अरबोँ कि पुराने आदाब के बारे मे जानेँ और देहाति बच्चोँ के अन्दर पाइ जाने वालि सेफात से आगाह रहेँ।

शिक्षकः बिल्कुल सहि मेरे बच्चों' जिस तरह शहरी बच्चों के अन्दर कुछ विशेष खुबियाँ होति है जो उन्हेँ देहाति बच्चों से फरक करति हैं इसि तरह देहाति बच्चों के अन्दर भि कुछ विशेष खुबियाँ पाइ जाति हैं। इसकि वजह यह है कि इन्सान अपने माहौल से प्रभावित होता है, इसि लिए सिर्फ माहोल और हवा-पानी के मुख्तलिफ होने कि वजह से हमे एक दुसरे को कमतर नहि समझना चाहिये।

विधार्थीः इसका मतलब है कि यह महिला बडि भाग्यशाली थि कि उन्हे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुध पिलानेका अवसर प्रप्त हुवा।

शिक्षकः मेरे बच्चोँ आपने एक बेहतरीन और मनमोहक नतिजा निकाला जिस से आपकि तवज्जोह और समझ-बूझ का पता चलता है, यकिनन् उस महिलाको बडि भलाइयाँ नसिब हुई।

विधार्थीः शायद आप हमें उनके बारे मे कुछ बताने वाले हैँ। हम यह जानना चाहते हैँ कि उस महिला के साथा क्या पेश आया।

शिक्षकः बहोत खूबः उनका बेटा भुक कि शिद्दत से बिलक रहा था, लेकिन उस महिला के थन दुध से खालि थे, जैसे हि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुध पिलाने के लिए गोद मे लिँ उनके थन मे इतना दुध होने लगा के उनका बेटा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनोँ जि भर कर पि लेते। उनके पास एक उमर दराज गधा था जो बहोत हि कमजोर था, जैसे हि उस महिला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी गोद मे लिया उस सवारि के अन्दर कुव्वत भर आइ और पूरे जोश व खरोश के साथ रास्ता तै करने लगा।

विधार्थीः यकिनन् हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बचपन बहोत बरकत वाला था।

शिक्षकः मेरो बच्चो आपने सहि कहा, बे शक हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बचपन बरकत और अल्लाह तआला के तवज्जोह व इनायत से भरपूर था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकि रजाइ (दुध पिलाने वालि) माँ दाई हलिमा को जो बरकतें प्राप्त हुइँ उन से पता चलता है के अल्लाह तआला के नजदीक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या मकाम व मरतबा था। इसि लिए हमारे दिलों मे भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अज्मत और मोहब्बत रासिख होनि चाहिये। इस वाक्या से यह भि पता चलता है कि अल्लाह तआला बडा मेहरबान, ज्ञान व हिक्मत वाला है, अल्लाह जिसे महबूब रखता है चुन लेता है उसे अपनी खास निगरानी मे रखता है, इस

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः (1/169)

लिए हमे अपने महान व शक्तिशालि रब को खुश करने लिए उसकि भक्ति करना चाहिये ताकि हमे भि अल्लाह तआला कि मोहब्बत हासिल हो, जब अल्लाह हमे महबूब रखने लगेगा तो हमे भि अपने विशेष निगहबानि मे रखने लगेगा और हमे अपनि तौफीक हिदायत और हिफाजत से नवाजेगा जैसा कि अल्लाह तआला ने हदीसे कुदसि मे फरमाया हैः

अनुवादः मेरा बन्दा नवाफिल (अनिवार्य इबादतके अतिरिक्त इबादत) के जरीये मेरा तकर्रूब हासिल करता रहता है यहाँ तक कि मै उस से मोहब्बत करने लगता हुँ और जब मै उस से मोहब्बत करने लगता हुँ तो उसका कान बन जाता हुँ जिस से वह सुनता है और उसकि आँख बन जाता हुँ जिस से वह देखता है और उसका हाथ बन जाता हुँ जिस से वह पकडता है

और उसका पाँव बन जाता हुँ जिस से वह चलता है और वह मुझ से माङ्गे तो मै उसे देता हुँ और अगर मुझसे शरण तलब करता है तो मै उसे अपनि शरण मे रखता हुँ[1]...........[2] ।

विधार्थीः यह बहोत हि सुन्दर अर मनमोहक बात है , शायद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि रजाई माँ पर कृपा होने कि वजह यह हो कि वह यतीमो का ज्यादा ख्याल रखति होँ।

शिक्षकः यह आपने एक दलचस्प नतिजा निकाला है बच्चोँ, बात ऐसि हि है के जो यतिमोँ का ख्याल रखता है, अल्लाह तआला के नजदिक उसका बडा मकाम व मरतबा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः (मै और यतीम कि देखरेख करने वाला जन्नत मे इस तरह होँङ्गे, यक कह कर आपने शहादत और बिच कि उङलियोँको आपस मे जोडकर उस से इशारा किया)[3] यह एक बहोत महान स्थान और बडा बदला है ।

इस लिए हमे भि यतिमो से मोहब्बत करनि चाहिये, उनकि इज्जत और खातिर करनी चाहिये, उन्हे कमतर नहि जानना चाहिये और न उनकि शान मे कोइ कमि आने देना चाहिये, हो सकता है कि वह अल्लाह कि नजर मे ज्यादा अच्छे और ज्यादा मोहतरम होँ। बल्कि हमे उनका एहतराम करना चाहिये, उनसे मोहब्बत करना चाहिये, उनकि मदद करनि चाहिये, और उन कि मदद करनि चाहिये और उन कि बेहतरि और खुशि के लिये प्रयास करते रहना चाहिये ।

विधार्थीः आदर्णिय शिक्षक महोदय ! हमे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि माता जि के बारे मे भि कुछ बताइये ।

---

[1] उस्ताद को विस्तार के लिए फतहुल बारि का मोराजेआ करना चाहिये ताकि हदीस का माना व मफहूम पूरे तौर उनके सामने वाजेह रहे जिस के बारे मे तलबा उनसे प्रस्न कर सकते हैँ।

[2] बुखारीः (4/192) हदीस नः (6502)

[3] बोखारिः (4/92) हदीस नः (6005) तिरमिजीः(4/283) हदीस नः (1918) और बयान किया गया श्ब्द तिर्मिजी के हैँ।

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि माँ आमना बिन्ते वहब आप से बहोत प्यार करति थि और आपका ख्याल रखा करति थि, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभि छ 6 सालके हि थे कि आपके माँ का देहन्त हो गया [1]।

विधार्थीः सुब्हानल्लाह ! यानि कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बाकि जिन्दगि माँ-बाप से महरूमि मे गुजरी ?

शिक्षकः हाँ ! जब आपकि माँ का देहन्त हो गय तो माँ-बाप के बिना हि आपने सारी जिन्दगि गुजारि।

मेरे बच्चो ! यह इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला हर चिज का मालिक है, वहि तदबीर करने वाला तमाम चिजो से बाखबर है। बेशक हमारे नबि का अल्लाह के नजदिक बडा मकाम व मरतबा था उसके बावजूद अल्लाह ने अपनी खास हिक्मत के सबब आपको यतीम पैदा किया।

इस से पता चलता है कि जब अल्लाह तआला अपने बन्दो के लिए कोइ पसन्दिदा या ना पसन्दिदा चिज मोकद्दर करता है तो उसके अन्दर कोइ न कोइ भलाइ छुपा हुवा होता है, अगर चे हम उसको जान नहि पाते हैं, लेकिन इसका यह मतलब हरगिज नहि होता कि अल्लाह उस बन्दे से नाराज है, बल्कि कभि कभार वही चिज उसके लिए बाइसे रहमत होति है इस लिए कि अल्लाह तआला हि को वासतिक ज्ञान है हम उस से बेखबर होते है मगर अल्लाह तआलाको मालूम है कि बन्दो के लिए क्य बेहतर और कौन सि चिज मोनासिब है।

हो सकता है कि यतीमि कि जिन्दगि जिसे अल्लाह तआला ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए चुना था उस से ऐसि महारते पैदा होति हौँ जो नुबुवत और रेसालत के मिशनको पुरा करने मे मददगार साबित होति हौँ।

विधार्थीः मुझे ऐसा लगता है कि हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाल्यकाल कि जिन्दगि मे भि हमारे लिए बहोत सि नसियहतें और हिकमतें छुपि हुइ हैं, इसमे जहाँ अल्लाह कि निगहबानि और रब कि बरकत व नवाजिश का तजकेरा

है वहि आजमाइश और वाअज व नसिहत के पहलु भि है। उस्तादे मोहतरम ! मुझे अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाल्यकाल कि जिन्दगि अच्छि लगने लगि।

[1] इब्ने कसिर, तफ्सीर अल-कुरआनल अजीम (4/559)

दादा अब्दुल मुत्तलिब कि केफालत मे:

शिक्षकः जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माँ का देहान्त हो गया तो आपकि केफालत और तरबियत कि जिम्मेदारि आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने अपने जिम्मे ले लिया।

अब्दुल मुत्तलिब अपने कौम के सरदार थे, उनकि खास कुर्सि थि जिस पर उनके सिवाय कोइ भि नहि बैठ सकता था, काअबा के छावँ मे भि उनके लिए कालिन बिछाया जाता था जसपर उसके आस-पास उनके लडके जमा होते थे मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दादा के साथ बैठते थे।

अल्लाह तआला ने दादा अब्दुल मुत्तलिब के दिल मे हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बडि मोहब्बत डाल दिया था जिस कि वजह से वह आपका बहोत ख्याल रखते थे, आपको अपने पास बिठाते और जब आप सो रहे होते तो किसि को भि आपके करीब नहि जाने देते थे[1]।

विधार्थीः आपके दादा कि जानिब से आपको बहोत ज्यादा प्यार मिला, अब्दुल मुत्तलिब आप को अपने बेटों से भि ज्यादा महबूब रखते थे क्यों कि वह अपने किसि भि बेटेको अपने पास नहि बिठाते बल्कि सिर्फ आपको बिठाते।

शिक्षकः तुम्हारि बात बिल्कुल सहि है, लेकिन प्रस्न यह है कि उनके दिलमे यह मोहब्बत डाला किस ने ?

विधार्थीः अल्लाह तआला ने।

शिक्षकः यकिनन् अल्लाह तआला ने हि आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब के दिल मे इतनि ज्यादा मोहब्बत पैदा कर दिया, जब कोइ बन्दा अल्लाह कि नजर मे महबूब बन जाता है तो अल्लाह तआला उसके लिए खैर व भलाई के अस्बाब को मोसख्खर कर देता है, इस लिए

अब्दुल मुत्तलिब के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि केफालत करने से हमे यह फाइदा मालूम होता है कि अल्लाह तआला हि के हाथ मे हर तरह कि बादशाहि है, वहि दिलों का मालिक और मोहब्बतों का बादशाह है, जैसे चाहता है दिलों को फेरता और मोहब्बतों को तकसीम करता है , जब हम अल्लाह कि फरमाबरदारी करते हैं तो अल्लाह तआला हमे अपनि मोहब्बत और तौफीक से नवाजता है, औ लोगों के दिलोँ मे हमारी मोहब्बत डाल देता है जैसा कि हदीस मे आया हैः (अल्लाह तआला जब किसि बन्दे से मोहब्बत करता है तो जिब्रईल से कहता है कि फलाँ शख्स से मै मोहब्बत करता हुँ तुम भि उस से मोहब्बत रखो, फिर जिब्रईल फरिश्तों मे यह एलान करता है किः अल्लाह तआला फलां शख्स से मोहब्बत करता है तो तुम भि उस से मोहब्बत रखो, तो आसमान वाले उस से मोहब्बत करने लगते हैं और जमीन मे भि उसकि मोहब्बत डाल दि जाति है)[2]।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन् नबविया (1/223)

[2] बोखारिः(2/424) हदिस नः(3209)

विधार्थीः यह एक बडि बात है जिस से हमारे अन्दर अल्लाह तआला कि मोहब्बत प्राप्त करने और रब कि फरमाबरदारि करने का जजबा पैदा होता है।

चचा अबुतालिब कि केफालत मेः

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि माँ के देहन्त के दो साल के बाद आपके दादा भि इस दुनियां से चले गए, दादा के देहान्त के समय आपकि उम्र आठ साल थि, दादा के गुजर जाने के बाद आपके चचा अबुतालिब ने आपकि केफालत कि जिम्मेदार अपने कन्धे पे ले लिया।

विधार्थीः सुब्हानल्लाह ! यह तो आप सल्लल्लाह का बचपना किसि परिक्षा से कम नहि।

शिक्षकः हाँ यह एक परिक्षा जरूर था मगर इस मे अल्लाह तआला कि मेहरबानि और रहमत भि पोशिदा थि के अल्लाह तआला ने इस वाक्या के जरीये उम्मते मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह तालीम दि के आजमाइश का हमेशा यहि मतलब नहि होता कि अल्लाह नाराज है, बल्कि कभि-कभार आजमइश मे अल्लाह तआला कि रहमत भि छिपि होति है जिस से हम अपनि जेहालत और अल्लाह तआला के ला-महदूद ज्ञान जो कि दुनियां के हर चिजको समेटे हुवे है , के मोकाबले मे अपनी कम इल्मि कि वजह से अन्जान होते हैं।

हो सकता हे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए उस आजमाइश मे यह हिक्मत पोशिदा रखि हो के उस से आपको यह तरबियत मिले के दावते एलाहि कि राह मे पेश आने वालि परेशानियो का मोकाबला पूरि कुव्वत और हिम्मत के साथ कैसे करना है, क्यौँ कि आपने दावत कि राह मे बडि मुसिबतो का सामना किया जिन कि तफ्सील आगे आने वालि है इन्शा अल्लाह।

विधार्थीः शिक्षक महोदय ! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा ने आपकि निगहबानि कैसे कि? वह भि आपके दादा कि तरह आपका ख्याल रखते रहे होङ्गे ?

शिक्षकः हाँ, आपके चचा अबुतालिब भि आप से बेहद मोहब्बत करते थे, इस लिए उन्होने पूरि मोहब्बत व शफ्कत और इन्तेहाइ तावज्जोह और इनायत के साथ आपकि परवरिश कि।

अबु तालिब उस वक्त तक नहि सोते जब तकके मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके पहलु मे न होते, कहिँ जाते तो आपको साथ ले जाते, आपके खाने का खास ख्याल रखते, आप जब तक ना आते तब तक खाने के लिए ना बैठते, वह आपका पूरा ख्याल रखते और आप से टुट कर मोहब्बत करते थे[1]।

विधार्थीः बहुत प्यारि और उम्दा बातें आपने बताइ, यकिनन् आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एसे खानदान मे पैदा हुवे जहाँ आपको पूरी मोहब्बत, मोकम्मल निगहबानि और इनायत हासिल हुइ।

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः (1/119-120)

शिक्षकः यकिनन् आप बेहतरीन खानदान के चश्मो चेराग थे, इस लिए के अल्लाह ने अपने नबि को अरब के सब से मोअज्ज घराने मे पैदा किया था। होना भि यहि चाहिये के मुख्तलिफ खानदान के लोग आपस मे मोहब्बतका रिश्ता रखें, एक दुसरे का खयाल करें, आपसि तआउन का माहौल हो जैसा कि हमारा धर्म हमे सिखाता है[1]।

ब्यवहारिक जिवनः

शिक्षकः वक्त के साथ साथ चचा अबुतालिब कि उस मोहब्बत भरी निगहबानि और तरबियत मे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नौ-जवान हो गए, दुसरे नौ-जवानों कि तरह आपको भि मेहनत और जाँफेशानि कि जिन्दगि पसन्द थि।

आपने उजरत और मजदुरी पर मक्का वालो कि बकरियाँ चराइँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः (अल्लाह ने जिस नबि को भि मबउसकिया उन्होंने बकरियाँ चराइँ, साहाबा ने पुछा आपने भि ? आपने फरमायाः हाँ मै भि चन्द किरात के बदले मक्का वासियो कि बकरियाँ चराया करता था[2]।

विधार्थीः सुब्हानल्लाह ! तमाम अम्बियए केराम ने बकरियाँ चराई ?

शिक्षकः शायद तुमको इस कि हिक्मत जान कर तआज्जुब होगा ? मै तुमको इस कि हिक्मत बताता हुँ। बकरियोँ के अन्दर प्रकितिक रूप से कुछ अच्छे गुण पाए जाते हैँ, उनकि तबियत मे नरमि व मोहब्बत और सुकूनो इत्मिनान कि विशेषता होति है। उनकि गल्लाबानि के लिए हिक्मत व दानाइ कि जरूरत होति है, उनके खाने पिने के लिए उपयुक्त भुमिका चुनाव करनि पडति है ताकि वह जि भरके चर सकें और सैराब हो सकें, उन्हेँ दरिन्दोँ से बचा के रखना पडता है ताकि वह उनकि अजियत से और उनका शिकार बनने बच सकें। इसि तरह रसूलको भि यह जानने कि जरूरत पडति है के अपनि उम्मतको दुश्मनोँ से कैसे महफुज रखेँ, उनके लिए दुनया व आखेरत के लिए मोनासिब चिज एख्तेयार करें उन्हें उन तमाम चिजों से रोकें जिनमे उनकि जानों के लिए, उनकि जिन्दगि और आखेरत के लिए किसि तरह हानिकारक हो सकता है। उन्हें मालूम होता है किउम्मतको इन्तेशार व इफ्तेराक से बचा कर कैसे मुत्तहिद रखा जाए, ठिक उसि तरह जिस तरह एक चरवाहा यह महारत रखता है कि जब कोइ बकरी चरते चरते झुण्ड से बिछड जाए तो उसे कैसे रेवडमे शामिल किया जाए।

हर रसूलको बकरि चराने से यह फाइदा हासिल होता है के वह कैसे हिक्मत व दानाइ और बेहतर तदबीर व निगरानि के साथ अपनी कौम कि और उम्मत कि कयादत करेँ।

---

[1] इस मोका पर शिक्षक को चाहिये कि विधार्थियोँ के सामने कुछ नमुने और मिसालों कि रोशनि मे यह बताएँ कि आपसि तआउन, खानदानि उल्फत व मोहब्बत और समाजि मेल मिलात के क्या फाएदे हैं और हमारा परिवारिक और अकेलि जिन्दगि पर उन चिजोँ के क्या असरात मोरत्तब होते है।

[2] बुखारिः(2/130) हदिस नः(2662)

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम! हर एक चिजमे अल्लाह तआला कि कमाल हिक्मत जाहिर होति है। लेकिन चुँकि हम उस से अन्जान होते है इसि लिए हम उन हिक्मतोँ के बारे मे नहिँ सोचते गौर नहि करते। उस्तादे मोहतरम आपने हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी के बारे मे बता कर हमारे अकल के दरवाजे खोल दिए।

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कामसे आपका तवाजो भि नुमाया होता है क्योँ कि आपने यह नहि कहा किः मै यह काम नहि करूँगा मुझे दुसरा काम करना है। इस से हमें यह पाठ मिलता है कि इन्सानको मोतवाजे रहना चाहिये और रब के जानिब से जो काम भि मोकद्दर हुवा उसे करने मे कतराना नहि चाहिये।

एक दुसरा काम भि है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया। वह है व्यापार , हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगोँ के बिच अमनि अमानतदारि और सच्चाई मे मशहूर थे, आपने कभि किसि के साथ धोखा नहि किया, मोआमला चाहे जो भि हो आपने कभि भि झुठ बोलना गवारा नहि किया।

खदिजा नाम कि एक महिला थिं जिनका कारोबार बडे स्तरपर होता था, वह व्यापार मे भरोसा मन्द लोगोँ से मदद लेति थिं, उन्होंने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह विनति किया कि आप उनके व्यापार के खातिर उनके गुलाम के साथ सिरिया कि यात्रा करें और उन्होंने यह वादा किया कि दुसरे व्यापारि को जितनि उजरतदेति हैं उस से कहिं ज्यादा उजरत आपको देङ्गि क्यों कि आप सच्चाई, अमानतदारि और सिधापन कि वजह से दुसरों से बेहतर थे[1]।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका यह प्रसताव मन्जुर कर लिया और उनके गुलाम के साथ उनका माल ले कर व्यापार के लिए सिरिया निकल गए।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! इस वाक्या से हमे यह सीख मिलति है कि अमानतदारि और सच्चाई, व्यापारिक मामले मे बहोत हि ज्यादा महत्व रखता है।

शिक्षकः बहोत खुब मेरे बच्चो ! आपकि सच्चाई और अमानतदारि हि थि जिसकि वजह से हजरत खदिजा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने यह प्रस्ताव रखा के उनकि तेजारत के सामान के साथ आप सिरिया कि यात्रा करें, जब हम इस गुण के धनि होते हैं तो अल्लाह तआला हमे अपना पसन्दिदा भक्त बना लेता है और लोग भि हम से मोहब्बत करने लगते हैं, हमे जिन्दगि मे कामयाबि मिलति है और कारोबार व व्यापार मे कामयाबि के रास्ते निकल आते हैं। हमारि यह जिम्मेदारि बनति है कि हम हर एक काम मे अमानत व सदाकत और सच्चाई व वफादारी को लाजिम पकडें।

---

[1] इब्ने हशाम, अस्सिरतुन् नबवियाः (1/199)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विवाहः

शिक्षकः आप सब को मालूम हो गया कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजरत खदिजा के लिए व्यापार का काम किया और यह कि आप सच्चे और अमानतदार व वफादार थे जिस कि वजह से हजरत खदिजा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको निकाह का प्रस्ताव भेजा[1]। विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! क्या आप हमे हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा कि कुछ गुण बता सकते हैं ? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तरह वह भि बुलन्द अखलाक वालि थिं ?

शिक्षकः बहोत हि बेहतरिन और अच्छा प्रस्न है, हजरत खदिजा एक इज्जतदार खातून थिं, अपने समुदाय मे पाकदामन महला के नाम से प्रसिद्ध थिं, इस लिए कि सच्चाई, वफादारि और अमानतदारि जैसे महत्वपुर्ण गुण आपके अन्दर कुट कुट के भरा हुवा था, साथ हि साथ आप एक मालदार और बहोत हि अकलमन्द महिला थिं।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पच्चिस साल कि उम्र मे उन से शादि कि, यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि पहलि शादि थि।

उनसे आपको अल्लाह तआला ने कुछ बेटे और बेटियाँ भि दिँ जो कि यहि हैः

कासिम, उनसे आपकि कुन्नियत अबुल कासिम पडि।

जैनबः यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि सब से बडि बेटि थिं, उनकि शादि खालाजाद भाइ अबुलआस बिन रबिअ से हुई।

रोकैय्याः यह हजरत उस्मान बिन अफ्फान रजियल्लाहु अन्हु कि बिवि मोहतरमा हैं।

उम्मे कुलसूमः रोकय्या रजियल्लाहु अन्हा के देहान्त के बाद इनकि शादि भि उसमान बिन अफ्फान रजियल्लाहु अन्हु से हुइ।

फातिमाः हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु कि बिवि हैं।

अब्दुल्लाहः जिनको तैय्यब और ताहिर के लकब से भि याद किया जाता है, यह बचपन हि मे इन्तेकाल कर गए[2]।

---

[1] इब्ने हजर, फत्हुल-बारिः (7/134)

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबविया(1/202) इब्ने साद, अत्तबकात अल कुबराः(8/19-39)

हल्फुल फुजूलः

शिक्षकः लोगोँ के बिच कभि कभार अत्याचार के वाक्यात हो जाते हैं , खास तौर से जमाने जाहिलियत मे तो यह सब आम बात थि, क्यों कि समाज मे जेहालत का बोल-बाला था। कौरैश के कुछ कबिले एक विशेष मोआहेदा के लिए एकत्रित हुवे जिसका नाम हल्फुल फुजूल रखा गया। इस इज्तेमा मे उन्होंने यह कसम लिया कि मक्का के अन्दर जिस पर भि जुल्म होगा वह उसकि मदद के लिए उठ खडे होंगे और उसका अधिकार दिला कर रहेंगे चाहे वह मक्का का असलि बाशिन्दा हो या बाहर से आकर यहाँ बसा हो । नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भि इस हल्फ मे शरीक थे।

विधार्थीः यह तौ बडा हि अच्छा मोअहेदा है कि कमजोर कि मदद कि जाए।

शिक्षकः हाँ बिल्कुल, असल मे यह सच्चाई कि जित और अत्याचार कि हार का मोआहेदा था, नुबुवत के बाद भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने साथियोँ के इस हल्फ का जिक्र किया करते थे और बताते कि आप भि इस हल्फ मे शामिल हुवे थे और यह कि इस हल्फ मे आपका शामिल होना आपकि नजर मे उन किमती उंटनियोँ से भि ज्यादा पसन्दिदा थिं जिन्हे (हुमुरुन् नेअम) कहा जाता है। आप यह भि कहते कि अगर इस्लाम मे भि आप से इस तरहके हल्फका मोतालबा किया गया तो आप उसमे शामिल होने मे जरा भि ताखीर नहि करेंगे, क्योँ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अत्याचार और अत्याचारियोँ को पसन्द नहि करते थे, और आपने कभि किसिपर जुल्म नहि किया, यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदेश है जो हदिस मे आया है किः (मै अब्दुल्लाह बिन जदआन के घर मे हल्फ मे अन्दर शरिक हुवा था, यह हल्फ मेरे लिए किमति उँटो से भि ज्यादा महबुब है, अगर इस्लाम मे भि मुझसे इस का मोतालबा किया गया तो मुझे कुबूल करने मे कोइ झिझक नहि)[1] ।

हमे भि अत्याचार को ना पसन्द और उस से नफरत करनि चाहिये, हमे साथि, दोस्त, रिश्तेदार और दुसरे तमाम लोगोँ पर अत्याचार करने से बचना चाहिये, किसिको भि अत्याचार करने कि छुट नहि देना चाहिये , मजलूम का साथ देना चाहिये और अधिकार दिलाने के लिए उनकि मदद करनि चाहिये। अत्याचार को अल्लाह ने अवैध घोषित किया है और उसपर सजा निर्धारित किया है जैसा हदिसे कुदसि मे आया हैः (मेरे बन्दो ! मैने अपने उपर अत्याचार को अवैध ठहराया है और तुम्हारे दरमेयान भि उसको हराम कर दिया है इस लिए तुम एक दुसरे पर अत्याचार न करो)।

विधार्थीः यह तो बहोत हि अच्छा स्वभाव है हमे भि यह अपनाना चाहिये। लेकिन हदिस (हुमुरुन् नेअम) का जिक्र जो आया है इसका क्या मतलब ?

शिक्षकः इस का मतलब सब से किमति और बेहतरीन किस्म कि उँटनि है।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबविया(1/141-142)

काअबा कि तामिरः

शिक्षकः मेरे बच्चो ! क्या आपको काअबा कि तामिर का इतिहास पता है ?

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! हमे इसके बारे मे बहोत हि कम जानकारि है जितना हम ने पहले आप से सुना है।

शिक्षकः सब से पहले हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा कि तामिर कि जैसा कि हम उसका जिक्र कर चुके है। उनके बेटे हजरत इस्माईल ने भि इस कि तामिर मे उनकि मदद कि थि। यह अल्लाह तआला के आदेश अनुसार हुवा जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान हैः

अनुवादः जब इब्राहीम और इस्माईल काअबा कि बुनियाद और दिवारें उठाते जते थे और कहते जाते थे कि ऐ हमारे रब ! तु हम से कुबूल कर तु हि सुनने वाला और जानने वाला है।

जमाना गुजरने के साथ साथ काअबा कि इमारत गिरने लगि। कोरैश ने काअबा को नए सिरे से तामीर करना चाहा उस वक्त नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि उम्र पैंतीस साल थि[1]।जब काअबा कि तामीर हजरे अस्वद तक पहोंचि तो उनके दरमेयान इस बात मे विवाद हो गया कि हज्रे अस्वद (पत्थरको) उसकि जगह रखनेका अवसर किसे प्रप्त होगा, उनमेसे हर व्यक्ति इस अवसरको प्रप्त करनेकि इच्छा रखता था।

विधार्थीः इसका मतलब यह है कि वहलोग काअबा कि ताजिम करते थे और उसके मकाम व मरतबाको जानते थे।

शिक्षकः हाँ वह काअबा कि ताजिम करते थे , उसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि उन्हों ने काअबा का नए सिरे से तामीर किया और हज्रे अस्वदको उसकि जगह रखने के लिए आपस मे लड पडे। अगर वह जमाने जाहिलियत मे काबा कि ताजिम करते थे तो हमे तो और ज्यादा उसकि ताजिम करनि चाहिये, इस लिए कि अल्लाह तआलाने उसे बा-बरकत करार दिया है, हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम , आपके साथि और तमाम मुसलमानो ने उसकि ताजीम कि है। अल्लाह के नजदिक काबा कि अहमियत का अन्दाजा इस बात से भि लगाया जा सकता है कि जब अब्रहा हबशि के फौज ने काअबा को गिराने का इरादा किया तो अल्लाह तआला ने उसके लश्कर को तबाहो बर्बाद कर दिया जैसा आप लोग तफ्सील जान चुके हैं।

विधार्थीः जब हज्रे अस्वद के बारे मे उनके बिच झगडा हुवा तो उन्होंने कैसे फैसला किया ?

शिक्षकः उन्होँने यह फैसला लिया कि जो व्यक्ति कल सुबह सब से पहले इस जगह पर आएगा वहि हमारा हाकिम होगा और वहि फैसला करेगा। जब सुबह हुइ तो देखा कि सब से पहले मोहम्मद सल्लल्लाहु

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबविया(1/24-25)

अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए हुवे हैँ। आपको देखकर वह लोग बोल पडेः अमीन आ गया। उसके बाद उन्होँने आप से फैसला करनेको कहा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक कपडे पर हज्रे अस्वदको रखा, उसके बाद कबिले के सरदारोँको बुलाया और सभोँ ने मिलकर चारोँ तरफ से उस कपडे को पकडा और सब उसके उठाने मे शामिल हुवे, फिर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको उसकि जगह पर रख दिया[1]।

विधार्थीः हदिस मे "फज्ज" शब्द आया है उसका क्या मतलब ?

शिक्षकः "फज्ज" का माना होता है प्रश्ट, कुशादा।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! यकिनन् अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हकीम, समझदार और तौफिक याफ्ता इन्सान थे।

शिक्षकः बिल्कुल, आप हिक्मत वाले समझदार तौफिक याफ्ता यन्सान थे। अल्लाह तआला ने आपको इस तरहके उम्दा फिक्र से नवाजा था जिसकि वजह से कोरैशका आपसि मतभेद इत्तेहाद मे बदल गया।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! हदिस मे आया है कि उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारेमे कहा किः अमीन आ गया, वह आपको अमीन क्योँ कहते थे ?

शिक्षकः बहोत खुब मेरे शिष्योँ ! यह एक बहोत हि बारीक प्रस्न है जिस से पता चलता है कि आपलोग अपने नबि कि जिवनी को बहोत गौर से सुनते हैँ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कौमका हर आदमि आपको अमीन के नाम से जानता था, वह आपको अमिन कहकर पुकारते थे, इस लिए कि आप सच्चे और अमानतदार थे, आपने कभि झुठ नहि बोला और नाहि कभि किसि के साथ बे-अदबि से पेश आए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साफ-सुथरि सच्चि बात बोलने वाले और बहोत हि बेहतर स्वभाव के गुणि थे।

हमे भि अमानतदारि और अच्छे स्वभाव के मामले मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीके पर चलना चाहिये ताकि हमें भि लोग महबुब रखें और अल्लाह तआला कि मोहब्बत से हम मुस्तफिद हो सकेँ, क्यों कि अल्लाह तआला अच्छे स्वभावको मसन्द करता है।[2]

---

1 अहमद, अलमुस्नदः(3/425)

2 उस्ताद को चाहिये कि आम मोआमलात मे बरति जाने वालि अमानतदारी के कुछ उदाहरण पेश करेँ।

दुसरा अध्याय
बेअसत से हिजरत तक

बेअसते नबविः

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! बेअसते नबवि से क्या मुराद है ?

शिक्षकः अल्लाह तआला अपने बन्दों मे से जिसको चाहता है अपना सन्देश पहोँचाने के लिए चुन लेता है, फिर उनपर अपना आदेश वहि करता है, अर्थात उनपर वहि का अवतरित होने लगता है। दुसरे लफ्जो मे युँ समझ लें कि अल्लाह तआला अपने रसूल के पास फरिश्तेको भेजते हैँ जो उन्हे अल्लाह के आदेश कि खबर पहोँचाता है। उदाहरण स्वरूप हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको देख लिजए उनके पास हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अल्लाह का पैगाम लेकर आते थे [1]। दुसरा तरिका यह है कि अल्लाह तआला खुद नबि से वार्तालाप करते हैँ लेकिन नबि अल्लाहको देख नहि पाते, जैसाकि हजरत मुसा अलैहिस्सलाम, अल्लाह तआला ने उनसे बात किया जसके बारे मे कुरआनमे इस तरह से आया हैः

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا

अनुवादःऔर आपसे पहले के बहुत से रसूलोँ के वाकयात हमने आप से बयान किये हैं और बहुत से रसूलों के नहि भि किये हैं और मूसा से अल्लाह ने सिधे बात कि। (सुरह अन्निसाः 164)

जब अल्लाह तआला किसि बन्दे को चुन लेता है और उसपर रेसालत नाजिल करता है तो वह रसूल कहलाता है। हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब जिब्रिल वहि लेकर आए तो आप रसूल करार पाए, उसिको बेअसते नबवि कहा जाता है, जिसका मतलब होता है अल्लाह तआला ने आपको रेसालत दिया था जिस कि वजह से आप पैगम्बर बने । क्या अब आप लोगों को बेअसतका माना मालूम हो गया ?

विधार्थीः हाँ हमे बेअसते नबवि का माना मालूम हो गया। लेकिन जिब्रईल अलैहिस्सलाम हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कैसे आए ?

शिक्षकः इस प्रस्नका उत्तर देने से पहले यह बताना चाहता हुँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब जिब्रईल अलैहिस्सलाम नहि आए थे तब तक आप नबि नहि हुवे थे, आपकि नुबुवत उस वक्त से शुर हुइ है जब से आपपर वहिय का अवतरण शुरू हुवा है जिस कि तफसिल निम्न प्रकार हैः

वहि के नुजुल से पहले नुबुवत के कुछ अग्रिम बातें भि थिं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेअसत से पहले जो ख्वाब देखते थे वह सच साबित होता था, फिर उसके बाद अकेलापन आपको पसन्द हो गया आप लोगोँ से दुर हि रहना पसन्द करने लगे, आप हेरा नामक गुफा चले जाते और वहाँ कई रातों तक सोथ-विचार मे लगे रहते, फिर अपने घर वालोँ के पास आते और आवश्यक सामग्रि लेकर फिर चले जाते[2] जब आप चालिस साल के हो गए तो आप पर वहिय नाजिल हुई और जिब्रईल तशरिफ लाए।

---

[1] अगर विधार्थियोँ को जरूरत हो तो शिक्षक इसपर अतिरिक्त बहेस कर सकते हैं।

[2] बोखारीः(1/14-15) हदीस नः (3)

विधार्थीः हेरा गुफा कहाँ है ?शिक्षकः मक्का मोकर्रमा के पुर्व मे एक पहाड है जिसका नाम है हेरा, उसकि चोटि पर एक बडा सा गुफा है जिसे हेरा गुफा कहते हैं। यह मक्का मुकर्रमा कि आबादि से दूर था क्योँ कि उस समया आबादि कम थि लेकि अब चुँकि आबादि बढ गई है इसलिए पहाड के आसपास भि घर बने हुवे हैं।

विधार्थीः हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहा ?

शिक्षकः जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहाः पढो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मै पढना नहि जानता- यह इस लिए कि आप उम्मि (अनपढ) थे पढना लिखना आपको नहि आता था।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस वाकयाको इस तरह बयान करते हैः (हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने मुझे पकड लिया और जोर जोर से दबाया और खुब दबाया जिस कि वजह से मुझे तक्लिफ हुई[1]। फिर उसने मुझे छोड दिया और कहा किःपढिये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर वहि जवाब दिया किः मै पढा हुवा नहि हुँ[2]। उसने मुझे ऐसे दबाया कि मै बेकाबु हो गया, उन्होने अपना जोर खत्म कर दिया और फिर छोड कर मुझसे कहा किः पढिये अपने रब के नामसे जिस ने पैदा किया है[3]। इस तरह से वहिय का आगाज हुवा।

विधार्थीः यह कोई आसान मरहला नहि था, क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस हादसे से खौफजदह हो गए ? आपने उसके बाद क्या किया ?

शिक्षकः हाँ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम डर गए जैसा कि हदीस मे आया हैः (फिर जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खदिजा रजियल्लाहु अन्हा के पास आए तो आपके कन्धेका गोश्त (डर कि वजह से) फडक रहा था। जब घर मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाखिल हुवे तो फरमाया कि मुझे चादर ओढा दो, मुझे चादर ओढा दो , तसर्थ आपको चादर ओढा दिया गया और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका खौफ दुर हुवा तो फरमाया कि खदिजा मेरा क्या हाल हो गया है ? फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि पुरि आपबिति कह सुनाया।

विधार्थीः जम्मिलुनि (मुझे चादर ओढा दो) से क्या मुराद है ?

शिक्षकः इसका मतलबः मुझे कम्बल ओढा दो, मेरे उपर लेहाफ डाल दो, आपने ऐसा इस लिए कहा ताकि आपका डर खत्म हो सके। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि पत्नि हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा से पुरा वाकया कह सुनाया और फरमायाः मुझे अपने जानका खौफ लग रहा है।

---

[1] यानि कि आपको जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अपने सिने से लगा कर जोर से दबाया यहाँ तक कि आपकि साँस रुक गई फिर उसके बाद आप को छोड दिया। (फत्हुलबारि, इब्ने हजरः1/24)

[2] यानि कि मै ठिक से पढ नहि सकता। साबिक हवाला

[3] बुखारिः(1/14-15) हदिस नः(3)

इस से पता चलता है कि वहि का नुजूल और जिस चिजका आपको आदेश दिया गया था वह कोइ सामान्य और आसान चिज नहि थि बल्कि वह एक बडि चिज थि, लेकिन उसका सवाब भि उसि तरह बहत बडा था, स लिए कि जब अल्लाह तआला हमे किसि चिज का हुक्म देता है और हम अल्लाह कि रजा के मोताबिक उस आदेशको पुरा करते हैं तो अल्लाह हमे उस पर बडा बदलादेता है इस लिए हमे उस अजीम दिन कि फिक्र करनि चाहिए और उसे बेहतर अन्दाजमे अपनाना और ख्याल करना चाहिए।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! अल्लाह आपको बहोत अज्र से नवाजेः उस समय हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा ने आपको क्या जवाब दिया ?

शिक्षकः हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा एक समझदार अकलमन्द महिला थिँ, वह अपने पति से बखुबि वाकिफ थिँ और जानति थिँ कि आप एक नेक, सच्चे, अमानतदार इज्जतदार इन्सान हैं। और जिसके अन्दर यह गुण मौजूद हो अल्लाह उसके साथ कुछ बुरा नहि करता, बल्कि ऐसे शख्स को अल्लाह हर तरह कि भलाई और बडाई से नवाजता है। इस लिए हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा ने अपने पति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा किः (अल्लाह कि कसम ऐसा बिल्कुल नहि हो सकता, आप खुश रहिये अल्लाह तआला आपको कभि रुसुवा नहि करेगा। आपतो सिला रहमि (रिश्तेदारि निभाना) करते हैं, सच्चि बात बोलते हैं, नादारोंका कमजोरोँका बोझ उठाते हैं, गरिबोँ का ख्याल करते हैं, मेहमानो कि मेहमान नवाजि करते हैँ और हक कि वजहसे आने वालि मुसिबतों पर लोगों कि मदद करते हैं)[1] ।

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके यह गुण बहोत हि उम्दा और बेहतर हैं, लेकिन इनमे से कुछ गुणों का मतलब समझ नहि आया ?

शिक्षकः बिल्कुल यह सब गुण खुबसूरत और अच्छे व्यवहार के नमुने हैं, जिसके अन्दर यह गुण मौजूद हों अल्लाह उसे जरूर इज्जत और दुनिया भर कि भलाई से नवाजेगा। (आप सिलारहमि करते है) इसका मतलब यह है कि आप अपने रिश्तेदारोँ को हदिया तोहफा भेजते हैं, उनसे मुलाकात के लिए जाते और उनकि मदद करते हैँ। (नादारोँ का बोझ उठाते हैँ) इसका मतलब यह है कि जो शख्स अपना काम खुद नहि कर सकता

आप उसकि मदद करते हैं। (गरिबोँ कि दादरसि करते हैँ) इसका मफहूम यह है कि अप फकीर व लाचार इनसान के काम आते हैँ, लोगोँ को हर वह चिज देते हैँ जो आपके पास हो और दुसरोँ के पास न हो।
(मेहमान नवनजि करते हैं) इस से मुराद यह है कि मेहमान के साथ खुश-उस्लुबि से हँसकर पेश आते हैँ और उनके लिए बेहतर खाने-पिने और रहने का इन्तेजाम करते हैं। (हक कि वजहसे पेश आने वालि मुसिबतो मे लोगोँ कि मदद करते हैँ) इसका मतलब यह है कि आप भलाई के हर काम मे मदद करते और

[1] साबिक हवाला

हर जरूरतमन्द के काम आते हैँ , यह एक ऐसा वाक्य है जिसमे गुजिश्ता तमाम वाक्योँ का माना शामिल है और जो खुबियाँ जिक्र नहि कि गई हैं वह भि इस मे शामिल है[1] ।

विधार्थीः हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा कि इन बातों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको कुछ इत्मिनान हुवा होगा ।

शिक्षकः हाँ यकिनन्, इस लिए के जो इन्सान भलाई का काम करता है, फिर उसके साथ कोइ हादसा पेश आता है जो उसको भयभित करदे तो उस वक्त अपनि भलि और अच्छि खुबियोँ को याद करके उसे दिलि इत्मिनान और अन्दरूनि सुकून हासिल होता है, और अल्लाह तआला अच्छे काम का बदला उससे अच्छा देता है ।

फिर अपको खदिजा रजियल्लाहु अन्हा वरका बिन नौफल के पास लेकर आईं जो एक धार्मिक व्यक्ति थे, उस वक्त बहोत बुढे हो चुके थे और आँख कि रौशनि भि जा रहि थि । उनसे खदिजा रजियल्लाहु अन्हा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने सारा हाल कह सुनाया, जिसपर वरका बिन नौफल ने कहा किः यह तो वहि नामुस (फरिश्ता) है जो मुसा अलैहिस्सलाम के पास आता था । नामुस का माना राजदार के होते हैं[2] । यानि वहि राजदार फरिश्ता है जो मुसा अलैहिस्सलाम के पास आते थे ।

इस से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको यकिन हो गया कि आपके पास आने वाले कोइ और नहि बल्कि एक फरिश्ता हजरत जिब्रईल थे जिन्हें अल्लह तआलाने नुबुवत व रेसालत लेकर भेजा था ।

विधार्थीः हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के बारे मे बताएं कि क्या वह फिर दोबारा आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लौट कर आए ?

शिक्षकः हाँ, उसके बाद अप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वहिय का सिलसिला जारि रहा, कुछ हि दिनोँ के बाद हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम दुबारा तशरिफ लाए और आपको अल्लाह तआला कि वहि पहोँचाइ और इस आयतका नुजूल हुवाः

يَاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ

अनुवादःहे कपडा ओढने वाले खडा होजा और होशियार कर दे । (सुरह मुद्दस्सिर 1-2)

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढना लिखना तो जानते नहि थे तो जिब्रईल जो वहिय लेकर आते थे आप कैसे याद रखते थे ?

शिक्षकः बहोत खुब, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिनसे तुम बेहद मोब्बत रखते हो, उनकि जिवनी से सम्बन्धित तुम्हारा यह प्रस्न बहोत हि गहरा और बारिक है ।

---

[1] इब्ने हजर, फत्हुलबारिः (1/24-25)

[2] साबिक हवाला

विधार्थीः यकिनन् हमलोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमसे बेहद मोहब्बत करते हैँ, अपनि जानोँ से भि ज्यादा।

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जब वहिय का नुजुल होता तो आप अपने होँटोँ को हिलाते और याद करने कि कोशिस करते, आप जल्दि जल्दि वहिय को याद करना चाहते क्योँ कि वहिय अल्लाह तआलाका कलाम है। लेकिन अल्लाह तआला हिक्मत वाला है और हर चिज पर कुदरत रखता है, और जब किसि चिज का इरादा करता है तो वह चिज होकर रहति है। अल्लाह तआला ने अपने नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया कि वहियको याद करने मे आप अपने-आपको न थकाएँ। बल्कि अल्लाह तआला वहि को आपके सिने मे जमा कर देगा और वह आपके सिने मे महफुजहो जाएगा। अल्लाह तआला ने फरमायाः

अनुवादः हे नबि आप कुरआनको जल्दि याद करने के लिए अपनि जुबानको न हिलाएँ। उसको जमा करना और आपके मुहसे पढाना हमारा उपर है। (सुरह कयामहः 16-17)

यानि हम उसे आपके सिने मे जमा कर देङगे और आप उसे आसानि से पढ सकेङ्गे। इस लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का काम सिर्फ यह था कि आप वहिय को सुनें। अल्लाह तआलाका फरमान हैः

فَإِذَا قَرَأْنَٰهُ فَٱتَّبِعْ قُرْءَانَهُۥ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُۥ ۝

अनुवादः इस लिए हम जब उसे पढ लें तो आप उसके पढने का अनुसरण करें। फिर उसको स्पष्ट कर देना हमारा काम है। (सुरह कयामहः 18-19)

यानि आप उसे ध्यान पुर्वक सुने। इस लिए जब जिब्रईल आते तो आप वहिय सुनते थे। और उनके जाने के बाद उसि तरह दोहराते थे जिस तरह जिब्रईल अलैहिस्सलाम आपके पास पढ कर जाते थे। और इस तरह वहिय अप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके दिल मे महफूज हो जाति थि।

विधार्थीः अल्लाह तआला कितना अजमत वाला और मेहरबान है अल्लाह तआलाने आपके दिलको ऐसा बना दिया कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम कुरआनको पढते और वह आपके सिने मे महफुज हो जाता।

शिक्षकः यकिनन् अल्लाह तआला मेहरबान अजमत वाला है वह हर चिज पर कुदरत रखता है। इस लिए हम जब कुरआन करिम हिफ्ज करना चाहते हैं या कोइ भि इल्म हासिल करनेका एरादा करते करें तो अल्लाह से हिफ्ज व समझ मांगे, जब हमे अल्लाह कि मदद हासिल होगि तो हर चिज आसान हो जाएगा। हमे हर मआमले मे हमेशा अल्लाह तआला से मदद तलब करनि चाहिये, हम कामयाबियोँ मे अल्लाह से मदद मांगे, बिमारियोँ मे अल्लाह से शेफायाबि के लिए इल्तेजा करें, उसके अतिरिक्त भि हमे जिस चिजकि भि आवश्यक्ता हो हम अल्लाह से दुवा करेँ और अपनि चाहतोँ के पुरा होनेका सवाल करेँ क्योँ कि अल्लाह हर चिज पर कादिर है।

दावतका पहला चरणः

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावत के मुख्तलिफ मरहले हैं, पहले चरण मे आपने अपनि कौम (समुदाय) के करिबि रिश्तेदारोँ को दावत दि, फिर कौमके दुसरे लोगों को अल्लाह कि तरफ बुलाया, उसके बाद तमाम लोगोँ मे दावते हकका एलान किया।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावत के इतने मरहले क्योँ थे ?

शिक्षकः आपने अच्छा प्रस्न किया ! आपकि दावत इतने मरहले मे इसलिए बटि हुवि थि क्योकि दावत का यह मिशन लोगों के सामने सिर्फ उसको बयान कर देने से पूरा नहि हो सकता था। क्यों कि कुछ लोग अपनि नादानि या घमण्ड या हसद व बुग्ज कि वजह से या दुसरे किसि सबब आपकि दावत पर आवाज उठा सकते थे, जिस से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिरूद्ध दुश्मनि बढ जाति। इसि तरह इस कि एक वजह यह भि थि के आपकि दावत मक्का के बाशिन्दोँ के लिए एक नई चिज थि इस लिए जरूरि था कि यह दावत बिभिन्न चरणों मे किया जाए एक चरण के बाद दुसरा चरण, यहाँ तक कि सफलता का सफर तमाम हो सके।

विधार्थीः बहोत अच्छा, गोया कि महत्वपुर्ण कामको सफलता पुर्वक अन्जाम देने के लिए उसको बिभिन्न चरणोँ मे बाँटना जरूरि होता है।

शिक्षकः बिल्कुल सहि, आप लोग विधालय मे पहलि कक्षामे पढते हैँ, उसके बाद दुसरि फिर तिसरि कक्षामे दाखिल होते हैँ और तरह आगे बढते जाते हैँ, पहले नर्सरि क्लास कि तालिम मोकम्मल करते हैँ फिर केजि मे पहोँचते है। कोई इन्सान इन तमाम चरणोँ को एक हि मरतबा मे पुरा नहि कर सकता, इसि लिए हमे अपने मिशन मे कामयाबि और मकसद को पुरा करने लिए बिभिन्न चरणोँ को बतौरे वसिला अपनाना चाहिए।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! अल्लाह आपको बेहतरीन अज्रसे नवाजे, हमे दावति माराहिल कि अहमियत कि जानकारि हो गई , हम यह भि जान चुके है कि दावति मिशनमे कामयाबि के लिए जरूरि है कि उसे बिभिन्न चरणोँ मे बाँट दिया जाए। उस्तादे मोहतरम ! अब हम दावते नबवि के पहले मरहले के बारे मे जरा तफ्सील से जानना चाहते हैं।

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गोप्य तौरपर अपने रिश्तेदारो को दावत देना शुरू किया, अल्लाह तआला फरमाते हैः

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَاَنْذِرْ

अनुवादः ए कपडा ओढने वाले, खडा होजा और होशियार कर दे। (सुरह मुद्दसिर 1-2)

इस दावत के नतिजे मे सब से पहले आपकि पत्नि हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा, आपके चचाजाद भाइ अलि बिन अबि तालिब जो के अभि कम उम्रके थे, आपका गुलाम जैद बिन हारसा और आपके दोस्त हजरत अबु-बक्र सिद्दिक रजियल्लाहु अन्हुम अज्मईन ने इस्लाम कुबूल किया[1] ।
इस जमात कि कोशिस से दुसरे लोग भि इस्लाम मे दाखिल होने लगे । यह सब लोग इस डर से खुफिया अन्दाज मे लोगोँ को इस्लाम कि दावत देते कि कहि इस धर्म से दुश्मनि रखने वाले उनके दुश्मन न बन जाएँ, तिन सालोँ तक यह मरहला जारि रहा[2] ।

जिन्नों का इस्लाम कुबूल करनाः

शिक्षकः अल्लाह तआला कि बहोत सि मख्लुकात है, उनमे से जिन्न भि एक मख्लुक है जिन कि संख्या बेशुमार है, हम उन्हे नहि देख सकते लेकिन वह हमे देखते हैं, हमारि बाता सुनते और हमपर नजर रखते हैँ । उनमे कुछ नेक, अच्छे तो कुछ बुरे और फसाद मचाने वाले होते हैँ। अल्लाह तआला खुद उनकि जुबानि उनके गुणोँ का वर्णन करते हुवे कहता हैः

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَاۗىِٕقَ قِدَدًا

अनुवादः और यह कि बेशक कुछ तो हम मे से नेक हैं और कुछ उसके उल्टा भि हैं । हम कई तरह से बटे हुवे हैँ। (सुरह जिन्न 11) जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म फजर कि इमामत कर रहे थे तो जिन्नों कि एक जमातने कुरआन कि तेलावत सुनि और अपनि कौमके पास जाकर उसकि खबर दि, और उनसे मोतालबा किया कि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इमान लाएँ, इस वाकया को अल्लाह तआला ने एसि सुरत मे बयान किया है जिसका नाम उनके नाम पर हि रखा गया है, वह है सुरतुल जिन्न, अल्लाह तआला फरमाते हैः
अनुवादः हेमोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप कह दिजिए कि मुझे वहि (प्रकाशना) कि गई है कि जिन्नोँ के एक गिरोह ने कुरआन सुना और कहा कि हमने अजिब कुरआन सुना है । जो सच्चे रास्ते कि तरफ मार्गदर्शित करता है, हम तो उस पर इमान ला चुके अब हम कभि भि अपने रब के साथ किसि दुसरेको साझेदार नहि बनाएंगे । (सुरह जिन्न 1-2)
विधार्थीः इस आयत मे किददा से क्या मुराद है ? जो कि आयत के अन्त मे है ।
शिक्षकः किददा का माना मुख्तलिफ अज्नास के होते हैँ। उदाहरण स्वरूप इन्सान, इन्सान बिभिन्न किसिम के होते है, इसि तरह जिन्नो मे भि मुख्तलिफ किस्मे हैं , उनमे कुछ शयातीन भि हैँ जिनसे अल्लाह ने हमे

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबविया(1/262-268) खालिद बिन हामिद अल हाजमी, अल फवाइद अससनिया मिनस्सिरतुन नबविया (38)
[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबविया(1/288)

शरण मागने का आदेश दिया है इसि लिए हम "अउजुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर रजीम" पढनेका एहतमाम करते हैँ।
विधार्थीः जिन्नों कि दुनिया तो एक अजिब व गरिब दुनिया होगि ?
शिक्षकः अल्लह तआला के मखलुकात बहोत ज्यादा हैँ, उनमे से कुछ के बारे मे तो हम जानते हैं , जैसे पेड पौदा, पत्थ, पानि, जानवर आदि जब कि कुछ एसे भि मखलुक हैं जिन के बारेमे हमे ज्ञान नहि है। समन्दर मे कितने एसे जिव रहति हैं जिन्हे सिर्फ अल्लाह हि जानता है, उनमे से कुछ जिवौँ कि जानकारि हमे उन तस्विरौँ के जरिये से मिलि हैं जो गोता-खोर समन्दर कि गहराइ मे जाकर लेते हैँ। अल्लाह तआला के बनाए हुए प्राणि इतने ज्यादा हैँ कि उन्हे अल्लाह तआला हि जानता और शुमार कर सकता है।
विधार्थीः लेकिन प्रस्न यह है कि जिन्नौँ को हमे देखने और हमारि बातेँ सुनने कि सलाहियत क्यौँ दि गई, जब कि हम उन्हे न देख सकते है न उनकि बाते सुन सकते हैं ?
शिक्षकः मेरे बच्चों ! इस मे अल्लाह तआला कि हिक्मत छुपि हुइ है, और यहि हमारे लिए बेहतर भि है। अगर हम उन्हे देख पाते तो हो सकता था कि उनकि शकलो सुरत से हमे तक्लिफ पहोँचे, इस लिए अल्लाह तआला ने जो चिज हमसे पोशिदा रखा उसका पोशिदा रहना हि हमारे लिए बेहतर है। अल्लाह हम पर बडा मेहरबान है, वह हमारे लिए खैर व भलाइ चाहता है , वह हमे समन्दरो के मनमोहक दृश्य, बागिचौँ कि हरियालि व शादाबि और आस्मान के सितारों कि चमक-दमक जैसि हर तरह कि खुबसुरति से लुत्फ-अन्दोज होनेका मोका देता है, क्यो कि वह हमारे लिए भलाई और बेहतरि पसन्द करता है। इसि लिए हमे भि अल्लाह से मोहब्बत रखनि चाहिये, उसकि एताअत करनि चाहिये और हमेशा उसको धन्यवाद ज्ञापन करते रहना चाहिये।

दावतका दुसरा चरणः
शिक्षकः आप जानते है कि खुफिया दावत का पहला मरहला तिन साल तक जारि रहा, उसके बाद अल्लाह तआला ने अपने नबिमोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको यह आदेश दिया कि आप खुलेआम लोगौँ को दीन कि तरफ बुलाएँ और तमाम लोगौँ मे उसका एलान कर देँ। अल्लाह तआला ने अपने नबि से कहाः

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ

अनुवादः अपने करिबि रिश्तेदारौँ को खबरदार कर दो (सुरह शोअरा 214)
अनुवादः बस आप इस आदेशको जो आपको किया जा रह है खोल कर सुना दिजिए और मुश्रिकौँ से मुह फेर लिजिए। (सुरह हिज्र 94)

इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जिस चिज कि दावत देने का आदेश दिया है, आप उसका एलान करें और जो मुश्रिक आपके सास्ते मे अडचन डालता है उसकि तरफ ध्यान ना देँ ताकि आपकि दावत जारि रहे। इस लिए कि जो रुकावटोँ के सामने घुटने टेक देता है वह जिन्दगि मे कुछ नहि कर पाता।
विधार्थिः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि कौम को किस तरह से दावत दिया ?
शिक्षकः अल्लल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफा पहाड पर चढ गए जो अभि सइ करने कि जगह के शुरू मे स्थित है। आपने सफा पहाड पर चढकर यह आवाज दियाः यासबाहा (हाय सुबह) यह पुकार सुनकर कौरैश कबिले के लोग आपके पास जमा हो गए तो आपने फरमायाः तुम लोग यह बताओ अगर मै यह कहुँ कि पहाड कि वादि मे एक घुड-सवार फौज है जो तुम पर छापा मारना चाहति है तो तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे ? लोगों ने कहा हाँ क्यों कि हम ने हमेशा आपको सच बोलते हि पाया है। आपने फरमायाः अच्छा मै तुम्हे एक सख्त आजाब से खबरदार करने लिए भेजा गया हुँ। इस पर अबुलहब ने कहा कि तु सारा दिन गारत हो, क्या तुने हमे इसे लिए जमा किया था ? इस पर यह आयतेँ नाजिल हुइः
अनुवादः अबु लहब के दोनोँ हाथ टुट गए और वह खुद बर्बाद हो गया। न तो उसका माल उसको काम आया न उसकि कमाइ। वह अनकरिब भडकति हुवि आग मे जाएगा। और उसकि पत्नि भि जाएगि जो लकडियाँ ढोने वालि है। उसकि गर्दन मे खजुर के छाल कि बटि हुवि रस्सि होगि। (सुरह मसदः 1-5)
शायद आपको अनुमान हो गया होगा कि पहले चरणमे दावत को खुफिया रखने कि क्या वजह थि, और दावतका आगाज रिश्तेदारोँ से क्यों किया गया था ? इसि लिए ताकि अबुलहब जैसे लोग टांङ न अडाएँ।
विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका यह अन्दाज बहोत हि निराला है के आपने लोगोँ को जमा कर के उनको दिन कि दावत दि, लेकि हमारा प्रस्न यह है कि आपने यासबाहा क्यों कहा, इसका क्या मतलब ?
शिक्षकः अरब वासियों कि यह आदत थि कि जब कोइ अहम बात होति या कोइ खतरा मामला होता तो लोगोँ मे यासबाहा कहकर आवाज लगाते। फिर गौर करने कि बात यह भि है कि जब कौरैश के कबाएल आपके पास जमा हो गए तो आपने उनसे कहा किः तुम लोग यह बताओ अगर मै यह कहु कि पहाड कि वादि मे एक घुड-सवार फौज है जो तुम पर छापा मारना चाहति है तो तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे ? लोगों ने कहा हाँ । इस से पता चलता है कि लोगोँ को यह मालुम था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभि झुठ नहि बोलते इसि वजह लोग आपको अमीन कह कर पुकारते थे। लेकिन कुछ लोगोँ के अन्दर हसद और किना कुट कुट कर भरा होता है जिस कि वजह से वह हक मे रूकावट और खैर व भलाई को कुबुल करने से मना करते हैँ। इसि लिए हमें गुरूर और घमण्ड से अल्लाह तआला कि शरण तलब करनि चाहिए और घमण्ड के तमाम पहलुओ से दुर रहना चाहिए।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको बिभिन्न तरिकों से तक्लिफें दि गइः

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बेअसत से पहले लोग शिर्क व गुमराहि के दलदल मे थे । अपने हाथों से मुर्ति बनाते फिर उसि कि इबादत करते और अपनि जरूरते उनसे मागते । जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि दावत का खुल कर एलान किया तो कुछ लोगों को शिर्क कि पुरानि रिवायत को छोडना मुश्किल होने लगा । जब कि कुछ लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस मकाम व मरतबा से हसद करने लगे । जबकि चन्द एसे भि लोग थे जिनको यह फिक्र खाए जा रहि थि कि इस्लाम लाने से उनकि सरदारि छिन जाएगि और वह लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मातहत मे आगाएंगे । जब के कुछ ऐसे भि थे जिन्हे अपने गुनाहों पर डटे रहना हि ज्यादा महबुब था ।

इन्हि कुछ वजुहात कि वजह से कुछ लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथ इस्लाम कुबुल करने वाले सहाबा केराम से नफरत व दुश्मनि करने लगे और उन्हे हर तरिके से तक्लिफ और अजियत देने लगे

विधार्थीः सुब्हानल्लाहिल अजिम ! गोया कि ऐसे भि लोग होते है जो हक जानने बावजूद सिर्फ अपने फाइदे के लिए उस से दुश्मनि करते है ।

शिक्षकः हाँ, हक और सच्चाई के बारे मे लोगों का ऐसे हि रवैय्या रहा है, इसि लिए हमारे उपर अनिवार्य है कि हम सच्चाइ कि इत्तेबा करें और ख्वाहिशे नफ्स को हक कि राह मे रूकावट ना बनने दें।

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबाए केराम को जिन अजियतों का सामना करना पडा, उनकि कुछ तफ्सिल आप हमें बता सकते हैं।

शिक्षकः पहले पैगम्बरों को भि उनकि कौम कि जानिब से बिभिन्न किसम के तक्लिफों , अजियतों और हकारतों का सामना करना पडा, अल्लाह तआला फरमाता हैः

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ

अनुवादःऔर हम ने आप से पहले कि कौमों पे भि अपने रसुल लगातार भेजे । मगर जो भि संदेशवाहक आता उसका वे मजाक उडाते ।(सुरह हिज्रः 10-11)

उन्होनो ने जिन तरिको से मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अजियत दिया उनमे आपको झुठलाना सरे फिहरिस्त है, पहले वह आपको अमीन कहते थे लेकिन रेसालत के बाद वहि लोग आपको जादुगर, पागल, मजनु, ज्योतशि और शाएर जैसे शब्दों से सम्बोधन करने लगे । अल्लाह तआला ने उनके इस रवैय्ये कि तरदिद करते हुवे फरमायाः

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ

अनुवादः और तुम्हारा साथि दिवाना नहि है ।(सुरह तकविरः 22)

और फरमायाः

अनुवादः बेशक यह कुरआन प्रतिष्ठित रसुल का कौल है। यह किसि शाएर का कौल नहि, अफसोस तुम बहोत कम यकिन रखते हो। और ना किसि ज्योतषि का कौल है अफसोस तुम बहोत कम नसिहत हासिल करते हो।(सुरह हाक्कहः 40-42)

विधार्थीः मुश्रिकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मजनु, जादुगर और शाएर जैसे लकब से पुकारने लगे। लेकिन हमे काहिन का माना समझ मे नहि आया ?

शिक्षकः बहोत खुब ! अल्लाह तुमपर रहमते नाजिल करे, यह बडा अच्चा सवाल है। इस से पता चलाता है कि तुम तवज्जोह के साथ पाठ सुनते हो और यह भि मालुम होता है के तुम अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहोत मोहब्बत रखते हो।

काहिन उसे कहते है जो अदृश्य बातोँ का दावा करता है , जब कि अदृश्य का ज्ञान सिर्फ अल्लाह तआलाको है, अल्लाह तआला अपनि मशियत से जब चाहता है अपने नबि को किसि अदृश्य चिज का ज्ञान अता कर देता है जिस कि तफ्सिल आगे आएगि इन्शा-अल्लाह।

विधार्थिः वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एसे नामो से क्योँ सम्बोधित करते थे ? उन्हे इस से क्या फाइदा पहोँता था ?

शिक्षकः वह इन बे-माना और बातिल नामोँ से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस लिए सम्बोधित करते थे ताकि लोगोँ कि नजर मे आपकि नुबुवत मशकुक बन जाए और वह दिने एलाहि को कुबूल करने से बाज रहेँ, और इस लिए भि ताकि लोग आपकि दावत कि राह मे रोडे डालें और आपकि हिम्मत पस्त करके आपको दावत से रोक देँ।

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु उनके साथ किस तरह पेश आए ? क्या आपने उनसे झगडा मोल लिया ? या आपने अपने देफा के लिए उनसे जंगो जदल किया ?

शिक्षकः हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगोँ के खैर ख्वाह थे, आप उन्हेँ कुफ्र कि तारिकि से निकाल कर इस्लाम कि रोशनि मे लाना चाहते थे, ताकि वह सलामति के साथ जन्नत मे दाखिल हो सकें, लेकि आप कभि भि अपनि जात के लिए बदला लेने कि नहि सोँचते थे बल्कि उनकि बद्‌तमिजियोँ पर सब्र करते थे और उनके इस्लाम कुबूल करने के ख्वाहिश मन्द होते थे । अगर आप उनसे लडते झगडते या उनपर अत्याचार करते या उनके साथ झगडा और दुश्मनि वगैरह का मामला करते तो उनके दुश्मनि मे एजाफा हि होता। लेकिन चुँकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगोँ पर मेहरबान और शफिक थे इसि लिए उनके कुफ्र पर तरस खाते थे क्योँ कि कुफ्र कि सजा जहन्नम है और जहन्नम बहोत हि बुरा ठिकाना है।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव मे दुश्मनो के तइ बहोत नरमदिल थे।

शिक्षकः बिल्कुल हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के साथ दया व मेहरबानि का मामला करते थे चाहे वह आपका दुश्मन हि क्यौँ न हौँ। अल्लाह तआला ने आप को इसि सिफात से मुत्तसिफ करके फरमायाः

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللهِ لِنْتَ لهم ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عنهم وَاسْتَغْفِرْ لهم وشاورهم فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَي اللهِ ۚ اِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ

अनुवादः अगर आप बद जुबान और सख्त दिल होते तो यह सब आपके पास से छँट जाते। (सुरह आले-इम्रानः 159)

यानि आप अगर उनके साथ सख्त रवैया अपनाते तो वह आप को छोड जाते और इस्लाम कुबुल नहि करते। लेकिन चुँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ सब्रका मामला करते थे इस लिए वह अपनि दुश्मनि से बाज आकर दिने एलाहि के अनुयाइ बन जाते। इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुशरण करते हुवे हमे भि धैर्य रखना चाहिए, अपने मोखालफिन के साथ बदजुबानि और सख्ति नहि करनि चाहिए के वह हमसे नफरत करने लगेँ और हम से दुर भागने लगै फिर उनसे हमारा नाता हि खत्म हो जाए। अगर ऐसा हो जाए तो ना हम उनपर अपना असर डाल पाएङ्गे ना उनको भलाई कि तरफ बुला सकेङ्गे।

विधार्थीः यह ब्यवहारिक जिवनके बारे मे बहोत हि बेहतरीन और महत्वपुर्ण बाते है, उस्तादे मोहतरम आपकि नसिहतें बहोत हि किमति हैँ।

शिक्षकः वह लोग अत्याचार मे इस हदतक बढ गए थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किसि भि तरह कि ज्यादति और अत्याचार करने ने मे थोडा भि नहि हिचकिचाते, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काअबा के पास नमाज पढ रहे होते और सज्दे मे जाते तो वह शाजिश करते हुवे अय्यारि और मक्कारि से आपके उपर जानवर का खुन और लिद फैँक देते[1]। हदिस मे फरस शब्द आया है जिसका माना होता है कि जानवर के लाद मे होने वालि गन्दगि, वह लोग यह गलाजत आपके उपर फैँक कर हँसि के मारे एक दुसरे पर गिरने लगते और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे हि मे पडे रहते।

विधार्थीः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके इस हरकत पर क्या रद्दे अमल जाहिर करते थे ?

शिक्षकः दुश्मनौँ के इस करतुत कि खबर हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा को होति है जो अभि कमउम्र हैं वह आकर अमने पिता मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक शरिर से वह गन्दगि हटाति हैँ फिर उन मुश्रिकौँ के तरफ रूख करति है जिन्हौँ ने उनके पिता के साथ यह बदसलुकि कि था और उन्हेँ सख्त सुस्त सुनाति हैं इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जुबान से उनके हक मे बददुवा

[1] बुखारिः (1/180-181) हदिस नः(520)

निकलति है और अल्लाह तआला उन तमाम को गज्वए बद्र मे हलाक व बरबाद कर देता है[1] । इस कि तफ्सिल आइन्दा सफहात मे किया जाएगा इन्शा अल्लाह।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिन तक्लिफोँका सामना करना पडा उनकि एक मिसाल यह है कि आप खानाए काअबा के पास नमाज मे मश्गूल थे कि उक्बा बिन अबि मोइत नामि शख्स आया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि चादर आपके गले मे डाला और उससे आपका गला घोँटते हुवे उसे सख्ति से खिँचा इत्ने मे हजरत अबु बकर रलियल्लाहु अन्हुपहोँचे तो उन्होने उसके मोंढाको पकडकर आप से हटाया और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जान बचाइ[2]। मोंढा कहते है उस जगहको जहाँ कन्धेसे सर और बाजु मिलता है[3] ।

विधार्थीः यकिनन् दावत कि राह मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहोत तकलिफें उठानि पडि मगर आपने उन तमाम तक्लिफों को बडि धैर्य के साथ बरदाश्त किया।

शिक्षकः आपने बिल्कुल सहि कहा, एक मरतबा मुश्रिकीन इकट्ठा होकर आपकि जान लेने कि शाजिस रचने लगे, हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा को इसकि खबर लग गई उन्हे अपने पिता नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जान का खतरा महसुस हुवा तो रोति हुवि अपने पिता के पास आईँऔर मामले से आपको बाखबर किया, आपने वजु के लिए पानि मांगा और वजु करके मस्जिदे हरम कि तरफ चल पडे।

विधार्थीः मुश्रेकिन इतनि ज्यादा संख्या मे थे फिर भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उनकि जरा भि परवाह नहि कि ?

शिक्षकः बिल्कुल नहि, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकि बिल्कुल भि परवाह नहि कि, आप निडर और बहदुर इन्सान थे आपने अल्लाह तआला पर तवक्कुल और भरोसा किया, आप जानते थे कि उन मुश्रिकिन से और उनकि बदतमिजियोँ से अल्लाह तआला हि उनकि हिफाजत करेगा। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास पहोँचे और जैसे हि उनकि नजर आप पर पडि उनकि निगाहेँ निचि हो गईँउनकि ठोडियां सिनोँ मे सट गईँगोया उन्होने सर जमिन मे गडा लिया और उनमे से कोइ अपनि जगह से हिल ना सका। रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरिफ लाए उनके सरोँ के पास खडे होकर एक मुश्त मिट्टि उठाया और यह कहते हुवे उनके चेहरे पर मार दिया किः चेहरे खाक-आलूद होँ। उनमे से जिस के चेहरे पर भि उस मे से कोइ कडकरि पडि वह हालते कुफ्र मे हि बदर के दिन मारा गया[4] ।

विधार्थीः यह तो एक खौफनाक वाकया है उस्तादे मोहतरम।

---

[1]बुखारिः (1/180-181) हदिस नः(520)

[2] बुखारिफ(3/286) हदिस नः(4815)

[3] शिक्षक इसके बारे मे अधिक बता सकते हैँ।

[4] अहमद, अल मुस्नदः(1/202)

शिक्षकः यकिनन् यह एक खौफनाक और डरावना हादसा है, अल्लाह कि कुदरत पर गौर करेँ कि किस तरह उनकि शाजिश को खुद उन्हि के लिए जिल्लतो रुसवाइ मे बदल दिया और उनके दिल मे खौफ पैदा कर दिया और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतनि हिम्मत बख्शि के आपने मिट्टि उठा कर उनके चेहरे पर मार दिया। गौर करने कि बात यह है कि हर चिजपर अल्लाह तआला कि कुदरत किस तरह नुमाया होति है, मुश्रिकिन एक बडि गरोह मे थे लेकिन अल्लाह तआला के आदेश से उनकि ताकतो कुव्त हवा हो गई, उनमे से न कोइ हरकत कर सका न जुबान से एक शब्द हि निकाल सका और नाहि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तरफ नजर उठा कर देखने कि हिम्मत कर सका, गोया अल्लाह तआला जब कोइ चिज करना चाहता है तो कहता है होजा तो वह उसि वक्त हो जाति है। अल्लाह तआला कहता हैः

اِنَّمَآ اَمْرُہٗ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَہٗ كُنْ فَيَكُوْنُ

अनुवादः जब वह किसि चिजका इरादा करता है उसे इतना कहदेना बस होता है कि हो जा, वह फौरन हो जाति है। (सुरह यासिनः 82)

आप इस पर भि गौर करेँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने रबपर किस कदर यकिन और भरोसा था कि अल्लाह तआला उनकि शाजिसो से आपको जरूर बचाएगा जिस कि बेनापर आप बगैर किसि तआमुल के बा-वजु होकर मस्जिदे हरम कि तरफ निकल पडे।

विधार्थीः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बेटि हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा यह देख कर खुश हुइ होंगि कि अल्लाह ने उनके वालिद कि हिमायत और मदद कि।

शिक्षकः बेशक मेरे बच्चो ! हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा को इस बात कि खुशि हुइ कि अल्लाह तआला ने उनके पिता और नबि अलैहस्सलातो वस्सलाम कि मदद कि, उनके आँसु अब खुशि मे बदल गए हर तरह कि बडाइ उस अल्लाह के लिए है जिस ने अपने नबि को इज्जत व नुसरत से नवाजा और दुश्मनोँ से उनकि हिफाजत फरमाइ।

इस्लाम कुबुल करने वाले सहाबाको दि जाने वालि अजियतेः

शिक्षकः कोरैश ने अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियोँ को भि बिभिन्न किसम कि तक्लिफेँ देते थे, उन्हे लोहे कि जिरह पहना कर धुप मे छोड देते थे, बेलाल बिन रेबाह को कोरैश के औबाश नौजवान मक्का कि गलियोँ मे घसिटते फिरते मगर उनकि जुबान से अहद अहद का हि नारा निकलता था। ओमैय्या बिन खल्फ सख्त चिलचिलाति धुप मे मक्का कि रेतिलि जमिनपर हजरत बेलालको लेटा देता और आदेश देता कि उनके सिनेपर बडे बडे पत्थर रखे जाएँ और कहता कि युँ हि पडे रहो यहाँ तक कि मौत आजाए या फिर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ठुकरा कर लात व उज्जा कि इबादत के

लिए तैय्यार हो जाओ, मगर फिर भि हजरत बेलाल रजियल्लाहु अन्हु के जुबान से अहद अहद कलमा निकलता था[1]।

विधार्थीः हजरत बेलाल रजियल्लाहु अन्हु अहद अहद पुकारते थे इसका क्या मतलब ?

शिक्षकः हजरत बेलाल रजियल्लाहु अन्हु जो अहद अहद कहते थे उसका मतलब है किः अल्लाह एक है उसका कोइ साझि नहि।

विधार्थीः सुब्हानल्लाहिल अजीम ! हजरत बेलाल रजियल्लाहु अन्हु को तो बहोत हि सख्त अजियत बर्दाश्त करनि पडि ! उस्तादे मोहतरम ओमैय्या बिन खल्फका उस सहाबि से क्या तआल्लुक था ?

शिक्षकः बेलाल बिन रेबाह रजियल्लाहु अन्हु ओमैय्या के गुलाम थे, जमाने जाहिलियत मे लोग कुछ लोगोँ को गुलाम बनाकर रखते थे, उनका खरिदो फरोख्त होता था, उनके साथ सामाने तेजारत कि तरह बरताव किया जाता था, जब इस्लामका सुरज निकला तो उन रिवाजो को इस्लाम ने खत्म कर दिया।

विधार्थीः बहुत हि अच्छि बात है कि इस्लाम ने इन्सानो को आजादि दिलाइ और समाज से इस बुराइ का खात्मा किया। मगर उस्तादे मोहतरम मुझे यह पुछना था कि हजरत बेलाल रजियल्लाहु अन्हु को कब तक सजा दि जाति रहि और वह सब्र का दामन थामे दीन पर काएम रहे ?

शिक्षकः आपने अच्छा प्रस्न किया, हजरत बेलाल रजियल्लाहु अन्हु उस समय तक सजा काटते रहे और अहद अहद पुकारते रहे जब तक कि अबु बकर सिद्दिक रजियल्लाहु अन्हु ने उन्हे ओमैय्या बिन खलफ से खरिद कर आजाद ना कर दिया, उस के बाद दुसरे लोगोँ कि तरह उनकि भि आजादि लौट आइ[2]।

विधार्थीः अल्लाह तआला हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हुको इस अजिम कामपर बहोत बहोत अज्र अता फरमाए, उन्होँ ने हजरत बेलाल को आजाब व एकाब कि शोजिस व तक्लिफ और जिल्लत व रुसवाइ वालि जिन्दगि से छुटकार दिलाका आजादि जैसि नेमत से सरफराज किया।

शिक्षकः अजियतो से दोचार होने और उसपर सब्र करने वालोँ मे यासिर रजियल्लाहु अन्हु के घरवाले भि शामिल थे।

बनु मख्जूम हजरत अम्मार बिन यासिर उनके पिता और उनकि माता सुमैय्या को शदिद चिलचिलाति धुप मे बाहर निकालते और तपति हुइ रेतपर लेटा देते[3]।

विधार्थीः इस वाक्या मे रमजाअ (तपति हुवि रेत) का जिक्र आया है इस से क्या मुराद है ?

शिक्षकः जब धुप कि तपिश से जमीन सख्त गरम हो जाति है तो उसे रमजाअ कहते हैँ। अरब कहते हैँ किः रमजाअ पे ना चलो, यानि जब जमीन सुरज कि तपिश से गरम हो जाए तो बगैर जुते चप्पल के ना चलो।

---

[1] अहमद, अलमुस्नदः(1/404)

[2] हकिम, अलमुस्तदरकः(3/342)

[3] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(1/342)

अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आले यासिर के पास से गुजरते और उन्हे आजाब दिया जा रहा होता तो आप उन्हे सब्र कि तल्किन करते हुवे कहते किः ए आले यासिर सब्र से काम लेते रहो क्यों कि तुम्हारा ठिकाना जन्नत है। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हे यह बशारत देते कि उनके बदले मे जन्नत मिलने वालि है, वह जन्नत जो दीन के मामले मे सजा से दोचार होने पर सब्र करने के बदले उनके इन्तेजार मे है। हजरत अम्मार बिन यासिर कि माँ को मुश्रिकोँ ने इतनि सजा दि कि उनकि जान चलि गई लेकिन फिर भि वह दीने इस्लाम पर काएम रहिँ ताकि अपने रब तआला से मुलाकात का शर्फ हासिल कर सकें और जिस जन्नत का वादा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया था वह उन का ठिकाना बन जाए[1]।

शिक्षकः खब्बाब बिन अरत रजियल्लाहु अन्हु को भि अजियतोँ का सामना करता पडा, उनको इतनि अजियत दि गई कि उनके पुश्त पर अजियत के निशान पड गए[2]।

इसि तरह बिभिन्न सहाबा कराम को अपनि कौम के तरफ से तक्लिफोँ को बरदाश्त करना पडा, सिवाए उन सहाबा के जिनको अपने कौम कि हिमायत हासिल थि तो उन्होंने दुश्मनोँ के जुल्म व जौर से उनकि हिफाजत कि।

विधार्थीः अल्लाह तआला रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम सहाबाए केराम से राजि हो, यकिनन उन्होंने बहोत सारि अजियतोँ को बरदाश्त किया और दुख दर्द झेले।

शिक्षकः बिल्कुल, वाकइ उन्होंने तौफिके एलाहि और सब्र के जरिए अपने इमान कि हेफाजत के लिए बहोत सारि तक्लिफेँ बरदाश्त कि, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दुआएँ और जन्नत कि बशारतें भि दिनपर साबित कदम रहने मे मोआवनत साबित हुइ, यहाँतक कि अल्लाह ने इस्लाम को हम तक पहोँचाया और हमे तो इस्लाम के लिए कोइ तक्लिफ भि नहि उठानि पडि, अल्लाह का लाख लाख सुक्र व एहसान है। हम अल्लाह तआला कि हम्दो सना बयान करते हैँ, जब जब सहाबा का जिक्र आए हम सहाबा के लिए रजाए इलाहि कि दुवा करते हैं और नबि ख सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं। हम अल्लाह तआला से दुवा करते हैं कि हमें जन्नतुल फिसदौस मे उनका साथ नसिब करे।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दावत को रोकने के लिए सौदेबाजिः

जब कोरैश के मुश्रिकोँ ने देखा कि कुछ लोग अप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दावत कुबुल कर रहे हैँ और दिनबदिन इस्लाम कि दावत फैलति जा रहि है और उन्होँने आपको अजियत देने के जो तरिके एख्त्यार किए थे वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा के नेशात व सरगर्मि को

[1] साबिक मरजा

[2] बुखारिः(2/531) हदिस नः(3612)

रोकने मेँ नाकाम हैं, तो उन्हो नें बात-चित और सौदेबाजि का अनदाज अपनाया, उनको यह यकिन था कि इस तरिके से वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दावते इस्लाम पर रोक लगाने के कामयाब हो जाएंगे।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम माफि चाहता हुँ, मोफवजत व सौदेबाजि और बातचित के क्या माने है ?

शिक्षकः मोफावजत का माना आपसि बातचित और किसि चिज पर इत्तेफक और मोआहिदा के लिए दो फरिक का आपस मे चन्द बातेँ पेश करना जिसपर दोनो गिरोह आपस मे मुत्तफिक हो जाएँ।

विधार्थीः लेकिन यह तो धार्मिक मोआमला है ! अल्लाह ने उसे नाजिल किया है और उसपर अमल करने का आदेश दिया तो क्या दीन इस्लाम मे किसि बातचित और सौदेबाजि कि कोइ गुन्जाइश है ?

शिक्षकः बहोत खुब मेरे शिष्योँ, उन्हे लगता था कि हो सकता है नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे मान लें, यह उनकि खाम-ख्यालि थि, लेकिन आप मेरि बात सुनते रहें आपको इस बारे मे सारि तफ्सिल मालुम हो जाएगि।

आपके चचा अबुतालिब से बातचितः

शिक्षकः कोरैश के बडे लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबु तालिब के पास आए जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा के देहन्त के बाद आपकि केफालत और परवरिश कि जिम्मेदारि अपने सर लि थि जैसा कि हम पहले जान चुके हैँ।

उन्होँ ने अबुतालिब से कहा किः आपका भतिजा हमारि मजलिसोँ मे अकर हमे तक्लिफें पहोँचाता है आप उन्हें उस से बाज रखें।

विधार्थीः लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो उन्हेँ कोइ तक्लिफ नहि पहोँचाते थे फिर उन्होँने ऐसे क्योँ कहा ?

शिक्षकः बहोत खुब ! असल मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लोगों को इस्लाम कि तरफ बुलाना हि उनकि नजर मे तक्लिफदह था।

विधार्थीः हमे बात समझ आगई, अबु तालिब ने उन्हे क्या जवाब दिया ?

शिक्षकः जब अबु तालिब ने उनकि बात सुनि तो अपने भतिजे अल्लाह के पैगम्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको बुलाया और उनसे कहाः तुम्हारे चचाजाद भाइयोँ का कहना है कि तुम उनकि मजलिसोँ मे जाकर उन्हेँ अजियत देते हो। अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः चचाजान ! अल्लाह कि कसम अगर वह मेरे दाहिने हाथ मे सुरज और बाँया हाथ मे चान्द लाकर रख दें और मुझसे कहें कि मै दावत छोड दुँ तो भि मै नहि छोड सकता[1]।

[1] हाकिम, अल मुस्तदरकः(3/577)

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानते थे कि कोइ उनके दाहिने हाथमे सुरज और बायाँ हाथ मे चाँद नहि रख सकता। लेकि जिस तरह उनके लिए यह ना-मुम्किन है कि वह दाहिने हाथ मे सुरज और बायाँ हाथ मे चाँद रखें उसि तरह यह भि ना-मुम्किन है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगो को दिने इलाहि कि तरफ बुलाना छोड दें।

विधार्थीः बहोत खुबसुरत और दिलकश मालुमात, मुझे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका जवाब बहोत पसन्द आया। लेकिन आपके चचा अबुतालिब का क्या जवाब था ?

शिक्षकः अबुतालिब ने कहा कि हम ने अपने भतिजे को कभि भि झुठ बोलते हुवे नहि देखा सो तुम लोग चले जाओ[1]।

यनि कि हमें अपने भतिजे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कभि भि झुठका तजरबा नहि हुवा। जब उसने कह दिया है तो लाजिम है कि वह अपने दावति मिशनको नहि छोडेगा तुम समझलो कि उसने जो कहा और तुमने जो सुना वह सुना वह सच है।

उत्बा बिन रबिया कि बातचितः

शिक्षकः एक दुसरे मोकापर उत्बा बिन रबिया ने अपनि कौम कुफ्फारे कोरैश के सामने यह बात रखि के वह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खुद जाकर बातचित करेगा, तो मुश्रिकिने कोरैश ने उसको इजाजत दे दिया तो वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर कहने लगाः

भतिजे ! यह मामला जो तुम ले कर आए हो उससे तुम यह चाहते हो के तुम्हे मालो दौलत मिले तो हम तुम्हारे लिए इतना माल जमा कर देंगे के तुम हम मे सब से ज्यादा मालदार हो जाओ, और अगर तुम यह चाहते हो कि तुम्हे मकामो मरतबा मिले तो हम तुम्हे अपना सरदार बना लेते हैं यहाँ तक कि तुम्हारे बगैर किसि भि मामले मे फैसला नहि करेंगे, और अगर तुम चाहते हो कि बादशाह बन जाओ तो हम तुम्हे अपना बादशाह बना लेते हैं। और यह जो तुम्हारे पास कोइ जिन्न भुत आता है जिसे तुम देखते हो अगर तुम उसे अपने आपसे दुर नहि कर सकते तो हम तुम्हारे लिए इसका इलाज तलाश कर देते हैं और इस मामले मे हम इतना माल खर्च करनेको य्यार हैं के तुम शेफायाब हो जाओ[2], यानि कोइ एसि चिज है जो तुम्हारे सपने मे आकर तुम्हे एसा करनेका आदेश देता है तो हम तुम्हारा इलाज कराएंगे।

विधार्थीः यह तो बहोत बडि पेशकस थि, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या जवाब दिया ?

शिक्षकः सब से पहलि बात तो यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे बोलने कि खुलि छुट दि और बातके दौरान नहि टोका जो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरिका था। जब कि आप

[1] साबिक हवाला

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(1/313-314)

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसि भि सुरतमे उसकि कोइ भि बात मानने वाले नहि थे, क्यो कि उन तमाम पेशकस का मरकज दुनया तलबि थि, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के पैगाम पहोँचाने के जिम्मेदार थे जो कि दुनिया और दुनिया के तमाम चिजोँ से बेहतर है।

जब उत्बा अपनि बात खत्म कर चुका और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकि पुरि बात सुन लि तो आपने फरमायाः ए अबुल वलिद ! क्या तुमने अपनि बात मोकम्मल कर लि ? उस ने कहाः हाँ। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अब मेरि सुनो, इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरआन कि यह आयतेँ तेलावत किः

अनुवादः अवतरित हुवा है बडे हि कृपालु व बडे दयालु कि तरफ से। ऐसि केताब है जिस कि आयतों का स्पस्ट ब्याख्या किया गया है (इस हालत के कि) कुरआन अरबि भाषा मे है उस कौम के लिए जो जानति है। खुश खबरि सुनाने वाला और डराने वाला है फिर भि उनके ज्यातर ने मुह मोड लिया और वे सुनते हि नहि। और उन्होने कहा कि तु जिस कि तरफ हमे बुला रह है हमारे दिल तो उस से पर्दे मे है हमारे कानो मे बोझ है (या कुछ सुनाइ नहि देता) और हम मे और तुम मे एक पर्दा आड है अच्छा तु अब अपना काम किए जा हम भि अपना काम करने वाले हैँ। (सुरह फुस्सिलतः 1-4)

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढते जा रहे थे और उतबा अपना दोनो हाथ पिछे जमिनमर टेके चुपचाप सुन रहा था। जब आप सज्दे कि आयत पह पहोँचे तो आपने सज्दा किया, फिर फरमायाः अबुल वलिद जो कुछ सुनना था तुम सुन चुके अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने[1]।

विधार्थीः बहोत अच्छि बात है के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्बा बिन रबिया के सामने इस सुरह कि तेलावत कि जिस के अन्दर बताया गया है कि कुरआन करिम को अल्लाह तआला ने खुश खबरि देने वाला और डराने वाला बनाकर उतारा है।

शिक्षकः यह भि अच्छि बात है कि तुम ने इन आयतो को ध्यान पुर्वक सुना।

विधार्थीः उस के बाद उतबा का रद्दे अमल क्या था ? हो सकता है कि सुरह कि तेलावत और उस का अर्थका उस पर प्रभाव पडा हो।

शिक्षकः अल्लाह तआला का कलाम सुन कर उत्बा बहोत प्रभावित हुवा , जब अपनि कौम मे वापस लौटकर गया तो वह लोग उसका चेहरा देख कर यह समझ गए और बोल पडे कि अबुल वलिद तुम्हारे पास वह चेहरा लेकर नहि आया है जो चेहरा लेकर वह गया था।

फिर अबुल वलिद से उनलोगों ने पुछा किः अबुल वलिद पिछे कि क्या खबर है ? यानि तुम कौन सि खबर लाए हो ?

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः (1/313-314)

उसने कहा किः पिछे कि खबर यह है कि मैने एक ऐसा कलाम सुना है कि वैसा कलाम अल्लाह कि कसम मैने कभि नहि सुना, कसम खुदा कि वह न शायरि है और न जादु ना हि ज्योतिष कि बात।
उस के बाद कोरैश के लोगो से कहा किः वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके हाल पर छोड दें यह सुनकर वह लोग कहने लगे कि उस ने तुमपर भि जादु कर दिया।
विधार्थीः यानि उन्होने उत्बा कि बात नहि मानि ?
शिक्षकः हाँ उन्होने उत्बा कि एक ना सुनि। खुद उत्बा जो कुरआन से प्रभावित हो चुका था वह भि अपने समुदाय के अनुशरण मे इस्लाम कुबुल करने से पिछे हटा रहा।
विधार्थीः तब तो उत्बा और उस के कौम का सिर्फ घमण्ड और हटधर्मि है कि उन्होने सच्चाइको जानकर भि उसको स्विकार नहि किया।
शिक्षकः यकिनन् यह उनका घमण्ड हि था। इस लिए कि सच्चाइ उनके सामे प्रश्ट हो चुका था, उन्होने कुरआन सुना था, उत्बा ने उस कुरआन के एसे गुण बताए जिस से उन्हे पता चल गया था कि कुरआन कोइ शायरि या जादु, या किसि ज्योतिषि का कलाम नहि है जैसा कि वह लोग कहते आ रहे थे। उत्बा ने प्रश्ट कर दिया था कि उसने जो कलाम सुना है वह कुरआन वैसि नहि है जैस वह लोग कहते है।
मेरे शिष्यों ! घमण्ड से अल्लाह तआला कि शरण तलब करो, हम अल्लाह तआला से दुवा करते है कि हमे सिधे राह कि रहनुमाइ करे और हमे दिने हक पर साबित कदम रखे जैसा कि अल्लाह तआला ने हमे इस आयते करिमा मे इस कि तालम दि है, अल्लाह तआल फरमाते हैः

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

अनुवादः ए हमारे रब हमे हिदायत देने के बाद हमारे दिल टेढे न कर दे और हमें अपने पास से रहमत अता कर बे शक तु हि सब से बड नवाजने वाल है।(सुरह आले इम्रानः8)
गोया घाण्ड एक घातक चिज है, क्यो कि घमण्ड इन्सानको सच्चाइ ठुकरा देता है, उसे मानने से इन्कार कर देता है, चाहे इन्कार कि वजह कोइ भि हो[1]।

मोअजेजा (चमत्कार) का मोतालबाः

शिक्षकः जब कुफ्फारे कोरैश कि बातचित और सौदेबाजि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावति पैगामको रोकने मे नाकाम हो गई तो उन्होने ने आप से चमत्कार का मोतालबा शुरू कर दिया।
विधार्थीः मोअजेजा का क्या मतलब है ?
शिक्षकः मोअजेजात उसको कहते हैं जो इन्सान के वशमे ना हो। मुश्रिकिन ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह मोतालबा किया कि सफा पहाडको सोने का बना दें तब वह इमान ले आएङ्गे। नबि

[1] इस मोका पर शिक्षक घमण्ड के अक्साम और उसके नुक्सानात कि मजिद वजाहत करेँ और उसको उदाहरणो से सम्झाएँ।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से दुवा किया, आपके पास जिब्रइल अलैहिस्सलाम आए और कहा किः अल्लाह तआला आपको सलाम अर्ज करता है और फरमाता है किः अगर आप चाहें तो सफा पहाडको सोने मे बदल दिया जाएगा। लेकिन उस के बाद जो इन्कार करेगा उसे हम एसा आजाब देङ्गे जैसा आजाब दुनिया जहाँ मे किसि को नहि दिए। और अगर आप चाहें तो उनके लिए रहमत और तौबा के दरवाजे खोल दिए जाएँ। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः बल्कि उनके लिए रहमत और तौबा के दरवाजे खोल दिए जाएँ[1]।

विधार्थीः सब्हानल्लाहिल अजिम ! नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए तौबा और रहमत के दरवाने क्यौँ एख्त्यार किया ? मुश्रिकिन के मोतालबा को एख्त्यार नहि किया कि वह इस्लाम कुबुल कर लें ?

शिक्षकः बहोत खुब मेरे बच्चो, यह महत्वमुर्ण प्रस्न है। पहलि बात यह कि आप जानते है कि कौरैश अरबौं मे सबसे ज्यादा फसिहुल्लेसान (भाषाविज्ञ) थे, वह अरवि भाषा का बहोत ज्ञान रखते थे। जब उन्हौं ने कुरआनको सुना तो उन्हें यकिन हो गया कि यह किसि इन्सान का कलाम नहि है बल्कि यह अल्लाह का कलाम है, इस लिए कि इन्सान कितना भि अरबि भाषाका माहिर हो जाए मगर कुरआन जैसा एक आयत भि हरगिज नहि पेश कर सकता, तो भला वह एक सुरह कैसे ला सकता है ? लेकिन यह तमाम हकिकत जानने के बावजुद भि वो इस्लाम से दुर हि रहे।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बरताव और व्यवहार से खुब वाकिफ थे और जानते थे कि अगर सफा पहाडको सोना भि बना दिया जाए तो भि वह यहि कहेङ्गे कि तुमने हमारि आँखो मे जादु कर दिया है। और अगर वह ऐसा कहते तो अल्लाह तआला उन्हे सख्त आजाब मे मुब्तला कर देता और अल्लाह के रसुलको उनपर विजय प्राप्त हो जाता। लेकिन हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुँकि रहम दिल और दयालु थे इस लिए आपने उनके साथ धैर्यका मामला किया और उनकि हिदायत के लिए प्रयास करते रहे और यह उम्मिद करते रहे कि हो सकता है कि उनमे से कुछ लोग इस्लाम कुबुल कर लें और उनके साथ उनकि आल औलाद भि मुसलमान हो जाएँ इस तरह उन्हे अल्लाह के प्रकोप से नजात मिल जाए।

विधार्थीः आपका चुनाव हिक्मत पर मब्नि था। इस से मालुम होता है कि हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहम दिल, नरम मिजाज इन्सान थे। आपके अन्दर सख्त मिजाजि बेरुखापन नहि था, आप बहोत धैर्य करने वाले थे।

आपने आजाब के बजाए उनके लिए अल्लाह कि रहमत का इन्तेखाब किया। उनकि अजियतौं को बर्दाश्त किया और सब्रका दामन थामे रहे।

---

[1] हाकिम, अलमुस्तदरकः(1/53-54)

शिक्षकः यकिनन् आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दयालु और कृपालु इन्सान थे, आप लोगो कि भलाइ चाहते थे याहाँ तक कि अपने दुश्मनोँ के लिए भि भलाइ के ख्वाहा थे। हमे भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्याहार को अपनाना चाहिए, धैर्य और दया से काम लेना चाहिए, सख्ति और बे रूखि के बजाए नरमि और मोहब्बत से काम लेना चाहिए ताकि अल्लाह हमारे उपर भि रहम करे और हमे हर तरह कि बरकतोँ से नवाजे।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! क्या उन्होने ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से और भि मोअजेजा तलब किया ?

शिक्षकः हाँ, हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु कहते है कि मक्का वालोँ ने आप से यह मोतालबा किया कि आप कोइ निशानि दिखाएँ , तो आपने उनके सामने चाँदके दो टुकडे कर दिए, यहाँ तक कि उनलोगोँ ने हेरा पहाडको उन दो टुकडोँ के दरमेयान मे देखा[1]।

विधार्थीः यह कैसे हुवा ? इसके बारे मे और विस्तार से बताए ?

शिक्षकः जब मक्का वासियो ने आप से मोअजेजा दिखाने का मोतालबा किया तो अल्लाह तआला ने आस्मान मे चाँदको दो भाग मे बाँट दिया, दोनो भाग अलग अलग हो गए, उन्होने उसे अपनि आँखो से देखा। यहाँ तक कि उन्होने हेरा पहाडको चाँद के उन दो टुकडो के दरमेयान प्रश्ट तरिके से देखा के यकिन हो गया कि चाँद दो हिस्सो मे बटा हुवा है। अल्लाह तआला ने उस नाम से एक सुरत भि अवतरित किया जिसका नाम सुरतुल कमर है, अल्लाह तआला फरमाते हैः

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ

अनुवादः कयामत करिब आ गई और चाँद फट गया। यह अगर कोइ चमत्कार (मोजिजा) देखते हैं तो मुह फेर लेते हैँ और कह देते है कि यह पहले से चला आता हुवा जादु है। (सुरतुल कमरः 1-2)

विधार्थीः चाँदके दो टुकडे होनेको अपनि आँखों से देखनेके बाद क्या मुश्रिकीने मक्का ने इस्लाम कुबुल कर लिया ?

शिक्षकः जैसा कि तुम ने सुरह कमर मे सुना किः

अनुवादः यह अगर कोइ चमत्कार देखते है तो मुह फेर लेते हैँ और कह देते है कि यह पहले से चला आता हुवा जादु है, यानि वह कहते हैँ कि यह तो पुराना जादु है। अब तुमको इस बात कि हिकमत समझ आगया होगा कि आखिर क्यो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रहमत और तौबा का दरवाजा एख्त्यार किया और यह पसन्द नहि किया कि सफा पहाडको सोना बना दिया।

इस लिए कि उन्होँ खुलि आँखो से चाँद के दो टुकडो होने का मन्जर देखने के बाद भी यही कहा कि यह तो पहले से चला आता हुवा जादु है। अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके लिए सफा पहाडको

---

[1] बोखारिः(3/59) हदिस नः(3868)

सोना मे परिवर्तन करनेको एख्त्यार कर लेते और फिर भि वह इस्लाम न लाते तो उन्हे जरूर आजाब दिया जाता।

यह बात बिल्कुल सहि साबित हुइ कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह एख्त्यार करते के अल्लाह तआला उनके लिए सफा पहाडको सोना बाना दे तो यहि कहते किः आपने उनके आखो मे जादु कर दिया है। फिर उसके बाद अल्लाह उन्हे आजाब मे मुब्तला कर देता। इस से मालुम होता है कि हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनि कौम से बिल्कुल अच्छ तरह वाकिफ थे।

हबशा कि तरफ हिजरतः

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि आपके सहाबा केराम दिन इस्लाम कुबुल करने कि वजह से बिभिन्न प्रकार के अत्याचार के शिकार हो रहे हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे कहा किः अब पानि सर से उँचा हो गया है इस लिए हिजरत करना जरूरि है। आप लोग हबशा कि तरफ हिजरत कर जाएँ वहाँ का बादशाह किसि पर जुल्म नहि करता, वह रास्तबाजोँ कि सरजमिन है, आप इसि मुल्क मे अकामत एख्त्यार करे ताकि अल्लाह हमें अत्याचारों के अत्याचार से नजात बख्शे[1]।

मक्का से हबशा कि तरफ प्रस्थान को हिजरत का नाम दिया जाता है, इस लिए कि सहाबा अत्याचार कि बस्ति को छोडकर ऐसि बस्ति को छोडकर एसि जगह कि तरफ हिजरत करके गए जहाँ उनका धर्म भि महफुज था और वह भि अमनो अमान मे थे।

विधार्थीः यह मुल्क हब्शा कहाँ है ? क्या सहाबा कराम वहाँ हिजरत करने के लिए तैय्यार हो गए ?

शिक्षकः हब्शाका मौजुदा नाम इथियोपिया है जो सुडान के दझिण मे पडता है, जजिरतुल अरब और हबशा के बिच मे लाल सागर हाएल है।

रहि बात सहाबाए केराम कि तो वह प्रस्थान के लिए तैय्यार हो गए, क्यो कि मुश्रिकिन के अत्याचार से तो हिजरत मे हि भलाई थि। महत्वपुर्ण बात यह थि कि हबशा कि राजा न्यायप्रेमि था उसे अत्याचार बिल्कुल भि पसन्द नहि था।

मुसलमानो ने दो मरतबा मक्का से हब्शा हिज्रत किया, पहलि मरतबा रजब के महिने मे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबि बनाए जाने के पाँच साल बाद[2]।

विधार्थीः क्या हिजरत करने वाले मुसलमानो कि संख्या ज्यादा थि ?

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(1/344)

[2] इब्ने हजर, फतहुल बारिः (7/188)

शिक्षकः सब से पहले हिजरत करने वालोँ मे 11 पुरुष और 4 महिला थिँ। वह पैदल अपने घरोँ से निकले थे, यानि उन्हो ने मक्का से समन्दर तक का सफर पैदल हि तै कया था। जिस कि दुरि लगभग 80 किलो मिटर है। उसके बाद उन्होने हबशा के लिए एक कश्ति किराए पह लि।

जब मक्का मे रहने वाले बाकि मुसलमानो का भि जिन्दगि भि कष्टमय हो गई तो अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुसरि मरतबा हबशा कि तरफ हिज्रत कि अनुमति दि। इस मरतबा हबशा कि तरफ हिजरत करने वाले सहाबा कि संख्या 83 थि[1]।

विधार्थीः हबशा मे उनकि जिवन कैसे कट रहि थि ?

शिक्षकः जब मुसलमान हबशा पहोंचे तो उन्होने वहाँ के राजा को रसुलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथम अनुसार इन्साफ पसन्द पाया, उस राजा का नाम नजाशि था।

राजा ने उन्हे धार्मिक व व्यवहारिक अमान दिया और हर प्रकार कि तक्लिफ से उन कि हिफाजत कि। लेहाजा उन्होने अल्लाह कि कृपा व दया से अमनो शान्ति के साथ जिवन बिताया।

विधार्थीः यकिनन् पहले इस्लाम कुबुल करने वाले सहाबा ने दीन कि खातिर बहोत मुसिबतेँ झेलि।

शिक्षकः बडि अच्छि बात है मेरे शिष्यों कि आपने सहाबाए केराम कि कुरबानियोँ को समझम और उनकि जानेसारियोँ को महसुस किया।

हमे उनकि जानेरियोँ से सबक हासिल करना चाहिए के हम धार्मिक मामले मे सुस्ति व काहिलि से काम ना लेँ। अल्लाह तआला ने हमे जिन इबादतो का आदेश दिया है उनको पुरा करने मे पेश आने वालि परेशानियोँ को बरदाश्त करेँ और सुस्ति व गफलत को पास ना आने देँ। अल्लाह तआला ने हमे अमनो शान्ति और खुशहालि कि नेअमत अता कि है तो हमे ज्ञानकि प्राप्ति मे मेहनत करनि चाहिए। खास तौर से धार्मिक ज्ञान प्राप्ति मे लगन से काम लेना चाहिए, और अपने हर काम मे दिन कि खिदमत को पेश पेश रखना चाहिए।

प्रस्थान के स्थान पर मुसलमानो का पिछा किया गयाः

शिक्षकः कोरैश को जब मालुम हुवा कि मुसलमा दीन इमान कि सलामति के साथ हबशा मे रहने लगे है तो वह मुल्के हब्शा मे भि उनके पिछे पड गए और उन्हे उनके हाल पे रहने नहि दिया।

विधार्थीः सहाबा केराम तो कोरैश से बहोत दुर थे, आखिर उन्होने ऐसा क्या किया ?

शिक्षकः जब कोरैश को खबर लगि के मुसलमान अमनो शान्ति से रह रहे हैँ तो आपस मे छलफल के लिए इकठ्ठे हुवे और इस बात पर मुत्तफिक हुवे कि वह नजाशि और उस के हवारियोँ के लिए दो चालाक लोग

[1] पुर्व हवाला

के मारफत कुछ हदिया तोहफा भेजे ताकि नजाशि राजा पर उसका अच्छा असर पडे, यह दो चलाक लोग अब्दुल्लाह बिन अबि रबिया और अम्र बिन आस थे[1] ।

विधार्थीः उस के नजाशि ने मुसलमानो से क्या बरताव किया ?

शिक्षकः नजाशि एक अकलमन्द और इन्साफ पसन्द राजा थे, उन्हे अत्याचार बिल्कुल पसन्द नहि था। यह दोनो कोरेशि उनके पास हाजिर हुवे और उन से कहा किः हमारि कौम के कुछ नादान और कम-अकल लोग आपके पास आगए हैँ, उन्होने अपना धर्म छोड दया है और आपके भि धर्मको नहि अपनाया है बल्कि एक ऐसा धर्म बनाया है जिसे ना हम जानते हैं ना आपको उसके बारे मे कुछ मालुम है।

विधार्थीः क्या नजाशि ने उनकि यह बात मान लि ?

शिक्षकः नजाशि एक अकलमन्द और तजरबेकार इन्सान थे, फैसला लेने से महले उन्होने सहाबा कि बातको भि सुनना जरूरि समझा जिस तरह उन दो कौरैशियो कि बात उन्होने सुनि थि। इन्सानको ऐसा हि करना चाहिए कि जब कोइ शख्स किसि चिज का दावा करे तो उसबक्त तक उसकि बात ना माने और ना उसका पक्ष ले जब तक कि दुसरे गिरोह कि बात भि ना सुन ले, ताकि आदिल, मुन्सिफ और अमानतदार कहला सके, क्या यह बात सहि नहि है मेरे बच्चो ?

विधार्थीः बिल्कुल सहि बात है, इसका मतलब है कि नजाशि ने सहाबा को बुला कर उनसे भि मामला जाना।

शिक्षकः हाँ उन्होने सहाबाको अपने दरबार मे तलब किया और उनसे पुछताछ किया, लेकिन सहाबा उनके पास जाने से पहले इक्ठ्ठा होकर आपस मे राय मस्विरा किया।

विधार्थीः सहाबा कि यह अमल काबिले तारिफ है के उन्होने बादशाह के पास जाने से पहले आपस मे मस्वेरा किया।

शिक्षकः हाँ लोग जमाअत मे होँ और कोइ महत्वपुर्ण मामला पेश आजाए तो उन्हेँ इकठ्ठा हो कर फैसला लेना चाहिए और किसि एक इन्सान को पुरि गिरोहपर अपनि राए थोपने कि जिद नहि करनि चाहिए। इस लिए कि सलाह मस्वेरा के बहोत से फाएदे है, जिन मे से यह भि है कि इस से गौरो फिक्र के दरवाजे खुलते हैँ, बहस व मोनाकशा का माहौल पैदा होता है और हर एक को अपनि राए देने का मोका फराहम करने का मोका मिलता है। जिस के राए मे कोइ कमि पाइ जाति है उसकि इस्लाह कि जाति है फिर आपसि इत्तेफाक से किसि एक राए को एख्त्यार करते है। फिर यह भि है कि जमाअत कि राए मे भलाइ होति है इस लिए कि अल्लाह तआला कि मदद जमाअत के साथ होति है।

विधार्थीः सहाबा केराम का इज्तेमा कैसा था ? उनका इज्तेमा बहोत हि सुन्दर रहा होगा ?

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः (1/385-362)

शिक्षकः यकिनन् उनका इज्तेम बहोत हि अच्छा था, उन्होने कहा किः हम सच्चाइ से काम लेंगे, जो सच है वहि बताएङ्गे, हम वहि कहेंगे जिसका आदेश हमे हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया है, चाहे उसका जो भि किमत चुकानि पडे। यानि चहे उसमे हमारे लिए भलाइ हो या बुराइ हो हम नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बताइ हुइ बात हि रखेंगे।

विधार्थीः यह तो बहोत हि अच्छि बात है कि उन्होने नजाशि के सामने सच्चाइ और हकिकत बयानि से काम लिया जिस कि तालिम हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दि थि।

शिक्षकः हाँ, सच बोलने मे हि भलाइ है, हमारा दिन हमे सच बोलने का आदेश देता है और झुठ बोलने से मना करता है।

विधार्थीः नजाशि से सहाबा कि क्या बात चित हुइ ?

शिक्षकः सहाबा इस बात पर मुत्तफिक हुवे कि हजरत जाफर बिन अबि तालिब उनकि तरजुमानि करेङ्गे। हजरत जाफर रजियल्लाहु अन्हु ने कहा किः ए बादशाह सलामत, हम ऐसे कौम थे जो जेहालत मे डुबे हुवे थे। हम मुर्ति कि पुजा करते थे मुरदार का गोश्त खाते थे, बदकारि करते थे, रिश्तेदारोँ से नाता तोडते थे, पडोसियोँ से बद सलुकि करते थे, और हममे का ताकतवर कमजोरोँ को खा रहा था। हम इसि हालत मे थे कि अल्लाह ने हमहि मे से एक रसूल भेजा, उसका आला नसब, उसकि सच्चाइ, अमानतदारि, पाकदामनि, हमे पहले से मालुम थि। उसने अल्लाह कि तरफ बुलाया और समझाया कि हम सिर्फ एक अल्लाह को मानेँ और उसि कि इबादत करेँ, उसके सिवा जिन मत्थरोँ और मुर्तियोँ को हमारे बापदादा पुजते थे उन्हें छोड देँ। उसने हमे सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्तेदारि निभाने, पडोसि से अच्छा सुलुक करने और हसामकारि व खुनखराबा से दुर रहने का आदेश दिया। इस के अतिरिक्त बदकारि से दुर रहने, झुठ बोलने, अनाथका माल खाने, और पाक दामन महिलाओ पर झुठा आरोप लगाने से मना किया। उसने नमाज, रोजा, जकात का आदेश दिया। जब हमारे समुदाय ने हम पर बहोत अत्याचार किया हमे बहोत सताया हमारे जमिन तङ्ग कर दि और हमारे व हमारे धर्म के दरमेयान आड बन गए तो हमने आपके मुल्क कि राह लि और दुसरोँ से बेहतर आपको समझा[1]।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम यह तो बहोत सुन्दर बात है। लेकिन हम यह जानना चाहते हैं कि जमना जाहिलियत के लोग किन बुरे कामो मे मुलौव्विस थे के मुर्तियोँ कि पुजा करते थे ? रिश्तेदारियोँ को तोडते और पडोसियोँ को सताते थे।

जब कि कुछ एसे गुणों का भि बर्णन हुवा है कि जिनका माना हम समझ नहि सके जैसे मुरदार का खाना और फवाहिश मे मोलौव्विस होना। इसका व्याख्या करें।

---

[1] साबिक हवाला

शिक्षकः तुम्हारि तवज्जोह और ध्यानसे पढना काबले तारिफ है मेरे प्यारे बच्चो ! मुरदार वह जानवर है जो जबह किए बिना हि मर जाता है या जिसको अल्लाह का नाम लिए बगैर जबह किया जाता है। जैसे कोइ जानवर उँचाइ से गिर कर या बिमार हो कर मर जाए वह मुरदार कहलाएगा। जहाँ तक फवाहिश कि बात है तो एसे तमाम बुरे काम उसमे दाखिल हैँ जो इन्सान के नजदिक काबिले कुबुल नहि जैसे अत्याचार और बेपरदा लेबास वगैरह। रहि बात झुठ व बोहतान कि तो उस से मुराद लोगोँ पर झुठा लांक्षन लगाना है।

विधार्थीः शुक्रिया उस्तादे मोहतरम ! अल्लाह आपको बेहतर बदला अता करे। आपने हमे इस्लाम धर्मके उन बेहतरिन गुणों कि तरफ ध्यान दिलाया जिसे अल्लाह तआलाने हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित किया। यह गुण जेहालति व्यहार के बिलकुल उलट हैँ जैसा कि हजरत जाफर बिन अबि तालिब के बयान से जाहिर होता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमे एक अल्लह कि इबादत करने, सच बोलने, अमानत अदा करने, रिश्तेदारि जोडने, पडोसियों के साथ अच्छा बरताव करने, हराम काम से बचने का आदेश दिया और नाहक खुन बहाने, कत्लो गारतगरि करने से मना फरमाया। जैसा कि हमे समझ आया, क्या हमारि समझ दुरूस्त है ?

शिक्षकः हाँ आपने बिल्कुल सहि समझा, हराम कामोँ और खुन-खराबा से बचने का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जिन चिजोँ को अवैध करार दिया है हम उनसे बचेँ और खुन ना बहाएँ, अगर पहले ऐसा करते थे तो अब हरगिज ऐसा ना करें।

विधार्थीः लेकिन प्रस्न यह है कि सहाबा कि बात सुनने के बाद नजाशि ने क्या किया ?

शिक्षकः नजाशि ने कहा किः वह पैगम्बर जो कुछ लेकर आए हैँ उनमे से कुछ बातेँ तुम्हारे पास है ?

हजरत जाफर ने कहाः हाँ है। उसके बाद सुरह मरयम कि शुरुवाति आयात कि तेलावत कि। नजाशि कलामे इलाहि के प्रभाव से इस तरह रोया कि उसकि दाढि भिग गई। नजाशि के तमाम अस्काफ भि हजरत जाफर कि तेलावत सुन कर इस कदर रोए कि उनके सहिफे तर हो गए। नजाशि के अस्काफ से मुराद वह वजिर हैं जो उन के पार मौजुद थे। नजाशि ने कहाः यह कलाम और वह कलाम जो हजरत इसा अलैहिस्सलाम ले कर आए थे दोनो एक हि शमादान से निकले हैं। अल्लाह कि कसम मै इन लोगोँ के तुम्हारे हावाले नहि कर सकता और नाहि यहाँ पर तुम्हारि कोइ चाल चलने वालि है[1]।

विधार्थीः यह एक बेहतरीन फैसला और बहोत हि मोअस्सिर वाकया है। हमारे जेहन मे एक प्रस्न आ रहा है कि नजाशि ने कलामे एलाहि के बारे मे यह बात क्योँ कहि कि यह कलाम और वह कलाम जो हजरत इसा अलैहिस्सलाम लेकर आए थे दोनो एक हि शमादान से निकले हैं ?

शिक्षकः बहोत खुब ! सब से पहलि बात यह कि उस नजाशि हजरत इसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम के धर्म पर थे। जब उन्होने हजरत जाफर रजियल्लाहु अन्हु से तेलावत सुनि तो कहा कि यकिनन् कुरआन कि

---

[1] साबिक हवाला

यह सुरत और हजरत इसा इब्ने मरयम का लाया हुवा कलाम दोनो एक हि शमादान से निकले हुवे हैं। शमादान का मतलब है वह चेराग जिसके अन्दर रोशनि हो। यानि दोनो का अवतरण एक कि जेहत से हुइ है। उसे उन्होँ ने शमादान से ताबिर किया क्योँ कि शमा मे रोशनि होति है और कलामे एलाहि लोगोँ के लिए नुरे हिदायत है।

लेकिन जब हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उपर दीने इस्लाम का नुजुल हुवा तो आपने साबिक तमाम धर्मोँ को बातिल करार दे दिया, अब इस धर्म के सिवा कोइ भि धर्म अल्लाह के नजदिक काबिले कुबुल नहि जिसे अल्लाह तआला ने हामरे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाजिल किया। अल्लाह तआला फरमाते हैः

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

अनुवादः जो शख्स इस्लाम के एलावा कोइ और धर्म तलाश करे उसका धर्म कुबुल नहि किया जाएगा और वह आखिरत मे नुक्सान उठाने वालोँ मे से होगा।(सुरतह आले इम्रानः 85)

हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से अन्तिम पैगम्बर और अन्तिम रसूल हैं। आपके बाद कभि कोइ नबि नहि आने वाला।

हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु का कुबूले इस्लामः

शिक्षकः हजरत हम्जा नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हैं, वह अपने समुदाय के धर्म पर काएम थे लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक ऐसा वाकया पेश आया जो उनके कुबुले इस्लाम का सबब बन गया।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम वह वाकया कौनसा है ?

शिक्षकः यह वाकया बताने से पहले हम आपको बताना चाहते है कि उस समय अरबि लोगोँ कि क्या हालत व आदत थि। शिकार करना उस जमाने मे अरबोँ का सबसे पसन्दिदा काम था, वह सेहरा मे जाते जहाँ कोइ आबादि न होति वहाँ चरिन्दो परिन्द के झुण्ड होते वह उनका शिकार करके पकाते खाते।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हम्जा रजियल्लाहु अन्हु भि एक मरतबा शिकार को निकले। जब शिकार करके वापस लौटे तो उनकि बिवि ने उन्हे यह खबर दि कि अबुजेहल ने सफा पहाडि पर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रोक कर तक्लिफ पहोँचाइ है। हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु सुनते हि आग-बगोला हो गए, वह घर मे दाखिल होने के बजाए मस्जिदे हरम कि तरफ चल पडे जहाँ काबा के पास कोरैश कि मजलिस लगति थि[1]।

---

[1] अल हैसमि,मज्मउज जवाएदः(9/267)

विधार्थीः इस से पता चलता है कि हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहोत मोहब्बत करते थे ।

शिक्षकः हाँ, इस से पता चलता है कि हजरत हम्जा अपने भतिजे से बहोत मोहब्बत करते थे और उन्हे यह बिल्कुल भि गवारा न था कि कोइ उन्हे किसि किसम कि तक्लिफ पहोँचाए । साथ हि अबु जेहल के अत्याचार से यह भि मालुम होता है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि कौम अभि तक आपको तक्लिफ देने से बाज नहि आए थे और आप अबतक इस तक्लिफ पर सब्र कर रहे थे ।

विधार्थीः शायद हजरत हाम्जा रजियल्लाहु अन्हु कि मुलाकात अबुजेहल से हुवि होगि ?

शिक्षकः हाँ, उन्हों ने अबु जेहलको एक मजलिस मे पाया, उस के सरपर अपने धनुष से दे मारा, इस पर कोरैश का एक आदमि खडा हुवा और हजरत हम्जा को अबु जेहल से दुर किया तकि मामला तुल ना पकडे । हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु ने कहा किः मैमोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म का मानने वाला हुँ । मै गवाहि देता हुँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसुल है । मै अपने इस फैसले से फिरने वाला भि नहि हुँ । फिर वहाँ पर मौजुद कोरैशियोँ से मोखातब हो कर कहा किः अगर तुम अपने वादे मे सच्चे हो तो मुझे इस्लाम से रोक कर दिखा दो[1]।

इस तरह से हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु इस्लाम कि आगोश मे आ गए ।

विधार्थीः तारिफ के लाएक है वह अल्लाह जिस ने इस वाकया को रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु के कुबुले इस्लाम का सबब बना दिया ताकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको खुशि मिले ।

शिक्षकः बिल्कुल सहि कहा आपने ! यकिनन् हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु के कुबुले इस्लाम से मुसलमानो को ताकत व कुव्वत और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको कामयाबि मिलि । क्यो कि उनके इस्लाम कबुल करने से कोरैश मे डर और खौफ का माहौल पैदा हो गया और उनलोगोँ को यकिन हो गया कि अब हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु किसि भि हालत मे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको तक्लिफ देने पर खामुश नहि रहने वाले ।

आप गौर करे कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस कदर अपने कौम के साथ सब्र का अन्दाज अपनाया, यहाँ तक कि वह एक के बाद एक इस्लाम मे दाखिल होते गए, यकिनन् सब्रका बदला फतह व कामयाबि है ।

---

[1] साबिक हवाला

हजरत उमर बिन खत्ताब का कुबुले इस्लामः

शिक्षकः हजरत उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु अपने जेहालत के दिनोमे दुसरे कोरैशियोँ कि तरह हि इस्लामके दुश्मन और बागि थे, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है अपने हिकमत से उसे हिदायत दे देता है।

विधार्थीः जब वह इस्लाम के दुश्मन थे तो उनकि राय बदलि कैसे ?

शिक्षकः मेरे प्यारे बच्चो ! हिदायत कि तौफिक अल्लाह तआला के हाथ मे है, वहि दिलोँ को फेरता और उसकि इस्लाह करता है। इसि लिए हमे अल्लाह तआला से यह दुवा करनि चाहिए कि अल्लाह तआला हमे नेक और अच्छा बनाए। हमारे दिलोँ कि इस्लाह करे और हमे अपने धर्मपर साबित कदम रखे।

उम्मे अब्दुल्लाह बिन अबि हस्मा रजियल्लाहु अन्हा कहति हैँ कि वल्लाह हम हबशा कि धर्ति कि तरफ हिजरत करने कि तैय्यारि कर रहे थे जहाँ मुसलमानो ने हिजरत किया था जैसा कि आप गुजिश्ता पन्नो मे इसकि तफ्सिल जान चुके हैँ। उम्मे अब्दुल्लाह कहति हैँ किः हम तैय्यारियोँ मे लगे हुवे थे कि उमर मेरे दरवाजे पे आधमके जब कि अभि वह अपने शिर्क पर बाकि थे और हमें दिन-रात उनकि आजामइश से दोचार होना पडता था[1]।

विधार्थीः इसका मतलब है कि मुसलमान अपने भइयोँ के पास सफर कर रहे थे जो हबशा कि तरफ हिजरत करके चले गए थे।

शिक्षकः हाँ,जिनको भी अपनि कौमके जुल्म व अत्याचारका डर था वह सफर कर रहे थे, सिवाय ऐसे लोगोँ के जिन्हेँ अल्लाह कि तरफ से अपनि कौम मे कुव्वत व हैबत हासिल थि जैसे हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु।

विधार्थीः यह इस्लाम कुबुल करने वाले सहाबाए केराम के फितनो और आजमाइशोँ का हाल है। लेकन हजरत उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु ने कैसे इस्लाम कुबुल किया ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दुवा कि बरकत थि के हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम कुबुल किया, जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम कुबुल करने वाले सहाबा के उपर होने वाले अत्याचार को देखा तो अल्लाह तआला से दुवा किया किः ए अल्लाह ! तु इस्लामको अबु जेहल बिन हेशाम या उमर बिन खत्ताब के जरिए बुलन्दि अता फरमा। हदिस बयान करने वाले सहाबि कहते हैं कि अगलि सुबह हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे हाजिर हुवे और इस्लाम कुबुल कर लिया[2] यानि दुसरे हि दिन वह मुसलमान हो गए।

विधार्थीः सुब्हानल्लाहिल अजिम ! अल्लाह तआला ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दुवा कुबुल कर लिया।

---

[1] अहमद बन हम्बल, फजाइले सहाबाः(1/279)

[2] तिर्मिजिः(5/577) हदिस नः(3638)

शिक्षकः यकिनन् नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के महबुब बन्दे थे और आपकि दुवा अल्लाह तआला के नजदिक फौरन कुबुल होति थि। इस से यह भि पता चलता है कि हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु अपने कौम मे एक खास मकाम रखते थे, इस लिए कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रब से यह दुवा कि के इस्लाम को अबु जेहल या उमर के जरिए बुलन्दि अता फरमा और उस दुवा के नतिजे मे हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम कुबुल किया।

विधार्थीः इसका मतलब यह है कि यकिनि तौर पर हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु के इस्लाम कुबुल करने के बाद मुसलमानो कि ताकत बढि होगि, क्या एसा नहि है उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः बिल्कुल एसा हि है। मुसलमान पहले सेज्याद मजबुत हो गए, इस के बारे मे अब्दुल्लाह बिन मसउद रजियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं किः (हजरत उमर के इस्लाम कुबुल करने के बाद हम इज्जत व कुव्वत के साथ रहने लगे[1]।

आप गौर करेँ कि किस तरह कबिला कोरैश के सिर्फ दो लोगोँ के इस्लाम लाने से मुसलमानो कि आजमाइश खत्म होने लगि, वह दोनो हजरत उमर और हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हुमा हैं, अल्लाह तआला कहता हैः

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا

अनुवादः बेशक कठिनाइ के साथ आसानि है।(सुरह अन्नशरः6)

इसि लिए हमे जिन्दगि मे पेश आनेवाले मुसिबतोँ मे सब्र से काम लेना चाहिए, क्योँ कि अल्लह तआल सब्र करने वालोँ के साथ है। अल्लाह तआला फरमाते हैः

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

अनुवादः बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालोँ का साथ देता है। (सुरतुल बकरहः153)

इसि तरह से हमे नाउम्मिदि से भि बचना चाहिए, हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकि कौम ने इसकदर अजियत और तक्लिफ पहोँचाइ उसके बावजुद आप ना उम्मिद नहि हुवे।

इस लिए हमे कभि भि मायुस नहि होना चाहिए क्योँ कि अल्लाह तआला हरेक चिजका मालिक है तो हम भला क्योँ मायुस होँ जबकि अल्लाह तआला हमारे बारेमे हर चिजसे वाकिफ है।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम हम मायुस नहि हैँ। हमे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी से सब्र कि तालिम लेनि चाहिए।

---

[1] बुखारिः(3/57) हदिस नः(3863)

शेअबे अबि तालिब मे नजरबन्दः

शिक्षकः जब कौरैश ने महसुस किया कि इस्लाम दिन प्रति दिन लोगोँ मे फैलता जा रहा है और मुल्के हबशा कि तरफ हिजरत करके गए हुवे सहाबा अल्लाह तआला के फज्लो करम से और हब्शा के राजा कि इन्साफ पसन्दि से अमनो अमान मे हैँ, और यह कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हजरत हम्जा और हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हुमा इस्लाम कुबुल कर चुके हैँ तो उन्हे लगा कि इस्लाम मजबुत होने लगा है । इस लिए कुफ्फारे कौरैश ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको कत्ल करने का मन्सुबा बनाया[1] ।

विधार्थीः यहतो बहोत हि गम्भिर और खतरनाक मामला है कि वह ऐसा मन्सुबा बनाएँ ।

शिक्षकः हाँ बिल्कुल यह एक गम्भिर और बडा मामला है, लेकिन अल्लाह तआला हि वास्तविक निगहबान, हिफाजत करनेवाला मददगार है । और वहि मन्सुबो को नाकाम बनाने के अस्बाब मोहैय्या करता है ।

विधार्थीः माशा-अल्लाह ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह ! यकिनन् हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि कौमकि अजियतो पर जो सब्र किया उस का नतिजा था कि लोगोँ के दरमेयान मकबुलियत हासिल होने लगि, क्योँ कि धिरे धिरे कौरैश के असरदार लोग भि इस्लाम कुबुल करने लगे । लेकिन उस्तादे मोहतरम ! हम शेअबे अबि तालिब मे नजरबन्दि का मतलब नहि समझ सके ।

शिक्षकः शेअब के मानि होते है दो पहाडोँ के बिच कि जगह (घाटि), ज्यादा पहाड होने कि वजह से मक्का के ज्यादातर इलाके ऐसे हि घाटियोँ जैसि हैं । नजरबन्दि का मतलब यह है कि लोगो को कहिं आने जाने से रोक दिया जाए, या उनके पास कोइ चिज पहोँचने न दिया जाए जैसे खाने पिने कि चिज आदि ।

विधार्थीः हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको जब यह मालुम हुवा कि कौरैश के लोग उनके कत्ल कि शाजिस रच रहे हैँ तो आपका क्या रद्दे अमल था ।

शिक्षकः जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबु तालिब को इस कि खबर हुवि तो उन्हो ने बनु हाशिम और बनु मुत्तलिबको जमा किया और इस सिलसिले मे उनसे मस्विरा किया, उन्होने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि हिफाजत के लिए अबु तालिब कि बात मान लि, यहाँ तक कि उनमे से काफिर थे उन्होने भि कराबत और खानदानि गैरत कि बेनापर अबु तालिब का सथ दिया, सिवाए अबुलहब के, वह कौरैश के दुसरे गिरोह मे शामिल हो गया । कौरैश के काफिरोँ ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपका साथ देने वालोंको शेअबे अबि तालिब मे नजरबन्द कर दिया । यह वाकया एक मोर्हरम सन सात नबवि को पेश आया[2] ।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(1/375-380)(2/14-22) इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(7/192-193)

[2] साबिक हवाला

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! आपने बताया कि बनि हाशिम और बनि मुत्तलिब ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके चचा अबु तालिब कि बात मान लि यहाँ तककि उनमे जो काफिर थे उन्होने भि हमियत कि बुनियादपर उनका साथ दिया । हमियत से क्या मुराद है ?

शिक्षकः हमियत के माना यह हैं कि कबिले के लोग आपस मे एक दुसरे कि मदद करेँ और सिर्फ इस लिए करें कि कबिले कि मदद हो सके न कि इस लिए के सच्चाइ कि जित हो । ऐसि हमियत जमाने जाहिलियत मे एक आम आदत थि ।

लेकिन इस्लाम आने के बाद इसको बातिल करार दे दिया, और इस बात से मना किया कि कोइ किसि को ना हक मदद ना करे । इस्लाम ने जमाने जाहिलियत के जाँबेदाराना हमियत को बातिल करार दिया जिस कि बुनियाद पर लोग सिर्फ खानदानि गैरत मे मजलुम के खेलाफ जालिम कि मदद करते थे[1] ।

विधार्थीः इस्लाम कितना अच्छा धर्म है जो लोगोँ को अच्छे व्यवहार कि तालिम देता है ।

शिक्षकः जब मुश्रिक उनके नजरबन्दि पर मुत्तफिक हो गए तो उन्होँ ने इस इत्तेफाक को एक पन्ने पर लिखकर उसे खाना काबा मे लटका दिया ताकि वह इस फैसले से मुकर ना सकें ।

विधार्थीः मुसलमानो ने उस नजरबन्दि से कैसे निपटा ?

शिक्षकः शेबे अबि तालिब मे नजरबन्दि दो या तिन साल तक जारि रहा । मुसलमना और उनके पक्ष मे रहे लोगो ने इस जालिमाना नजरबन्दिको धैर्य के साथ बरदाश्त किया, उनके पार खाने पिने कि चिजे नहि पहोँचति थि जिस कि वजह से उन्हे दरख्तों के पत्ते चबाकर जिन्दगि गुजारनि पडि ।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! यह एक लम्बि मुद्दत है ।

शिक्षकः हाँ सब्र व तहम्मुल और पाबन्दि व नजरबन्दि कि यह एक लम्बा वक्त था । यहाँ तक कि खुद कुफ्फारे कोरैश के एक शख्स हेशाम बिन उम्र बिन हारिक अल आमरि से रहा न गया, उन्हें नजरबन्दि का यह फैसला पसन्द न था, वह चोरि छिपे शेबे अबितालिब मे खाने पिने कि चिजेँ भेजा करते थे । यह शख्स एक एक करके कुफ्फारे कोरैश के लोगोँ से मिला और उनसे बातचित कि, यहाँ तक कि उन तमाम लोगोँ कि मदद से यह वहशियाना पन्ना फाड दिया गया । कहा जाता है कि पुरे पन्ने को जमिन खा गई सिवाए अल्लाह तआला के नाम के[2] ।

विधार्थीः यह एक मुश्किल वक्त था, लेकिन अल्लाह तआलाने हेशाम बिन अम्र के दिलमे मोहब्बत डाल दि ताकि वह पन्ना फाडने मे मददगार साबित हो सके ।

---

[1] इस मोके को गनिमत जान कर उस्तादको चाहिए कि बच्चो के सामने आपसि तआउन कि गलत शकलोँ को वाजेह करें, आपसि तआउन कि जो सहि तरिके है उनपर रोशनि डालें, इस सिलसिले मे उनकि जिन्दगि से कुछ एसे उदाहरण पेश करे कि जिन के माध्यम से उन्हे यह मालुम हो सके कि उन्हे क्या करना चाहिए और किस चिज से बचना चाहिए ।

[2] साबिक हावाला

शिक्षकः यकिनन् हर चिज अल्लाहके अधिनमे है वह अल्लाह हि है जिसने पन्नेको फाडनेके कामको आसान बना दिया और उस पन्ने मे मौजुद तमाम फैसले जमीन खा गई और उस मे सिर्फ अल्लाह का नाम बाकि रह गया। इस वाकया से हमे कठिनाइ व मुसिबत के वक्त सब्र करने कि अहमियत मालुम होति है। हमेँ यह भि पाठ मिलता है कि अल्लाह तआला ने जिस तरह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथियोँ को आजमाइश मे मुब्तला किया उसि तरह दिगर मुसलमान भि अजमाइश मे डाले जा सकते हैँ, और यह भि कि आजमाइश व कठिनाई का हमेशा यह मतलब नहि होता कि अल्लाह तआला बन्दो से नाराज है, बल्कि अल्लाह तआला कयामत के दिन बन्दे के दरजात बुलन्द करने के लिए उसे दुनिया मे कठिनाइ मे मुब्तला करता है ताकि परेशानि के बाद उसे आसानि और खुशि हासिल हो[1]।

अबु तालिब का देहन्त और हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हाका स्वर्गवासः

शिक्षकः मुसलमान अभि शेअबे अबि तालिब से निकले हि थे कि कुछ हि दिनो बाद अबु तालिब का देहन्त हो गया और उसके बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि पत्नि हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा भि स्वर्गवासि हो गइँ[2]।

विधार्थीः यह भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आजमाइश हि का एक सिलसिला था।

शिक्षकः बिल्कुल, मुसिबतेँ बतौरे आमाइश हि होति हैँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके चचा और पत्नि का देहान्त आजमाइश हि थि, बतौरे खास इस लिए कि आपके चचा का कोरैश मे एक खास स्थान था और वह हर तरह आपकि हिमायत व हिफजत करते थे। हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गमोँ को हल्का करति और मुश्किल हालात मे आपको सब्र कि तल्किन करति थिँ। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके लिए अल्लाह तआला कि जानिब से बहोत बडि नेमत और एक बेहतरीन पत्नि थिं। (अल्लाह उनसे राजि हुवा) लेकिन अल्लाह तआला के फैसले पर हमे राजि होना चाहिए।

इन दोनोँ दर्दनाक हादसे से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल मे गम के एहसासातका ढेर लग गया। यहाँ तक कि उसको गमका साल कहा जाने लगा, बतौरे खास उसकि वजह यह थि कि आपके चचा अबु तालिब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इतनि मोहब्ब्त व आपकि हिमायत करने के बावजुद उन्होँ ने इस्लाम कुबुल नहि किया, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा कोशिस कि के आप इस्लाम कुबुल कर लेँ।

---

[1] शिक्षक को चाहिए कि इन्सान कि जिन्दगि मे आने वालि कठिनाइयोँ का जिक्र करे और बताए कि किस तरह कठिनाइयोँ से निमटना चाहिए।

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/57-58)

यहाँ तक कि जिन्दगि के आखरि लम्हों मे भि आपने अबु तालिब को इस्लाम कि दावत दि लेकिन कुफ्फारे कोरैश उनको अपने बाप-दादा के धर्म पर बाकि रहने के लिए उकसाते रहे जिस के कारण वह इस्लाम कुबुल करने से एहतराज करते रहे।

विधार्थीः सुब्हानल्लाहिल अजीमः वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मदद व हिफाजत करने के बावजुद इस्लाम कुबुल करने से महरूम रहे।

शिक्षकः चुँकि उनके साथ कुफ्फारे कोरैश रहा करते थे, वह उन्हें शिर्किया धर्मपर काएम रहने के लिए वरगलाया करते थे इस लिए उन्होने इस्लाम कुबुल नहि किया। इसि लिए हमे भि गलत संगत से बचना चाहिए जो इन्सानको अल्लाह तआला कि नाफरमानि पर उभारे।

हम अल्लाह तआला कि हम्द बयान करते हैं के उसने हमे मुसलमान बनाया। इस्लाम एक बहोत बडि नेमत है, यह हम पर अल्लाह का एहसान है कि उसने हमे हिदायत दिया, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चचा कि हिदायत के इच्छुक थे तो अल्लाह तआला ने अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मोखातब कर के कहाः

अनुवादः आप जिसे चाहें हिदायत नहि दे सकते, बल्कि अल्लाह तआला हि जिसे चाहता है हिदायत देता है। हिदायत पाए लोगों को वह अच्छि तरह जानता है।

ताएफ का सफरः

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबु तालिब के देहन्त के बाद कोरैश कि बदतमिजियाँ पहले से कहिँ ज्यादा बढ गइँ, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थकहार कर ताएफकि तरफ निकल पडे कि हो ना हो कबिला सकीफका कोइ शख्स आपकि मदद के लिए उठ खडा हो और इस्लाम कुबुल कर ले।

विधार्थीः क्या ताए के सफर मे सहाबा भि आपके साथ थे ?

नहि बल्कि आपने ताएफ का सफर अकेला हि किया, किसि को भि उसकि खबर नहि लगने दि के कहिँ मुश्रिकिन राह मे रुकावट ना बन जाएँ या बनु सकिफ के पास जाकर उन्हें डराने धमकाने ना लगें।

विधार्थीः गोया नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इख्त्यार करदा यह तरिका बहोत अहम है, लेकि क्या ताएफ मे बनु सकिफ ने हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मदद कि ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ताएफ पहोँचे तो कबिला बनु सकिफके तिन सरदारों के पास गए जो आपसमे भाइ थे जिनके नाम यह थेः अब्द या लैल बिन उमर बिन उमैर, मसूऊद और हबिब। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पास बैठने बाद उन्हे अल्लाह कि फरमाबरदारि और इस्लामकि मदद कि दावत दि, लेकिन उन्होने ना तो आपकि दावत कुबुल कि और ना हि आपकि मदद के लिए तैय्यार हुवे। आपने उनसे गुजारिश कि के आपकि आमद कि खबर पोशिदा रखें ताकि कहिँ एसा न हो कि मक्का

मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कौम को इस कि भनक लग जाए और उन्हे आपके खेलाफ शाजिस और बगावत का मोका मिल जाए[1] ।

विधार्थीः अल्लाहु अक्बर ! यह एक बहोत हि मुश्किल वक्त था । लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब्र व धैर्य के साथ उन तमाम मुश्किलात से निमटते रहे ।

शिक्षकः सहि बात है कि यह बहोत मुश्किल काम है कि आपकिसि के पास कुछ उम्मिद लेकर जाएँ और ठुकरा दिए जाएँ । बतौरे खास तक्लिफ कि बात यह है कि जाने वाले अल्लाह के नबि थे, आप उनसे मालो दौलत या दुनियादारि तलब करने नहि गए थे, बल्कि आप उनके पास अल्लाह तआला के नाजिल करदह सच्चाइ ले कर गए थे । लेकिन अल्लाह तआलाने हमारे लिए उन वाकयात को बाइसे इब्रत बना दिया कि हम सब्रको लाजिम पकडें और संगिन हालात मे भि मायुस ना होँ । हाँलाकि अल्लाह तआला इस बात पर कादिर था कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिशने नुबुवत को निहयत आसान बना देता । लेकिन अल्लाह तआला हमे यह बताना चाहता था कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किन मुश्किलात का सामना किया, किस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब्र और लगन से काम लेते रहे यहाँ तक कि आपको कामयाबि मिलि, लेकिन कभि आपने मुसिबतोँ और आजमाइशोँ से हार नहि माना ।

हमेभि मुसिबत और दुसवारि मे घबरा कर हार नहि माननि चाहिए बल्कि सब्र व हिम्मत, मेहनत व लगन से अपने काम मे लगे रहना चाहिए, और अपने तमाम मोआमलात मे अल्लाह हि से मदद तलब करनि चाहिए और उसि पर भरोसा करना चाहिए ।

विधार्थीः जब ताएफ वालोँ ने आपकि दावत को ठुकराया तो आपका रद्देअमल क्या था ?

शिक्षकः उन्होँ ने आपकि दावत को ठुकरानेपर हि बस नहि किया बल्कि अपने यहाँ के बदमाशोँ को उक्साया कि आप पर पत्थर चलाएँ, आपको गालियँ देँ और शोर मचाएँ । देखते देखते लोगोँ कि भिड जमा हो गई । बदमाशोँ ने यह सिलसिला जारि रखा यहाँ तक कि आप एक चारदिवारि के अन्दर शरण लेने पर मजबुर हो गए जिस के अन्दर एक बागिचा था, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने यहाँ शरण ले लि तो बदमाशो कि भिड वापस चलि गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंगूर के बेल के निचे बैठ गए ।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम यह तो बहोत हि दर्दनाक बात है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह के हादसे से दोचार हुवे ।

शिक्षकः हाँ यह एक नेहयत हि दर्दनाक हादसा है । देकिन दिन इस्लाम हमसे अल्लाह तआला कि एताअत और हर तरह कि मुश्किलात पर सब्र करने का तकाजा करता है ।

[1] साबिक हवाला

हमे नमाज अदा करने पर सब्र करनि चाहिए और सुस्ति व गफ्लत से नमाज नहि छोडनि चाहिए, सच्चाइ का साच देने मे सब्र करना चाहिए और झुठ नहि बोलना चाहिए, दिने इसलाम कि तालिमात सिखने मे भि सब्र से काम लेना चाहिए, कुरआने करिम और अहादिसे नबवि को सब्र व तहम्मुल के साथ याद करना चाहिए, वालदैन कि फरमाबरदारि और दिगर अहकामे रब्बानि के करने मे सब्र का दामन थामे रहना चाहिए, जिन्दगि मे पेशआने वाले मुश्किलातका सामना करते हुवे सब्रो जांफेशानि को लाजिम पकडना चाहिए और पुरि लगन व मेहनत से अपने काम मे लगे रहना चाहए।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! आपने बिल्कुल सहि फरमाया। जब हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर गम को झेला और तमाम तक्लिफैँ बरदाश्त किँ तो हमारे उपर भि वाजिब होता है कि हम अल्लाह तआला के आदेश के पालन मे सब्र से काम लें।

शिक्षकः बिल्कुल सहि, जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंगूर के बेलके साए मे बैठ गए जो कि उतबा बिन रबिया और शैबा बिन रबिया कि मिल्कियत थि और आपको थोडि राहत हुवि तो आप दुवा करने मे मसरूफ हो गए, इस दुवा के यह वाक्य हैः

अनुवादः ए मेरे परवरदिगार मै तुझ से हि अपनि कमजोरि और बे-बसि और लोगोँ के नजदिक अपनि बे कदरि का शिकवा करता हुँ। ए दया करने वाले तु हि कमजोरोँ का रब है और तुहि मेर पालनहार है[1]।

अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपने रब के सामने किए गए शिकवा मे हमें गौर करनेकि जरूरत है, आपने रबसे अमनि कमजोरि और बे बसिका शिकवा किया और इल्तेजा किया कि ए दयालु व कृपालु पालनहार तु हि कमजोरोँ का रब है और तु हि मेरा भि रब है।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! हमे इस से एक अच्छा दर्स मिलता है कि जब भि हमे मुश्किलात का सामना हो या हमें किसि चाज कि जरूरत हो तो हम अल्लाह तआला हि कि तरफ रूजु करेँ और उसि से अपनि हाजत तलब करेँ जैसा कि हमारे रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया था।

शिक्षकः बहोत खुब मेरे प्यारे बच्चो ! यकिनन् दुवा एक अजिम इबादत है, हमे अपनि तमाम जरूरते अल्लाह हि से तलब करनि चाहिए।

विधार्थीः उसके बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस बागिचे मे क्या किया ?

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंगूर कि बेल के साए मे बैठे तो उतबा बिन रबिया और उके भाई शैबा ने अपने गुलाम अदास से कहा जो कि नसरानि था कि अंगूर का एक खोशा इस प्लेट मे रखकर उस शख्स को कदे दे।

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/62)

अदास ने अंगूर का एक झोंपा तोडा और उसे प्लेट मे रखकर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे पेश कर दिया और कहा कि खाओ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्लेट कि तरफ हाथ बढाते हुवे बिस्मिल्लाह पढा, इसपर अदास बोल पडा कि यह जुमला तो इस इलाके के लोग नहि बोलते। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरयाफ्त किया किः तुम किस मुल्क के रहने वाले हो अदाब ! और तुम्हार धर्म क्या है ? अदास ने जवाब दिया कि मै नसरानि हुँ और नैनवा का रहने वाला हुँ। अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा किः नेक व परहेजगार इन्सान युनुस बिन मत्ति कि बस्ति नैनवा ? उस पर अदास चौंक कर बोलाः आपको युनुस बिन मत्ति के बारे मे कैसे पता ? अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि वह मेरे भाइ थे, वह भि अल्लाह के नबि थे और मै भि अल्लाह का नबि हुँ। यह सुनते हि अदास अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का माथा और हाथ पाँव चुमने लागा।

यह देखकर रबिया के दोनोँ बेटोँ ने कहा किः लो अब इस शख्स ने हमारे गुलाम को बिगाड दिया। उसके बाद जब अदास वापस गया तो दोनो ने उस से कहा किः बरखुरदार ! यह क्या मामला था ? उस आदमि के सर और हाथ पाँव क्यो चुम रहे थे ? उस ने कहा कि मेरे आका रूए जमिन पर इस शख्स से बेहतर कोइ नहि। उसने मुझे एक ऐक एसि बात बताइ है जिसे नबि के सिवा कोइ नहि जानता।

उन दोनो ने कहाकिः देखो अदास कहिँ यह शख्स तुम्हे तुम्हारे धर्मसे फेर ना दे क्योँकि तुम्हारा धर्म उसके धर्मसे बेहतर है[1]।

विधार्थीः उन्होंने किस बुनियाद मर अदास से यह कहाकि तुम्हारा धर्म उसके धर्म से बेहतर है ?

शिक्षकः क्यों कि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैगाम से नावाकिफ थे और बिना जाने बुझे हि बोल रहे थे।

उस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गम व अलम से निढाल अपने रास्ते चल पडे। आपका बयान है कि मुझे कर्ने सआलब पहोँचने बाद राहत हुइ। कर्ने सआलाब ताएफ और मक्का के बिच एक वादि का नाम है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैँ किः वहाँ मैने सर उठाया तो देखता हुँ कि बादल का एक टुकडा मुझ पर साया किए हुए है। मैने बगौर देखा तो उसमे जिब्रईल अलैहिस्सलाम थे, उन्होंने मुझे पुकार कर कहा किः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि कौमने आपसे जो बात कहि अल्लाह ने उसे सुन लिया है। अब उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहाडों का एक फरिश्ता भेजा है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों के बारे मे जो चाहें उस फरिश्तेको आदेश देँ। उसके बाद पहाडोँके फरिश्ते ने मुझे आवाज दि और सलाम करने के बाद कहाः ए मोहम्मद

---

[1] साबिक हवाला

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब आप जो चाहें वहि, अगर आप चाहें कि मै उन्हें दो पहाडों के दरमेयान रखकर कुचल दुँ तो ऐसा हि होगा.....[1] ।

आप लोगों के हिसाब से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लगोँ के बारे मे क्या फैसला लिया होगा जिन लोगों ने आपको मारा पिटा ? क्या आपने यह कहा होगा किः हाँ उन्हें दो पहाडों के बिच (अख्शबान) मे रखकर पिस दिया जाए। अख्शबान हरमे मक्कि के करिब मक्का मे दो पहाड हैं। या आपने उन्हे माफ कर दिया होगा और उनके रवैय्ये पर सब्र करते हुवे उनके इस्लाम लाने कि कोशिस जारि रखि होगि ?

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरिश्ता से कहाः नहि, बल्कि मुझे उम्मिद है कि अल्लाह तआला उनके पुश्त से एसि नसल पैदा करेगा जो सिर्फ एक अल्लाह कि इबादत करेङ्गे और उसके साथ किसि को शरिक नहि करेङ्गे[2] ।

यानकि आपने फरिश्ते से कहा कि उनको पहाडों के बिच ना कुचला जाए बल्कि उन्हो मोहलत दिया जाए, हो सकता है कि अल्लाह तआला उनकि नसल से तौहिद वालों को पैदा करे। इस लिए कि अगर अल्लाह तआला उन्हे हलाक कर देता तो वह सब के सब मिट जाते और उनकि नसल तक बाकि ना रहति, लेकिन हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि जात के लिए इन्तेकाम लेने कि बात ना सोँचि, बल्कि आपको हमेशा यह फिक्र लाहिक होति थि कि लोग इस्लाम मे होकर जहन्नम से बच जाएँ।

आपको याद होगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने रबसे दुवा कि थि जिसे अल्लाह तआला ने फौरन कुबुल कर लिया था और जिब्रईलको आपके पास भेजा था।

विधार्थीः यकिनन् यह एक बडा अहेम और अजिम हादसा था।

शिक्षकः ताएफ से लौटते हुवे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नखला नामि जगह पर पडाव डाला और आधि रातको कयामुल्लैल के लिए खडे हो गए, उसि दौरान आपके पास से जिन्नों के एक गिरोह का गुजर हुवा जिन्होँ ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाजमे कुरआन कि तेलावत करते हुवे सुना और इमान ले आए, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज से फारिग हुवे तो जिन्नों कि यह जमाअत अपनि कौम के पास अजाबे एलाहि से डराने वाले बनकर लौटे। अल्लाह तआला फरमाता हैः

अनुवादःऔर जब हमने जिन्नों कि एक जमात को तुम्हारि तरफ फेर दिया कि वे कुरआन सुनें, तो जब वे नबि के पास पहोँचे तो एक दुसरे से कहने लगेकि चुप हो जाओ फिर जब पाठ पुरा हो गया तो अपने समुदाय को सावधान करने के लिए वापस लौट गए। (सुरतुल अहकाफः 29)

---

[1] बुखारिः(2/428-429) हदिस नः(3231)

[2] साबिक हवाला

गौर करनेकि बात है कि जब आपकि कौम ने आपकि राह मे रूकावट डालि और आपकि दावत को ठुकरा दिया तो किस तरह अल्लाह तआला ने जिन्नोँ को आपकि तेलावत सुनने के लिए फेर दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि रेसालत पर इमान ले आए।

विधार्थीः यकिनन् यह सब दिने एलाहि कि हि खातिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जांनेसारि और कुरबानि थि। लेकिन अल्लाह तआला ने हमेशा नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनि मदद से सरफराज किया।

इस्रा व मेअराजः

शिक्षकः ताएफ, जहाँ के सरदारोँ ने इस्लाम कुबुल करने से इन्कार किया और अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बदतमिजि और बद सुलुकि किया, वहाँ से वापस आने के बाद इस्रा व मेअराज का वाकया पेश आया।

विधार्थीः माजेरत के साथ उस्तादे मोहतरम, इस्रा और मेअराज के माना क्या होते हैँ?

शिक्षकः इस्रा शब्द यस्रि से बना है जिस के माना होते हैँ रात के वक्त सफर करना। रहि बात मेअराज कि तो यह कलेमा उरूज से बना है जिसका माना बुलन्हि कि तरफ चढने के होते हैं। इसका मतलब है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो वाकयात पेश आए। एक इस्राः और वह है रात के वक्त मक्का से बैतुल मोकद्दस का सफर, जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमायाः

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَه لِنُرِيَه مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّه هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

अनुवादः पाक है वह अल्लाह जो अपने बन्दे को रातोँ रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक ले गया, जिस के आसपास हम ने बरकतें अता कर रखि हैँ, इस लिए कि हम उसे अपने कुदरत के कुछ जलवे दाखाएँ। बेशक अल्लाह खूब सुनने देखने वाला है।(सुरतुल इस्राः1)

दुसरि चिज जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पेश आया है वह यह है कि आपको आसमान के सफर पर ले जाया गया जिसे मेराज कहते हैँ।

विधार्थिः इसका मतलब है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दोनो हि वाकया पेश आयाः पहला तो रातोँ रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा का सफर, दुसरा जमीन से आसमान का सफर।

लेकन यह कैसे हो सकता है उस्तादे मोहतरम ! आप जरा इस वाकए कि तफसिल हमें बताएं।

शिक्षकः अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु से मरवि है किः (रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मेरे सामने बुर्राक लाया गया, यह सफेद और लम्बे कद कि सवारि थि जो गधे से बडि और

खच्चर से छोटि थि[1] । हदिसके इस टुकडे से पता चलता है कि जिस सवारि पर आप सवार हुवे उसका नाम बुर्राक है, उसका रङ्ग सफेद था, उसका कद लम्बा था, वह गधे से बडा और घोडे जैसा दिखने वाला जानवर खच्चर से छोटा था ।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुर्राक कि सिफत बयान करते हुवे फरमाया किः वह इतना तेज चलता कि जब अपना (खुर) कदम बढाता तो आखरि हद्दे निगाह पर हि कदम रखता[2] । खुर घोडे के पाँव के आखरि सिरे को कहते हैँ जिसे घोडा चलते हुवे जमिनपर रखता है । इसका मतलब है कि वह निहायत तेजि से बर्क रफतारि से चलता, जब अपना पाँव जमिन से उठाता तो अपनि तेज रफ्तारि कि वजह से अपनि आखरि हद्दे निगाह पर हि उसे जमिन पर रखता । फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मै उसपर सवार हो कर बैतुल मोकद्दस पहोँचा, आपका बयान है किः बुर्राक को मस्जिद के दरवाजे के हलके से बाँध दिया जहाँ अन्बियाए केराम बाँधा करते थे, यानि उसे उस हलके से बाँधा जिस से अन्बियाए केराम अपनि सवारियाँ बाँधा करते थे । आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बयान है किः फिर मै मस्जिद मे दाखिल होकर दो रकात नमाज अदा कि उसके बाद उसि रात आपको हजरत जिब्रईल आसमाने दुनिया तक ले गए ।

विधार्थीः यह एक दिलचस्म वाकया था, है ना उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः यकिनन् यह एक दिलचस्प सफर था, अल्लाह तआलाके फज्लो कम से जिस के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्तहिक थे । क्योँ कि आपके कौम ने आपका मजाक उडाते हुवे कहा था कि आप जादुगर हैं, पागल हैं, ज्योतिष हैं और मुश्रिकों ने आपके जिस्मे मोबारक पर उँट का लिद फेंका था ।

तरह तरह कि तक्लिफें पहाँचाइ थि, मुसलमानोँ को हबशा हिज्रत करनेपर मजबुर किर दिया था । आपने शेअबे अबि तलिब मे नजरबन्दि झेलि थि उसके बाद आपके चचा अबु तलिब का देहन्त हो गया था, प्यारि पत्नि खदिजा का स्वर्गवास हो गया, और आपने ताएफ वालोँ से बेरुखि और बदतमिजिका सामना किया था । इन तमाम मुश्किलात, आजमाइशोँ और सितम रानियोँ का सामना करनेके बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह ने अपने इकराम व इन्आम से नवाजते हुवे अजिमुश्शान सफर (इस्रा व मेअराज) से सरफराज किया ।

विधार्थीः शायद आप हमे मेअराज व इस्रा के सफर कि तफ्सिल भि बताने वाले हैं उस्तादे गेरामि ?

शिक्षकः अल्लाह तआला ने हमे यह खबर दि है कि आसमान सात है । अल्लाह तआला फरमाता हैः

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ

अनुवादःतो सात आसमान बना दिए । (सुरह फुस्सिलतः 12)

---

[1] मुस्लिमः(1/145) हदिस नः(162-259)

[2] साबिक हवाला

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको पहले आसमाने दुनिया पर ले जाया गया, हजरत जिब्रइल अलैहिस्सलाम ने आसमान के निगहबान (फरिश्ते) से कहाः दरवाजा खोलो। फरिश्ते ने कहाः आप कौन है ? उन्होँने कहा मै जिब्रइल हुँ।

फरिश्ते ने कहाः क्या आपके साथ और भि कोइ है ? जिब्रइल ने कहाः हाँ मेरे साथ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। फरिश्ते ने कहाः क्या उन्हे बुलाया गया है ? जिब्रइल ने कहा हाँ। जब दरवाजा खोला गया तो हम आसमाने दुनिया पर चढे, हमने वहाँ हजरत आदम अलैहिस्सलामको देखा[1]। हजरत आदम अलैहिस्सलाम सारे इन्सानो के बाप हैं, इस लिए कि अल्लाह तआला ने हजरत हौव्वा को उनकि बिवि बनाया और उनसे आदम अलैहिस्सलाम कि सन्तान का सिलसिला चल निकला और नसल बढि, इस लिए पुरे इन्सानियत का सिलसिलए नसब हजरत अदम अलैहिस्सलाम से जा मिलता है।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! कया हर आसमान पर निगहबान फरिश्ते मोकर्रर हैं ?

शिक्षकः अल्लाह तआला ने उस जहाँको बहोत खुबसुरत और मोनज्जम बनाया है जिसकि एक शक्ल यह भि है कि हर आसमानपर कुछ फरिश्ते मोकर्रर कर रखे हैं जो उसकि हिफाजतपर मामुर हैँ। यकिनन अल्लाह तआला हिकमत व अज्मत वाला है।

विधार्थीः उस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहाँ तशरिफ ले गए ?

शिक्षकः फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको दुसरे आसमान पर ले जाया गया। दुसरे आसमान के फरिश्ते ने भि हजरत जिब्रइल से वहि बात कहि जो पहले आसमान के निगहबान ने कहि थि। हजरत जिब्रइल ने उन्हे बताया कि आपके साथ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैँ और उन्हे बुलाया गया है। मेराज के इस सफर मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि हजरत आदम, इद्रिस, मुसा, इसा और इब्राहिम अलैहिमुस्सलाम से मुलाकात हुइ[2]।

अल्लाह तआला ने हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकि उम्मत पर इसि सफर मे पाँच वक्त कि नमाजें फर्ज कि, इस से पता चलता है कि इन पन्ज-वक्ता नमाजोँ कि क्या अहमियत है जिन्हे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आसमान मे फर्ज करार दिया गया।

इस सफर मे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नत को देखा और उस मे दाखिल हुए।

इस सफर से मालुम होता है कि अल्लाह तआला के नजदिक नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कितना बुलन्द मरतबा है कि आपने बैतुल मोकद्दसमे नमाज पढि, आसमानके सफर पर गए, अम्बियाए केराम का दिदार किया, जन्नतको देखा और उसमे दाखिल हुवे और उसि अजिमुश्शान सफरमे आप पर नमाजेँ फर्ज कि गइँ।

---

[1] बुखारिः(1-132) हदिस नः(349)

[2] साबिक हवाला

आप गौर करेँ कि अल्लाह तआला ने अपने उस नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किस तरह बेहतरिन बदला और इनआमत से नवजा जिन्होँ ने अजियतोँ पर सब्र किया, अल्लाह तआला कि फरमाबरदारि कि, बेहतरिन अख्लाक का मोजाहेरा किया और अपने कौम कि बदतमिजियोँ को बरदाश्त किया। इसि तरह अगर हम भि अल्लाह तआला कि एताअत करेँ, उसके आदेशोँ कि पालना करेँ, तो हमेंभि दुनिया व आखिरत कि भलाइयाँ नसिब होँगि, हम तौफिके एलाहिसे नवाजे जाएङ्गे और हर तरहसे हमपर बरकतोँ कि बारिश होगि। गोयाकि अल्लाह तआला कि फरमाबरदारि पर काएम रहना हमिरि जिन्दगि मे बहोत हि अहमियत रखता है[1]।

बिभिन्न कबिलों को इस्लाम कि दावतः

शिक्षकः ताएफ वालोँ ने आपके साथ जो सुलुक किया उस से रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मायुस नहि हुवे, बल्कि आपने हज्ज के लिए मक्का आने वाले कबाएल के दरमेयान और अरब के बाजारोँ मे जा जा कर इस्लामकि दावत देना शुरू कर दिया।

विधार्थीः क्या उस जमाने मे भि अरब के अन्दर बडे बडे बाजार हुवा करते थे ?

शिक्षकः हाँ अरब मे बहोत बडे बडे बाजार थे, जहाँ मक्का और मक्का के बाहरसे ताजिरोँ कि आमद होति थि, कोइ सामान बेचने तो कोइ खरिदने आता, और उनमे से कुछ लोग खरिद व फरोख्त दोनोँ काम करते। ओकाज,

जिल्मजाज, और मज्ना अरबोँ के मशहूर तरिन बाजार थे, कुछ शाएर लोग उन बाजारोँ मे आकर अपनि शायरि सुनाते तो लोग उनकि शायरि सुन कर अपने कबिले जाके वह सुनाते थे।

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन कबाएल को कैसे इस्लाम कि दावत देते थे ?

शिक्षकः अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसि कबिले पस जाते और फरमातेः ए बनु फलाँ!

मै तुम्हारि तरफ भेजा हुवा अल्लाह का रसुल हुँ, मै तुम्हे हुक्म देता हुँ कि एक अल्लाह कि इबादत करो और उस के साथ किसि को शरिक ना करो, जब तक तुम मेरि बात नहि मानोगे तब तक मै तुम्हेँ अल्लाह का पैगाम पहोँचाता रहुँगा[2]।

आप उनसे यह भि कहते किः ए लोगोँ ला इलाह इल्लल्लाह कहो कामयाब हो जाओगे[3]।

---

[1] उसताद इस मोकापर एताअते इलाहि के फवाएद और उसपर मिलने वाले सवाब के बारे मे मजिद तफ्सिल से बताएँ और वालेदैन कि फरमाबरदारि, इबादत, खौफ व रजा, अच्छे अखलाक और बुरे अखलाक के बारे मे मिसालोँ के जरिए वेजाहत कर सकते हैँ।

[2] अहमद, अलमुस्नदः(3/492)

[3] अहमद, अलमुस्नदः(3/492)

आप उनसे यह भि फरमाते किः कौन है जो मुझे शरण दे ताकि मै अपने रबका पैगाम लोगोँ तक पहोँचा दुँ, उसे इस के बदले मे जन्नत मिलेगा[1] ।

आप गौर करेँ कि रबिया बिन ओबाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस सुरते हालको किस तरह बयान करते हैँ, वह कहते हैँ किः मैने जिलमजाज (बाजार) मे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि आप लोगोँ को दीने इलाहि कि दावत दे रहे हैँ और आपके पिछे एक भेँड्गा शख्स यह चिल्लाता हुवा चल रहा है कि यह शख्स तुम्हे तुम्हारे माबुदोँ से फेर ना दे, मैने कहा यह कौन आदमि है ? लोगोँ ने बतायाः यह उनका चचा अबु लहब है[2] ।

इस से पता चलाता है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगोके पास जाते और उन्हे बताते कि वह अल्लाह के नबि हैं और अल्लाह तआला ने उन्हेँ रसुल बना के भेजा है। आपका चचा आपके पिछे पडा रहता और लोगोँ को आप से मोतनफ्फिर करने के लिए कहता किः यह तुम्हे अमने मुर्तिपुजक धर्म से भटका ना दे, अबुलहब भेड्गापनका शिकार था यानि उसकि एक आँख तिरछि थि जिस कि वजह से वह देखता कहिँ था और उसकि आँख कहिँ और नजर आति।

विधार्थीः इसका मतलब है कि आपका चचा अबुलहब दावतकि राह मे आपको तक्लिफ पहोँचाता था ?

शिक्षकः हाँ, आपके चचा और दुसरे लोग भि दावति काम मे आपको अजियत देते और लोगोँ से कहते कि इसकि बातें न मानना।

विधार्थीः जब मुश्रिकिन आपको इस तरह तंग करते और आपको तक्लिफ पहोँचाते तो आप उनके साथ किस तरह पेश अते थे ?

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इमान बहोत पोख्ता था, आप अपने दावति मिशन मे हिम्मत व हौसले के साथ लगे हुवे थे, उन मुश्किलात से आप बिल्कुल नहि घबराते बल्कि उन्हे नजरअन्दाज करके अपने मिशन मे लगे रहते, एक कबिले के बाद दुसरे कबिले तशरिफ ले जाते और बदसलुकि करने वाले कि तरफ ध्यान न देते। हमे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि पैरवि करते हुवे यहि रवैय्या अपनाना चाहिए और जो हमारे साथ बद अखलाकि से पेश आए उस से झगडा लडाइ मे अपना वक्त बरबाद करने के बजाए उन्हे नजर अन्दाज करते रहना चाहिए।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! यह बहोत अच्छा रहेगा कि जो हमे अच्छे काम और मेहनतो लगन से रोकें हम उनकि तरफ बिल्कुल भि ध्यान ना दें, अपने मिशनको तर्क ना करें, बल्कि उन्हे उनके हालपर छोडकर हमें खैर के कामोँ मे आगे बढते रहना चाहिए।

---

[1] अहमद, अलमुस्नदः (3/323-324)

[2] अहमद, अलमुस्नदः(3/492)

शिक्षकः हमें भलाइके कामोँको जारि रखना चाहिए क्योंकि हम जानते हैं कि कुछलोग एसे होते हैं जिन्हेँ दुसरोँ कि भलाइ पसन्द नहि होति। बल्कि उन्हे बदअखलाकि और बदतमिजि हि ज्यादा महबुब होति है। हमे उनपर ध्यान नहि देना चाहिए, बल्कि हमे बेहतरिन व्यवहार का मोजाहेरा करना चाहिए जैसा कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरिका था कि आप अपनि दावतको तर्क करने के बजाए उनलोगोँ से एराज बरतने मे हि आफियत समझते जो आपकि दावति मिशन को नाकाम बनाने मे लगे हुवे थे।

विधार्थीः क्या हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावतको किसि ने कुबुल भि किया ?

शिक्षकः जैसाकि आप जान चुके है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दावतके कामको कभि नहि छोडा बल्कि एक के बाद दुसरे कबिले और एक शख्स के बाद दुसरे शख्स के पास जाकर इस्लाम कि दावत देते, उन्हि मे एक काफला मदिला मुनौव्वरहका भि था, जिनका नाम बाद मे अन्सार पडा, इस लिए कि उन्होने रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मदद की। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मुलाकात स्वैद बिन अस्सामित से हुवि जो मदिना मुनौव्वरह से हज्ज के लिए मक्का आए थे, आपने उन्हे इस्लामकि दावत दि, स्वैद ने कहाः यह तो अच्छि और भलि बात है। इसके बाद स्वैद मदिना आ गए मगर उनका कत्ल हो गया[1]।

विधार्थीः क्या वह मुसलमान थे ?

शिक्षकः उनके कौम के लोग कहते थे कि हम समझते हैँ कि उनका कत्ल हालते इस्लाम पर हुवा है[2]। इस वाकया के बाद कबिला औसका एक वफ्द मक्का आया, यहलोग खानदान बनु अस्हल से थे, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकि आमद कि खबर हुइ, आप उनके पास तशरिफ लाए और उन्हेँ इस्लाम कि दावत दि और कुरआन पढकर सुनाया[3]।

विधार्थीः क्या उन्होँने इस्लाम कुबुल कर लिया ?

शिक्षकः बयान किया जाता है कि मदिना मे कबिला औस व खजरज मे जंग छिड गई थि जिसमे अयास बिन मोआज कत्ल कर दिए गए, उनके कौमके लोगोँने उन्हेँ ला इलाह इल्लल्लाह[4] अल्लाहु अक्बर, अल्हम्दुलिल्लाह और सुब्हानल्लाह पढते हुवे सुना यहाँ तक कि उनकि जान निकल गई। इस से पता चलता है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दावत मदिना के अन्दर थोडि बहोत मशहुर होने लगि थि। उसके बाद मदिना वालोँ के साथ बैअते उक्बा उला और बैअते उक्बा सानिया के वाकयात पेश आए जिनकि तफ्सिल आइन्दा सफहात मे आएगि इल्शा अल्लाह।

---

[1] इब्ने हेशाम अस्सिरतुन नबवियाः(2/67-69)

[2] साबिक हवाला

[3] साबिक हवालाः(2/69)

[4] साबिक हवाला

पहलि बैअते उकबाः

शिक्षकः जिस साल नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदिना के लोगोंसे मुलाकात कि थि उसके अगले हि साल सनः 12 नबवि मे कबिला औस और खजरज के बारह लोग मक्का आए और उक्बा के पास नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनकि मुलाकात हुइ। उक्बा पहाडके मुश्किल रास्तेको कहते हैं, इस लिए उस बैअतका नाम भि उक्बा हि पड गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इस्लामकि दावत दि, हजरत ओबादा बिन सामित रजियल्लाहु अन्हु उस जमात कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाकात का हाल बयान करते हुवे कहते हैं किः (हम नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक मजलिस मे थे, आपने फरमायाः आपलोग मुझ से इस बात पर बैअत करें कि अल्लाह तआला के साथ किसि को शरीक नहि करेंगे, जेना, चोरि और नाहक खुनखराबा से दूर रहेंगे। आपमे से जो इन शर्तों को पुरा करेगा उसे अल्लाह तआला बेहतरिन बदला देगा और जो इनमे से किसिका इरतकाब करेगा तो उसे सजासे दोचार होना पडेगा और यह सजा उसके लिए कफ्फारह होगा। और जो शख्स इनमे से किसि का इर्तेकाब करे और अल्लाह तआला उसके मामलेको छुपा दे तो उसका मामला अल्लाहके हवाले है, वह चाहेतो माफ करदे या चाहेतो सजा दे[1]।

विधार्थीः सुब्हानल्लाहिल अजिम ! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस जमातको बहोत हि बेहतरिन और शरिफाना आअमाल कि तालिम दि, उन आअमाल के अन्दर किसि तरह कि कोइ मोशक्कत और परेशानि नहि है।

शिक्षकः बहोत खुब मेरे प्यारे बच्चो ! हमारा धर्म हि अच्छे व्यवहार का धर्म है, इस कि तालिमात मे कोइ दिक्कत और मोशक्कत नहि है। इस्लाम एक आसान धर्म है, उसका हर एक आदेश खुबसुरत और उम्दा है, वह लोगोँको बेहतरिन व्यवहारकि तालिम देता है, उन्हे मोहब्बत व नरमि सिखाता है, कत्लो खुँरेजि व चोरि डकेति से रोकता है ताकि लोग अम्नो शान्ति और इत्मिनान व सुकून कि जिन्दगि गुजार सकेँ।

विधार्थीः क्या यह जमात वापस मदिना चलि गई ?

शिक्षकः हाँ यह लोग मदिना लौट गए, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके साथ मुसअब बिन उमैर रजियल्लाहु अन्हु को भि भेजा और यह आदेश दियाकि वह उन्हेँ इस्लाम कि तालिम देँ, हजरत मुसअब बिन उमैर रजियल्लाहु अन्हु उनकि इमामत किया करते थे[2]।

विधार्थीः यह बडि अच्छि बात और अल्लाह का एहसान है कि मदिना के लोगोंने आपकि दावतको कुबुल किय।

---

[1] मुस्लिमः(3/1333) हदिस नः1709

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/76-77)

शिक्षकः हाँ मेरे बच्चोँ ! यह अल्लाह का एहसान हि है। आप गौर करेँकि किस तरह धिरे धिरे आसानि पैदा होति गई यहा तक कि सहाबा के जरिए मदिना मे इस्लाम फैलने लगा और एसा भि वक्त आया कि अन्सारे मदिनाका कोइ एसा घर न था जिसमे इस्लाम के मानने वाले ना होँ जो खुल्लम खुल्ला इस्लाम कि पैरवि करते होँ। इसका मलब है कि हर घर मे तीन से ज्याद और दस से कम अफराद ऐसे जरूर थे जो मुसलमान थे।

दुसरि बैअते उकबाः

शिक्षकः सन् 13 नबवि को हज्ज के मोसम मे दुसरि बैअते उक्बा हुइ, मक्का आने से पहले अन्सारे मदिना आपस मे जमा हुवे और यह बात कि केः कब तक हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको मक्काके अन्दर डरे सहमे, दर दर कि ठोकर खाते हुवे देखते रहेङ्गे ? उनमे से 70 लोग मक्का कि तरफ निकल पडे, मोसमे हज्ज मे मक्का पहोँचे, उक्बा मे मुलाकात करने का फैसला लिया और एक एक, दो दो कर के उक्बा मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हुवे।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! वह लोग एक एक, दो दो कर के क्योँ आए, वह एक साथ भि तो जमा हो सकते थे ?

शिक्षकः यह एक महत्वपुर्ण प्रस्न है मेरे बच्चो ! माशा अल्लाह हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकि जिवनीको आप बहोत गौरसे सुनते हैँ। वह एक एक दो दो कर के इस लिए उक्बा मे जमा हो रहे थे ताकि कोरैश को उस इज्तेमा कि भनक ना लगे, अगर वह एक साथ आते तो कोरैश को पता चल जाता और उन्हेँ आप से नहि मिलने देते। अब आपको उसकि हिक्मत समझ आइ ?

विधार्थीः तब तो उन्हों ने बेहतर किया, इस का मतलब है कि हमें भि अपने हर काम हिक्मत से करना चाहिए।

शिक्षकः यकिनन् यह हमारि जिम्मेदारि है कि हम हिक्मत से काम लिया करेँ और कोइ भि काम करनेसे पहले उसके बारे मे खुब सोच-विचार कर लिया करें, ताकि हम जिन्दगि मे कामयाब हो सकें, साथ हि साथ हमे मदद व एआनत सिर्फ अल्लाह से हि तलब करनि चाहिए क्योँ कि तौफिक सिर्फ और सिर्फ अल्लाह के हाथ मे है।

विधार्थीः इस इज्तेमा मे क्या पेश आया ?

शिक्षकः अन्सारे मदिना ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल से कहा किः हम किस चिज पर आप से बैअत करें ?

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः आप मुझ से इस बात पर बैअत करें कि आप तन्द्रुस्ति व सुस्ति हर हाल मे बात सुनेंगे और फरमाबरदारि करेंगे, तंगि व खुशहालि दोनों मे खर्च करेंगे, भलाइ का हुक्म देंगे और बुराइ से रोकेंगे। अल्लाह तआला कि राह मे सच बोलने मे किसि मलामत करने वाले कि

मलामत कि परवाह नहि करेंगे, मेरि मदद करेंगे और अगर हम आपके पास आएं तो आप उन चिजोंसे मेरि भि हिफाजत करेंगे जिन से अपनि, अपने बाल-बच्चों कि हिफाजत करते हैं, उसके बदले अल्लाह तआला आप लोगोंको जन्नतसे नवाजेगा[1]। जमातके सारेलोग खडे हो गए और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत किया। यानि कि उन्होंने आपकि बात पर हामि भरि।

विधार्थीः गोया बैअत लेनेका मतलब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकि मददका वादा लेना होता है ?

शिक्षकः हाँ, इस बैअत का मतलब यहि था कि अन्सार नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको बतौरे नबि और इस्लामको बतौरे मजहब अपना लिया है अब वह आपके साथ हैं। और यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास जाने वाले हैँ यानि मदिना हिजरत करने वाले हैँ जहाँ आपके मानने और मदद करने वाले लोग हैँ। आप गौर करेँ कि किस तरह तेरह साल कि लम्बि मुद्दत तक लगातार कोशिस और तक्लिफोँ पर सब्र के नतिजे मे अल्लाह तआला ने आपको अपनि तौफिक से सरफराज किया। मुसलमानोँ को इसि तरह अल्लाह तआला कि एताअत व बन्दगि पर सब्र से काम लेना चाहए, जिस तरह अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लम्बि मुद्दत तक सब्र करते रहे जिसके अन्जाम मे आपको इस महत्वपुर्ण बैअत से नवाजा गया।

---

[1] अहमद, अलमुस्नदः(3/322-324)

तिसरा अध्याय
मदिना कि तरफ हिजरत

मदिना के तरफ प्रस्थानः

शिक्षकः हिज्रतका मतलब सिर्फ यह नहि था कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरादा बना, आप सवारि तैयार करें और मदिना कि तरफ निकल जाएँ, बल्कि हिजरत कि कुछ पृष्ठभुमि भि थि, उसके लिए गौरो फिक्र और मन्सुबा-बन्दि कि गई ताकि मुम्किना खतरात से बचा जा सके, हिजरत के इस यात्रामे कुछ हादसे और वाकयात भि पेश आए जिन से हम बिभिन्न क्षेत्र मे पाठ हासिल करके बडे बडे फअएदे हासिल कर सकते हैं, जैसा कि हिज्रत कि इब्तेदाइ कोशिसो और उसके बिभिन्न दरजा से यह बात प्रश्ट हो जाएगि, आइये हम प्रस्थान के शुरुवाति कोशिसो के बारे मे बात करते हैँ।

प्रस्थान कि पृष्टभुमिः

शिक्षकः मक्का मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा केराम ने मुश्किल भरि आजमाइशोँ वालि जिन्दगि गुजारि थे, उसके बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ख्वाब देखा और अम्बियाए केराम के ख्वाब सच हुवा करते हैँ। आपने अपने सहाबासे कहा किः (मैने ख्वाब देखा है कि मै मक्का से एक ऐसि जमिन कि तरफ हिज्रत कर रहा हुँ जहाँ खुजुर के बागिचे बहोत पाए जाते हैँ, मुझे लगा वह यमामा या हिज्र का मकाम है, लेकिन पता चलाकि उससे मुराद मदिना मुनव्वरह है जिसे यसरिब कहा जाता है[1]) ।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! कुछ बातेँ हमे समझ नहि आइ।

शिक्षकः ठिक है ! हम उसको विस्तारसे आपको बताते हैँ इन्शा-अल्लाह।

मदिना उस जमाने मे खुजुरोँ के बागिचोँ कि वजह से प्रसिद्ध था और अब भि है, इसि तरह नज्द मे यमामा और हिज्र जिसे अहसा कहते हैँ, वह भि खुजुरोँ के बागिचोँ कि वजह से जाने जाते थे। मदिनाको उस समय यसरिब कहा जाता था।

चुंकि यह तिनो जगहें खुजुर के बागात कि वजह से प्रसिद्ध है, इस लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लगा कि आपको ख्वाबमे जो जगह दिखाइ गई है उससे मुराद यमामा या हिज्र (अहसा) है। लेकिन वास्तव मे उससे मुराद मदिना था जिसकि पृष्टभुमि के तौर पर अल्लाह तआला कि तौफिक से वहाँके लोगोँ से आपकि मुलाकात और पहलि व दुसरि बैअते उक्बा हुवि थि।

विधार्थीः क्या तमाम मुसलमानोँ ने एकसाथ हिजरत कि या उन्होँ ने अलत अलग हिजरत कि ताकि कोरैश को उसकि खबर ना लगे, जैसा कि दुसरे बैअते उक्बा मे अन्सार सहाबा नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमसे मुलाकात के लिए एक एक, दो दो कर के उक्बा मे जमा हुवे थे।

---

[1] बोखारिः(3/66) अध्याय हिज्रतुन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अस्हाबिहि इला अल-मदिना

शिक्षकः मेरे प्यारे बच्चो ! आपने बहोत बारिकि से समझा, इस से पता चलता है कि आपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिवन के वाकयात से पाठ सिखा है और कुछ ऐसि फाएदेमन्ब बातें भि सिखिं है जिस से आप को तजरबा हासिल हुवा है।

कुछ सहाबा ने अकेले तो कुछ ने जमात कि शक्ल मे मदिना कि तरफ हिजरत किया, हर लम्हे कोइ न कोइ सहाबि हिज्रत के लिए निकलते थे, कभि कोइ अकेला निकलता तो कभि दो या उस से ज्या कि संख्या मे। पहले मुसअब बिन उमैर और इब्ने मकतुम ने हिजरत कि, उसके बाद अम्मार बिन यासिर, साअद और बेलाल निकले, फिर उमर बिन खत्ताब ने बीस सहाबा के साथ किजरत कि[1], इस के अतिरिक्त हबशा मे जो सहाबा थे वह वहाँ से हिजरत करके मदिना चले आए।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! क्या कौरैशको उन मुसलमानोँ के बारे मे खबर लग गई थि कि वह मदिना सफर कर रहे हैँ ?

शिक्षकः हाँ कौरैशको यह पता चल गया था, उन्होँ ने हिजरत करने वाले मुसलमानो को हिजरत से रोकने या उनके घर वालोँको उनके साथ यात्रा करनेसे रोकनेके लिए शाजिशे भि करना शुरू कर दि थि। उन्हि शाजिशोँ के नतिजे मे उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा अपने शौहर अबु सलमाके साथ हिजरत ना कर सकिँ, हजरत अबु सलमा रजियल्लाहु अन्हु ने तन्हा सफर किया और इस उम्मिद पर मक्का मे अपनि पत्निको छोड गए कि जब हालात अच्छे होँगे तो वह भि उनसे जा मिलेङगि[2]।

हिज्रत कि तैय्यारिया:

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कैसे हिज्रत कि ?

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जांनेसार हजरत अबु बकर रजियल्लाहु तआला अन्हु हिज्रत करने कि सोँच रहे थे, इसि इसि दौरान मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भि हिजरत का एरादा बनाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे कहा कि अभि हिजरत ना करे, हो सकता है कि अल्लाह तआला नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हिज्रत कि एजाजत दे दे, इसके बाद हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हि हजरत करेँ।

विधार्थीः यानि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस वक्त तक हिजरत न कि जब तक कि अल्लाह तआला ने आपको इजाजत ना दि।

---

[1] बुखारिः(3/75-76) हदिस नः(3924-3925)

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः (2/112-113)

शिक्षकः हाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह कि इजाजत के बाद हि हिज्रत किया क्योँ कि यह एक बडा और संगीन मामला था और अल्लाह तआला हि बेहतर जानता है कि उसके लिए मोनासिब वक्त कब होगा।

अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने दो सवारियाँ तैयार किया, एक नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए और एक अपने लिए, सवारि से मुराद वह चौपाया है जिस पर इन्सान सफर करता और सामान उठाता है जैसे उँट गधा और घोडा।

एक दिन दोपहर के समय नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु के घर तशरिफ लाए और फरमायाः मुझे निकलने कि इजाजत मिल गई है, अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने कहा किः ऐ अल्लाह के रसुल ! मेरे माँ बाप आप पर फिदा होँ मै भि आपके साथ मेँ निकलना चाहता हुँ। अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः हाँ, हम साथ निकलेंगे[1]।

इस से पता चलता है कि मुखलिस दोस्त और अच्छे साथि का इन्तेखाब कितना अहेम है, हजरत अबु बकर आप से कहा करते थे किः ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान। यानि मै आप पर अपने माँ बाप को कुरबान जाउँ, इसका मतलब है किः मै आपको अपने माँ बाप पर भि तरजिह देता हुँ, अगर चे आपकि वजह से मुझे उनको खोना हि क्योँ ना पडे।अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत का तकाजा भि यहि है कि हम आपसे अपनि जान, और घर वालोँ से भी ज्यादा मोहब्ब्त करेँ।

विधार्थीः यह बडि खुबसुरत बात है। हम भि इसि तरह रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनि जान और अहले खाना से ज्यादा मोहब्बत रखते हैँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ इस लिए इतनि मोशक्कतेँ झेलिँ और तमाम मुश्किलात को बरदाश्त किया कि हम मुसलमा हो जाएँ।

शिक्षकः जब आप और आपके साथि सफर के लिए तैय्यार हो गए तौ अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने दोनोँ सवारियाँ तैय्यार कि और अपना सारा माल साथ लिया जिस कि मिक्दार पाँच या छ हजार दिरहम थि[2] ताकि यात्रा कि अवधि मे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे उन्हे खर्च करेँ।

इस वाकया से यह मालुम होता है कि सफर से पहले सफर कि तैय्यारि करना और रास्ते मे जरूरत पडने वाले सामान को साथ लेकर निकलना कितना अहम है।

हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु के घरवालोँ ने आपके सफर का सामान तैय्यार करके एक मश्किजा मे रख दिया जो एक बडे से झोला कि तरह था जिस मे इन्सान अपनि जरुरतकि चिज रखता है। हजरत अस्मा बिन्ते अबि बकर रजियल्लाहु अन्हा ने अपना पटुका (कमरबन्द) खोला और दो हिस्से मे फाड कर एक मे

---

[1] बुखारिः(3/68-69) हदिस नः(3905)

[2] हाकिम, अलमुस्तदरकः(3/5)

तोशा को बांध कर लटका दिया। इसि वजह से उनका नाम जातुन्नताक पडा, इन्ताक कमर बन्दको करते हैँ।

आप गौर करेँ कि अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु को नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सफरकि कितनि फिक्र थि, उन्होने ने उस दीन कि खिदमत के लिए अपना सारा असासए हयात कुरबान कर दिया।

हमे भि हजरत अबु बकर और उनके अहले खाना कि इक्तेदा करते हुवे दीन इस्लाम कि खिदमत कि हर मुम्किन कोशिश करनि चाहिए और किसि तरह कि बखिलि को पास भि नहि आने देना चाहिए।

विधार्थीः यह तो सफर के तैय्यारिकि बात हुइ, लेकिन क्या कौरैश को आपके इस योजनाकि खबर लग गई थि ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मामले को राज रखा, अबु बकर और उनके घर वालोँ के सिवाए किसिको भि इसकि जानकरि ना थि और वह इस बात से वाकिफ थे कि इस बातको परदे राज हि मे रखना है। लेकिन कौरैश ने जब यह देखा कि मुसलमान बहोत ज्यादा तादाद मे मदिना कि तरफ हिजरत कर रहे हैँ तो उन्हे इस बात का खौफ सताने लगा कि मदिना मे उनकि संख्या ऐसेहि बढति रहि तो वह ताकतवर होकर मक्का वापिस आ जाएङ्गे। जब कौरैशको ऐसा महसुस होने लगा तो उन लगोने जमा होकर आपसमे मस्विरा किया और बहोत सारे करारदाद पास किए, उनमे से किसिने कहा किः कल सुबह उन्हें रस्सियोँ मे बाध दिया जाए। किसि ने कहाः उन्हे कत्ल कर दिया जाए। किसिका कहना था किः उन्हे शहेर निकाला कर दिया जाए[1] अल्लाह तआला ने अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको कौरैश कि मनसुबा बन्दि कि खबर देदि और आपके खेलाफ वह जो भि चालबाजि और मक्कारि कररहे थे आप उससे आगाह हो गए।

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गलत करनेकि यह शाजिश बहोत खौफनाक थि। जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कौरैशकि इस शाजिश कि जानकारि मिलि तो आपका रद्दे अमल क्या था ?

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात मालुम हुइ तो उस समय आप हिजरतकि तयारि मे लगे हुवे थे, आपने हजरत अलि बिन अबि तालिब रजियल्लाहु अन्हु से बातचित करके यह तय किया कि वह रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सो जाएं।

विधार्थीः हजरत अलि रजियल्लाहु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर क्योँ सोए ?

शिक्षकः क्यो कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु सौर गुफा कि तरफ निकल पडे थे और हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जगह सो गए ताकि काफिरोँ को ऐसा लगे कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घरमे सो रहे हैँ और वह

---

[1] अहमद, अलमुस्नदः(1/348)

आपकि तलाश मे ना निकलें और इस दरमेयान रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गारे सौर तक पहोँच जाएँ।
विधार्थीः यह एक बेहतरिन मन्सुबा थि।
शिक्षकः यकिनन् यह एक मजबुत राए और पोख्ता प्लान था जिस से पता चलता है कि खुब गौर व फिक्र कर के हि मोआमलात को सुलझाना चाहिए। नेज इस से यह भि मालुम होता है कि हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कितना ज्याद मोहब्बत करते थे के उन्होने कोरैश के इस खतरे को झेलने के लिए जान कि बाजि लगा दि।
विधार्थीः अल्लाह तआला अलि बिन अबि तालिब से राजि हो, यकिनन् वह बहादुर इन्सान और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इन्तेहाइ मोहब्बत रखने वाले शख्स थे।
शिक्षकः यह बिल्कुल सहि बात है कि हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु पुरि जिन्दगि एक बहादुर और मजबुत शख्सियत बन कर रहे, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बे पनाह मोहब्बत रखते थे और वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचाजाद भाइ भि थे।
विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! उसके बाद क्या हुवा ?
शिक्षकः रात जरा तारिक हो गई तो कोरैशके लोग घात लगा कर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाजे पर घात लगा कर बैठ गए और यह समझते रहे कि आप अपने घर मे हि सो रहे हैं। सुबह होते हि हल्ला बोलना चाहा लेकिन देखा तो अलि रजियल्लाहु अन्हु हैं। उन्होने कहा किः तुम्हारा साथि कहाँ है ? अलि रजियल्लाहु अन्हु ने जवाब दियाः मुझे नहि मालुम। इस तरह अल्लाह ने उनकि शाजिश नाकाम बना दिया[1]।
इसमे गौर करनेकि बात यह है कि अस्बाब एख्त्यार करना कितना अहेम है, इस लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला पर भरोसा करनेके साथ साथ अस्बाब भि एख्त्यार किए, इस लिए हमें भि अपने तमाम मोआमलात मे जरूरि अस्बाब और वसिला एख्त्यार करना चाहिए और साथ हि अल्लाह तआला पर हि भरोसा करना चाहिए।
विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! यह बडे फाएदे कि बात है। इस वाकया के बाद कोरैश ने कौनसा तरिका एख्त्यार किया ?
शिक्षकः उसके बाद कोरैश आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तलाश मे निकल गए, जमिनपर आपके कदमोँ के निशान ढुन्डते और उनपर चलते हुवे आपका पिछा करने लगे। क्योँ कि अरब पुराने जमाने मे इस चिजका खास एहतमाम करते थे और एक दुसरे को इस का तरिका भि बताते थे कि किस तरह किसि के नक्शेकदम पर चलकर उसतक पहोँचा जाए।

---

[1] अलमुस्नदः(1/348)

कोरैश के कुछ लोग आपके कदमके निशान ढुन्डते हुवे गारे सौर तक पहोँच गए, उसके बाद आपका निशाने कदम खतम हो गया और वह यह जान ना सके कि आखिर आप गए कहाँ। जब वह गुफा के पाससे गुजरे तो देखाकि गुफाके दरवाजे पर मकडि के जाले लगे हैँ, तो उन्होँ ने कहाकि अगर आप इस गुफा मे जाते तो उसके मुह पर मकडि के यह जाले न होते। उसके बाद तीन रात तक नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसि गुफा मे ठहरे रहे[1]।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम कइ प्रकार के प्रस्न मनमे उठ रहे हैँ! सब से पहले तो यह प्रश्ट करेँ कि आपने उस गार मे तिन रात क्यो बिताए?

शिक्षकः आप तीन रातोँ तक इस लिए ठहरे रहे ताकि कुफ्फारे कोरैश आपको तलाश करेँ तो आप ना मिल सकेँ और वह मायुस होकर मक्का और उसके आसपार आपको तलाश करना हि छोड देँ। इसके बाद आसानिसे आप अपना मदिने का सफर तय कर सकें।

विधार्थीः निहायत हि उम्दा सोंच थि, सौर गुफा के बारे मे भि एक प्रस्न है कि क्या वह गारे हेरा के एलावा कोइ और गार है?

शिक्षकः हाँ! सौर गुफा मक्का मोकर्रमा के पुर्वि दिशामे है जबि जबले सौर (जो गारे हेरा का हिस्सा है) दझिण दिशा मे है, जो कि मदिना मुनौव्वरह के बिल्कुल विपरित दिशामे है क्योँ कि मदिना मक्का से तिरिबन उत्तरि दिशा मे पडता है।

विधार्थीः यह भि एक उम्दा और दिलचस्प अन्दाजे फिक्र है। लेकिन जब कुफ्फारे कोरैश सौर गुफा के पास से गुजरते थे तो क्या आपने उनि आवाज सुनि थि?

शिक्षकः उसकि तफ्सिल आने वालि है इन्शाअल्लाह, के आपने उनकि आवाज भि सुनि और पाँव भि देखे थे।

सौर गुफा कि तफ्सिलः

शिक्षकः अबु बकर सिद्दिक रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः(मै नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के साथ गुफा मे था, सर उठाया तो क्या देखता हुँ कि लोगोँ के पाँव नजर आ रहे हैं। मैने कहाः ऐ अल्लाह के नबि ! इन मे से कोइ शख्स सिर्फ अपनि निगाह निचि कर दे तो हमे देख लेगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने फरमायाः अबु बकर खामोश रहो। हम दो हैँ जिनका तिसरा अल्लाह है[2]। यह एक बहोत हि कठिन घडि थि मगर अल्लाह तआला उनके साथ था, जिसने इतनि तेज रफ्तारि से मकडियोँ के जाले बनवा दिए, उसि ने कुफ्फार के दिल मे यह बात डालि कि वह अपने कदमों कि तरफ ना देखें ताकि उनकि नजर

---

[1] अहमद, अलमुस्नदः(1/348)

[2] बुखारिः(3/75) हदिस नः(4922)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु पर ना पडे। अल्लाह ने हि उनकि कमजोरी और उस जगह पर उनकि बेबसि पर पर्दा डाल दिया। लेकन रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मको अपने रब पर और उसकि नगहबानि पर किस कदर भरोसा था कि आपने अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु को इत्मिनान दिलाया और बताया कि अल्लाह तआला हमारा तिसरा है जो हमारि निगहबानि कर रहा है आर वहि हमे अपनि मदद से नवाजेगा। अल्लाह तआला ने कुरआनमे इस वाकया को युँ बयान किया है:

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۭ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

अनुवादःअगर तुम उस (रसुल) कि मदद न करो तो अल्लाह हि ने उसकि मदद कि, उस वक्त जब काफिरोँ ने उसे देश से निकाल दिया था, दो मे से दुसरा जबकि वह दोनो गुफा मे थे, जब यह अमने साथि से कह रहे थे फिक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है।(सुरतुत्तौबाः40)

विधार्थीः तमाम तारिफ अल्लाह हि के लिए है जिस ने उस नेमत के जरिए हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और आपके साथि कि गुफा के हिफाजत कि। यकिनन यह एक बडा वाकया है। लेकिन प्रस्न यह है कि उन्होने ने गुफा मे तिन दिन कैसे गुजारा ? क्या उनके पास खाने पिने कि चिज इतनि थि जो तीन दिन चल जाए ?

शिक्षकः मेरे प्यारे बच्चोँ आपका प्रस्न बहोत हि अच्छा है ! नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म गारे सौर कि तरफ निकलने से पहले हि इसका इन्तेजाम कर लिया था, आप और आपके साथि अब्दुल्लाह बिन अबि बकर रजियल्लाहु अन्हु से यह बात पहले हि तय कर चुके कि वह रात के अन्धेरे मे उनके पास जाएङ्गे और रातभर उनके पास और आखरि पहर मे वहाँ से मक्का के लिए निकल जाएँगे ताकि वह मक्का के लोगोँ के बिच होँ और कौरैश कि बातेँ सुने और उनकि मन्सुबा बन्दि कि खबर लेते रहेँ। वह उस समय नौजावान थे लेकिन बहोत हि चालाक और बुद्धिमान थे। वह रात के समय नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि खिदमत मे हाजिर हाते और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के बारेमे कौरैश के सारि शाजिशों से बाखबर करते[1]।

जब इशाका वक्त होता तो उनके पास अबु बकर सद्दिक रजियल्लाहु अन्हु के गुलाम आमिर बिन फुहैरा रजियल्लाहु अन्हु बकरियोँ से साथ हाजिर होते, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और अबु बकरको दुध पिलाते और फिर रात के आखरि पहर मे मक्का कि तरफ निकल जाते, उस से यह फाइदा होता कि

[1] बुखारिः(3/68-69) हदिस नः(3905)छोटकरि मे बयान किया गया।

अब्दुल्लाह बिन अबु बकर के पाँव का निशान मिट जाता और कोरैश यह नहि जान पाते कि यहा अब्दुल्लाह बिन अबि बकर गुफा आते हैँ और उन्हे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि जाए शरण कि खबर लग जाए।

विधार्थीः यकिनन् यह एक पोख्ता और उम्दा मन्सुबाबन्दि थि।

शिक्षकः आपकि योजना बहोत हि उम्दा थि, जिस के जरिए आपको खबर भि पहोँच जाता, खाना भि पहोँच जाता और गुफा मे उनकि मौजुदगि के सारे निशानात भि मिट जाते। इसि लिए हमे भि अल्लाह से मदद तलब तरते हुवे अपने तमाम मकसद और तमान्नओ कि तक्मिल के लिए खुब सोँच समझकर योजना बनाए।

आप लोगोँ को भि अपने पाठ याद करने के लिए, कामयाबि और बुलन्दि पाने के लिए अच्छि तरह योजना बनानि चाहिए तकि हम सबसे बेहतर उम्मत कहलाए जिन्हे लोगोँ को भलाइ का आदेश देने और बुराइ से रोकने लिए उठाया गया है।

विधार्थीः तीन राते सौर गुफा मे बिताने के बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और अबु बकर रजियल्लाहु अन्हुका अगला कदम क्या था ?

सौर के गुफा से समन्दर कि साहिल तकः

शिक्षकः तीन रातेँ गुफा मे गुजारने के बाद आप दोनो गुफा से निकले,नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने गुफा से निकलने से पहले हि एक आदमि को ज्याला पर रख लिया था जो उन्हेँ मदिना के रास्ते कि रहनुमाइ कर सके, वह आदमि कुफ्फारे कोरैश के हि धर्मको मानता था आपने गुफा जाने पहले हि उसे अपनि दोनोँ सवारियाँ दे दि थि और तिन रात के बाद तिसरे दिन सुबहको सौर के गुफा पर मिलने को कह दिया था, उसका नाम अब्दुल्लाह बिन अरिकत था, वह आप दोनो को साहिलि रास्ते कि तरफ ले गया, उनके साथ आमिर बिन फुहैरा भि थे।

विधार्थीः लेकिन साहिलि रास्ते का क्या माना ?

शिक्षकः पहलि बात तो यह कि साहिल समन्दर के किनारेको कहते हैं, साहिलि रास्ते से मुराद समुन्दर के आसपास का इलाक है।

दुसरि बात यह कि मै पहले आप लोगोँ को बता चुका हुँ कि सौर का गुफा मक्का के दझिणि दिशा मे है और मदिना उसके ठिक विपरित दिशा मे यानि कि मक्का के उत्तर दिशा मे है, आपने हिक्मत कि बुनियाद पर ऐसा किया ताकि कोरैश को यह गुमान भि ना हो कि आप उस सिम्त उस जगह पर भि हो सकते हैँ, करिबि जगह के हेसाब से आपको मक्का के उत्तरि भागमे जाकर छुपना चाहिए था लेकिन आपने एक बेहतरिन योजना बनाया और दुश्मन जिस दिशा मे तलाश करने निकल सकते थे ठिक उसके उलठ दिशा

कि तरफ निकल गए। फिर आप लाल सागर कि तरफ बढे ताकि किसि मुश्रिक के वहमो गुमान मे भि ना आए कि आप इस सिम्त मे हैँ, उसके बाद आपने मदिना का रुख किया।

विधार्थीः यह बहोत हि अहम और बेहतरिन योजना थि जो अल्लाह कि तौफिक पर मब्नि थि।

शिक्षकः बहोत खुब मेरे बच्चों ! यह अल्लाह तआला कि तौफिक के साथ साथ एक बेहतरिन अन्दाज कि सोचि समझि दुरुस्त योजना थि, हमे भि इसि तरह अल्लाह कि मदद से अमने मोआमलात को खुब सोँच समझ कर अन्जाम देना चाहिए ताकि शरमिन्दगि और हर तरक कि गलति से बच सकें।

एक और अहेम बात जानना जरूरि है मेरे प्यारे बच्चो ! और वह यह है कि अल्लाह तआला इस बात पर पुरि तरह कादिर था कि आपको हर तरह के मुश्किलात से बचा कर पल भर मे मदिना पहोँचा देता जैसा कि मक्का से मस्जिदे अक्सा का सफर कराया था। लेकिन चुँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि रेसालत हमारे जिन्दगि के हर शोबे के लिए इल्मि और अमलि नमुना है इसि लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने उन तमाम परेशानियाँ, मोशक्कतोँ और शाजिशों का सामना किया जिनका सामना एक इन्सानको करना पड सकता है ताकि अपने तमाम मोआमलात मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि पैरवि कर सके।

विधार्थीः बिल्कुल उस्तादे मोहतरम ! अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मको रातों रात मदिना पहोँचा दिया जाता तो हमे यह फाएदे और नसिहतैँ हासिल नहि हो पाते। यकिनन् अल्लाह तआला ने आपकि जिन्दगि को हमारे लिए हुज्जत और नमुना बनाया जिस पर चलकर हमेँ अपनि जिन्दगि गुजारनि चाहिए।

एक चट्टान के साए मेः

शिक्षकः इस मुबारक काफले ने रात भर सफर जारि रखा और दिन मे दोपहर तक चलते रहे यहाँ तक कि जब ठिक दोपह का वक्त हो गया, रास्ता खालि हो गया और कोइ गुजरने वाला न रहा तो उन्हेँ एक लम्बि चट्टान दिखाइ दि जिस के साए पर धुप नहि आइ थि, वह वहि उतर गए।

हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने अपने हाथ से उस पहाड के साउ मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के सोने के लिए एक जगह बराबर कि और उस पर एक पोस्तिन (बकरि कि खाल जिस मे बाल लगे हुवे होँ) बछा कर गुजारिश कि के ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म आप सो जाएँ और मै आपके आस पास देखभाल किए लेता हुँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म सो गए और वह आप से आसपार देखभाल के लिए निकल पडे[1]।

---

[1] मुस्लिमः(4/2309-2310) हदिस नः(2009)

गौर फरमाएँ कि अबु बकर सिद्दिक रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का किस कदर ख्याल रखते थे कि उन्होने अमने हाथ जे जगह साफ कि, उस पर पोस्तिन (बिस्तर कि मानिन्द) बिछाया और जगह कि निगरानि करने मे लग गए।

विधार्थीः इस से मुझे यह समझ मे आता है कि हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के वफादार साथि थे जो आप से इन्तेहाइ मोहब्बत रखते और हद दरजा आपका एहतराम करते थे।

शिक्षकः बिल्कुल, अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु आप से मोहब्बत रखने वाले और निहायत हि वफादार साथि थे, और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के साथ ऐसा होना भि जरूरि था जिन कि इत्तेबा और पैरवि कर के हम इन्शा-अल्लाह जन्नत मे दाखिल होँगे। हमे भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि सुन्नत से मोहब्बत रखना चाहिए और सुन्नत का इतना हि पासो लेहाज रखना चाहिए जितना कि अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का खयाल रखा।

विधार्थीः उस के बाद क्या हुवा ?

शिक्षकः अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु आप-पास देखभाल कर हि रहे थे के अचानक उन्होने एक चरवाहा को देखा जो बकरियाँ लिए चट्टान कि चला आ रहा है, वह भि उसि चट्टा के साए मे आराम करना चाह रहा था। अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि मैने उस से कहाः क्या तुम्हारि बकरियोँ मे दुध है ? उसने कहा किः हाँ मैने कहा हमारे लिए दुह सकते हो ? उसने कहाः हाँ। मैने कहा जरा थन से मिट्टि, बाल और तिनके वगैरह को साफ कर लो, फिर उसने एक काब (लकडि के एक बरतन) मे थोडा सा दुध दुहा।

अबु बकर सिद्दिक रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ किः मै नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के पार आया लेकिन गवारा ना हुवा कि आपको जगाउँ, सो जब आप जगे तो मै आपके पास आया और आपने दुध पिया। फिर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने फरमाया क्या अभ सफर का वक्त नहि हुवा ? मैने कहा क्योँ नहि ! उसके बाद हमलोग चल पडे[1]।

विधार्थीः यह बहोत हि दिलकश वाकया है।

शिक्षकः हाँ यह एक ऐसा वाकया है कि जिस मे तौफिके एलाहि साफ झलकति है, वह इस तरह कि अल्लाह ने उनके लिए एक चरवाहा मोहैय्या कर दिया जो अपनि बकरियाँ लेकर उनके पास आ पहोँचा, उसके बाद जब दुध दुध कर अबु बकर सिद्दिक रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के पार आउ तो मोनासिब वक्त पर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि निन्द टुटि।

गौर करने कि बात यह है कि अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु आपका किस कदर ख्याल रखते थे कि उन्होँ ने आप को पेश किए जाने वाले दुध कि सफाइ का इस कदर पासो लेहाज रखा कि चरवाहे से कहा किः बकरि

[1] मुस्लिमः(4/2309-2310) हदिस नः(2009) छोटकरि मे बयान किया गया।

के थन से बाल और गुबार वगैरह साफ कर दो ताकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म साफ शफ्फाफ दुध पिएँ और आपको दुध पिते हुवे कोइ एसि चिज ना मिले जो तबियत को नागवार गुजरे।

इस से हमे पाकि सफाइ कि अहमियत भि मालुम होति है और यह भि समझ मे आता है कि हमेँ इसका खास एहतमाम करना चाहिए और जब हम से कोइ चिज तलब कि जाए तो हम उसे साफ शफ्फाफ करे, बल्कि हमेँ अपने खास मोआमलात मे भि तहारत व पाकिजगि का मोकम्मल ख्याल रखना चाहिए क्यो कि तहारत व सफाइ इमान का हिस्सा है, जैसा कि हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के फरमान से पता चलता है आर हमारा दीन भि पाकिजगि और तहारत का दीन है जो हमें इसका हुक्म देता है।

विधार्थीः मुझे अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु से गहरि मोहब्बत का एहसास हो रहा है क्योँ कि वह हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का बे शरण ख्याल रखा करते थे।

शिक्षकः तुम्हारे यह जजबात काबिले तारिफ है मेरे अजिजो ! हमे अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु से जरूर मोहब्बत करनि चाहिए क्योँ कि वह हमारि मोहब्बत के सच्चे हकदार है, बल्कि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के नजदिक भि मरदोँ मे सब से ज्यादा महबुब इन्सान थे।

विधार्थीः क्या उसके बाद यह मुबारक काफला अपनि मन्जिल कि तरफ चल पडा ? फिर क्या वाकया पेश आया और उन्होँने कौनसा तरिका एख्त्यार किए ?

सोराका बिन मालिक नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि तलाश मेः

शिक्षकः हिजरत के रास्ते मे एक अजिब वाकया पेश आया, वह यह कि सोराका बिन मालिक नामि एक कोरैशि शख्स आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु के बिलकुल करिब आ पहोँचा, हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु ने कहाः ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मः यह पिछे करने वाला हमे पा लेना चाहता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने फरमायाः (गम ना करेँ अल्लाह तआला हमारे साथ है), उसके बाद रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने उस के उपर बद्दुवा कि और उस का घोडा पेट तक जमिन मे धँस गया[1]।

यानि घोडा का पाँव पुरा पुरा जमिन मे धँस गया, यहा तक कि सिर्फ पेट और पिठ जमिन पर बाकि रह गया, सोराका के एलावा और लोग भि थे जिन्हे कोरैश ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के पिछे भेजा था, यहाँ गौर करने वालि बात यह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने इस वाकया मे किस तरह अल्लाह पर भरोसा और तवक्कुल से काम लिया, नेज यह भि गौर करेँ कि अल्लाह ने किस तरह फौरन अपने रसुल कि दुवा कुबुल फरमाइ और जमिन को नरम कर दिया कि घोडे के पाँव उसमे धँस जाए।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम ! दुवा कि कुबुलियत एक अजिम बात है।

---

[1] मुस्लिमः(4/2309-2310) हदिस नः(2009)

शिक्षकः इन्सान जिस कदर अल्ला तआला का फरमाबरदार होता है अल्लाह तआला उसि कदर उसकि दुवा कुबुल करता है, लेकिन कि दुवा कुबिलियत मे अल्लाह कि हिक्मत भि कारफरमा होति है, कभि अल्लाह तआला फौरन बन्दा कि दुवा कुबुल कर लेता है तो कभि उस मे ताखिर भि होति है बसा औकात इस दुवा के नतिजे मे उसकि कोइ मुसिबत टाल देता है या उसे ऐसि नेमत और भलाइ अता करता है जो उसकि तलब करदा दुवा बेहतर अफजर होति है। क्यौँ कि अल्लाह तआला हमे बारे मे हम से जयादा जानता है कि हमारे लिए कौनसि चिज ज्यादा मुफिद और बेहतर है, अल्लाह तआला फरमाता हैः

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ

अनुवादः बेकस कि पुकार को जब कि वह पुकारे, कौन कुबुल करके तक्लिफ को दुर करता है ? और तुम्हे जमिन का खलिफा बनाता है, क्या अल्लाह तआला के साथ दुसरा कोइ इबादत के लाएक है ? तुम बहोत कम नसिहत व इबरत हासिल करते हो (सुरतुन नमलः62)

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! यह बडे बडे फाएदे हैँ जो हम ने हासिल किया है। वैसे सोराका का रद्दे अमल क्या था ? यकिन्न वह इस वाकया से खाएफ हो गया होगा ?

शिक्षकः हाँ सोराका को खौफ लाहिक हो गहा। उसने कहाः मुझे यकिन है कि तुम दोनोँ ने मेरि हलाकत कि बद दुवा कर दि, अब मेरि नजात के लिए दुवा कर दाजिए। अल्लाह कि कसम मै आप दोनो को लोगोँ के तआकुब से बचा लुङ्गा। यानि कि जिस तरह आपकि बद दुवा के नतिजे मे मेरे घोडे के पाँव जमिन मे धँस गए इसि तरह आप यह दुवा करेँ कि उस के पावँ जमिन से निकल जाएं, अगर आप मुझे इस मुसिबत से बचा लेङ्गे तो मै आप को दुश्मन के तआकुब से बचा लुङ्गा।

हमे इस मोके पर अल्लाह के उस चमत्कार पर गौर करना चाहिए जिसे अल्लाह ने अपने नबि कि हिमायत के लिए प्रकट किया, और जमिन को इस कदर नरम कर दिया कि सोराका बिन मालिक के घोडे के पाँव पेटतक जमिन मे धंस गए्। यकिनन् हर एक चिज अल्लाह तआला के ताबेअ और उसके मतहत है सिर्फ अल्लाह के एरादे कि देरि होति है।

विधार्थीः क्या सोराका ने वादा पुरा किया ? दुश्मनोँ को आपसे फेर दिया ?

शिक्षकः हाँ सोराका एक वफादार शख्स था, अल्लाह कि तरफ से उस खोफनाक वाकया के मुब्तला होने के बाद वह भल अपने अहेद से कैसे मुकर सकता था। जिस इन्सान से भि उसकि मुलाकात होति वह उसे वपस कर देता, वह लोगोँ को कहता जाता किः मैने इस सिम्त मे तलाशि कर लिया है, इधर कोइ नहि है[1]।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! उसके बाद क्या हुवा ? बेशक हिज्रतका सफर बहोत सारे हादसात व वाकयात से पुर था।

[1] मुस्लिमः(4/2309-2310) हदिस नः(2009)

शिक्षकः यकिनन् हिज्रत के सफर मे बहोत सि एसि नसिहतेँ और इब्रतें मौजुद हैं जो हमे ठहेर कर गौर व फिक्र करने कि दावत देति हैँ।

उम्मे माअबद का खेमाः

हिज्रत के इस सफर मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु का गुजर उम्मे माबद अल खुजाइया के खेमे से हुवा, आपने उन से गोश्त और खुजुर के बारे मे पुछा ताकि उन से खरिदें, लेकिन उनके पास यह चिजें मौनुद ना थिँ। रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने देखा कि खेमे के एक कोने मे एक बकरि है। फरमायाः उम्मे माअबद ! यह कैसि बकरि है ? वह बोलिः इसे कमजोरि ने रेवड से पिछे छोड रखा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने पुछा कि इस मे कुछ दुध है ? बोलिः वह इस से कहिँ ज्यादा कमजोर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने फरमायाः इजाजत है कि इसे दुह लुँ ? हाँ मेरे माँ-बाप तुमपर कुरबान अगर तुम्हे इस मे दुध दिख रहा हो तो जरूर दुह लो। इस बातचित के बाद रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मने उस बकरि के थन पर हाथ फेरा। अल्लाह का नाम लिया और दुवा कि। बकरि ने पाँव फैला दाए, थन में भरपुर दुध उतर आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने उम्मे माअबद का एक बडा सा बरतन लिया और उसमे इतना दुध दुहा कि झाग उपर आगया, फर उम्मे माअबद को पिलाया। वह पि कर शिकमसेर हो गइँ तो अपने साथियोँ को पिलाया, वह भि पि कर शिकमसेर हो गए तो खुद पिया।

विधार्थीः अल्लाह कसम यह तो एक बडि हि अजिब वाकया है उस्तादे मोहतरम।

शिक्षकः हाँ बिल्कुल इस वाकया मे बहोत बडा चमत्कार जाहिर होता है, वह यह है कि बकरि निहायत हि कमजोर थि, उसके थन खुश्क थे, लेकिन जैसे हि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म अल्लाह का नाम लेकर उस के थन पर अपना मुबारक हाथ फेरते हैँ और अल्लाह तआला से उम्मे माअबद के हकमे दुवा करते हैँ, थनके अन्दर फौरन् दुध उतर आता है, उसका थन दुध से लबालब भर जाता है। यकनन् यह एक बहोत बडा चमत्कार है जिसे अल्लाह ने अमने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के लिए रौनुमा किया[1]। इसके अतिरिक्त नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के व्यहार पर भि गौर करेँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने बगैर इजाजत कुछ करना पसन्द नहि किया, बल्कि इजाजत तलब कि (क्या इजाजत है कि उसे दुह लुं?) आपने अनुमति के बिना बकरि कि तरफ हाथ भि नहि बढाया।

विधार्थीः अल्लाह कि करम यह बडे करम कि बात है और अल्लाह का बहोत बडा मोअजेजा है। हमे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म से यह भि तालिम मिलति है कि हम किसि चिज कि तरफ बिना अनुमति के हाथ ना बढाएँ जो हमारि मिल्कियत मे ना हो, ख्वाह कितनि मामुलि सि चिज क्योँ ना हो ?

---

[1] अल हाकिम, अलमुस्तदरकः(3/9-10)

शिक्षकः दुध दुहने के बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने जिस सखावत और फैय्याजि का मोजाहेरा किया, उस मे भि गौर करने कि जरूरत है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म सबसे मोअज्ज और मोहतरम थे उस केबाद भि खुद पिने के बजाए पहले बकरि के मालकिन उम्मे माअबद को पिलाया यहाँ तक कि जब वह सैर हो गइं तो अमने साथियोँ को दुध पेश किया, जब वह सब शिकमसेर हो गए तब सबसे अखिर मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने पिया।

विधार्थीः यकिनन् आपने हमे यह तालिम दि है कि हम दुसरोँ के साच किस तरह अदब से पेश आएँ और किस तरह तरतिबवार लोगोँ के हुकुक के एतबार से उनके साथ मोआला करेँ।

शिक्षकः बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि सखावत हि थि कि आपने दुध पिने के बाद उस बरतन मे दुबारा इतना दुध दुहा कि बरतन भर गया और उसे उम्मे माअबद को पेश कर दिया। उसके बाद उम्मे माअबद रजियल्लाहु अन्हा से इस्लाम कि बैअत लि और वहाँ से चल पडे[1]।

विधार्थीः इसका मतलब है कि उम्मे माअबद ने इस्लाम कुबुल कर लिया ?

शिक्षकः हाँ जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म से उनकि मुलाकात हुइ और उन्होने आपका मोअजेजा देखा, आपका बेहतरिन व्यवहारका नमुना देखा, आपके नरम बोलिचालि देखि तो इस्लाम कुबुल किए बिना ना रह सकिं।

विधार्थीः बिल्कुल सहि बात है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के व्यवहार इस बात का सबुत है कि आप निहायत हि इज्जतदार और शरिफ व सखि थे।

शिक्षकः थोडि हि देर गुजरि थि कि उनके पति अबु माअबद रजियल्लाहु अन्हु आ पहोंचे। दुध देखा तो हैरत मे पड गए। पुछा कि यह कहाँ से आया ? जब कि बकरियाँ दुर दराज थि और घरमे दुध देने वालि बकरि भि ना थि। उम्मे माअबद ने उनसे सारा माजरा बयान किया। अबु माअबद रजियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यह तो वहि इन्सान लगता है जिसे कौरैश तलाश कर रहे हैँ। फिर कहा कि मेरा इरादा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का साथ एख्त्यार कर लुँ। और कोइ रास्ता मिला तो एसा जरूर करूङगा। अबु माअबद कि बातचित

से मालुम होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि खबर इस कदर फैलि थि कि यहाँ तक बात पहोँच चुकि थि, लेकिन अल्लाह तआला ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म को अपने हिफ्जो अमान मे रखा।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! मै और मेरे दुसरे साथियो ने भि यह महसुस किया कि हिज्रते नबवि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के उन वाकयात से हमारे अन्दर इसकि मजिद तफ्सिल जानने और उसे पुरि तवज्जोह से सुनने का शौक पैदा हो रहा है।

1

शिक्षकः हकिकत यहि है कि हिज्रत का वाकया हादसात और मोशक्कतोँ से भरा हुवा है, लेकिन इसमे हमारे लिए बहोत सि नसिहते और पाठ है।

चरवाहे का कुबुले इस्लामः

शिक्षकः हिज्रत के सफर मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने एक चरवाहे को अपनि बकरियोँ के साथ देखा, आपने उस से दुध तलब कि, उसने मानेरत कर दि के उसके रेवडमे को दुधारि बकरि नहि है, एक थि भि उसका दुध आना बन्द हो गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने वह बकरि मगवाया और उसके थनपर अपना हाथ फेरा और दुवा किया यहाँ तक कि उसके थन मे दुध उतर आया और सब लोगोँ सैर होकर पिया। चरवाहे ने कहाः बखुदा आप मुझे बताएँ कि आप कौन हैँ? अल्लाह कि कसम मैने आप जैसा इन्सान नहि देखा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने कहा कि क्या मेरि बातको राज मे रख सकते हो ? उसने कहाः हाँ आपने फरमायाः मोहम्मद, अल्लाह का रसुल हुँ। उसपर चरवाहे ने कहाः क्या आप हि वह शख्स हैं जिन के बारे मे कोरैश कहते हैं कि अधर्मि हो गया है ? यानि उसने अपने बाप-दादा का धर्म तर्क कर दिया है। चरवाहे ने कहाः मै गवाहि देता हुँ कि आप नबि हैँ और आपकि रेसालत हक है और यह कि आपने जो कुछ भि किया है वह एक नबि हि कर सकते हैं[1] ।

विधार्थीः यह बडि अच्छि बात है कि उम्मे माअबद कि तरह उस चरवाहे ने भि इस्लाम कुबुल कर लिया अल्लाह उन तमाम से राजि हो।

शिक्षकः यकिनन् उनका कुबुले इस्लाम एक खुशकुन मरहला था, आप अध्यायरकत नबि थे, जिसके पास भि जाते वह आपकि बरकत से फैजयाब होता, सब से पहलि भलाइ यह होति कि वह इस्लाम मे दाखिल हो जाता जो कि जन्नत कि रहनुमाइ करता और जहन्नम से नजात दिलाता है। बकरियोँ के अन्दर भि जो तक्दिलि आति वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के दुवाओ के नतिजे मे होति थि।

विधार्थीः यह एक अहेम नुक्ता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म सिर्फ थन को हाथ नहि लगाते बल्कि साच साच दुवा भि किया करते थे, जोकि इस बात कि दलिल है कि हमारि जरूरतोँ कि तक्मिल मे दुवाओका बहोत अहेम किरदार होता है।

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म से मोहब्बत करने वालोँ कि तरफ से होने वालि यह बात बहोत हि प्यारि है, जो पुरे ध्यानपुर्वक और दिलचस्पि से साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि जिवनी को सुनते पढते हैँ। अल्लाह तआला आप सबको अमने हिफ्जो अमान मे रखे।

---

[1] अलहाकिम, अलमुस्तदरकः(3/8-9)

हिज्रत के रास्ते मे आपको कपडे दाए जाते है:

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम उसके बाद उस सफर मे क्या हुवा ?

शिक्षकः रास्ते मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि मुलाकात हजरत जुबैर रजियल्लाहु अन्हु से हुइ जो मुसलमानो के गिरोह के साथ मुल्के शाम के तेजारति यात्रा से वापस हो रहे थे। हजरत जुबैर रजियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म और अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु को सफेद कपडे पहनाए[1]।

यह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के प्रति अल्लाह तआला कि खास तौफिक का नतिजा था कि आप नए सफेद कपडे मे मलबुस होकर मदिना मे दाखिल हों।

विधार्थीः इसका मतलब है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म व अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु मदिना के करिब पहोंच चुके थे।

शिक्षकः हाँ, और उधर मदिना के बाशिन्दे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि आमद पर आपके इस्तक्बाल कि पुरि तैय्यारि कर चुके थे।

मदिना मे प्रवेश और पुरजोश स्वागतः

शिक्षकः मदिना वासियों को नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि मदिना के तरफ निकलने कि खबर मिल चुकि थि जिस से वह बेहद खुश थे, वह हर रोज अपने घरों से निकल कर मकामे हर्रा तक जाते और दोपहेर के वक्त तक वहाँ आपकि आमद का इन्तेजार करते, जब धुप तेज हो जाति तो अपने अपने घरों को लौट जाते। एक रोज अभि वह लोग अपने घरों को वापर हो हि रहे थे कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मदिना पहोंच गए, किसि यहुदि ने आपको देख लिया, उसने बुलन्द आवाज से यह नेदा लगाइ किः ए अरब के लोगों ! यह तुम्हारे मेहमान आ गए जिनका तुम इन्तेजार कर रहे थे[2]।

इस से पता चलता है कि मदिना के बाशिन्दे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि आमद के इन्तेजार मे सरापा शौको मोहब्बत बन गए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म दुश्मनि रखने वाले और तक्लिफ देने वाले कौम से ऐसि कौम कि तरफ मुन्तकिल हो रहे थे जो आप से मोहब्बत रखने के साथ साथ आपकि मदद व हिमायत के लिए भि हरपल सरपर कफन बाँध कर तैय्यार रहते थे। हिज्रते नबवि का करिश्मा था कि मदिना खैर व भलाइ और इमान का गहवारा बन गया।

विधार्थीः यहुदि ने चिल्लाते हुवे कहा थाः (हाजा जद्दुकुमुल्लजि तन्तजिररून) यह इबारत हम समझ नहि सके।

---

[1] बुखारिः(3/70-71)हदिस नः(3906)

[2] बुखारिः(3/70-71) हदिस नः(3906)

शिक्षकः उसका मकसद यह था कि यह तुम्हारे मेहमान और साथि आ गए जिनका तुम्हे इन्तेजार था। जद्द से साथि और मेहमान मुराद लिया गया है।

विधार्थीः आपने कहा कि मदिना वासि हर रोज अपने घरोँ से मकामे हर्रा के पास आते थे। हर्रा के क्या मानि हैं ?

शिक्षकः हर्रा उस जमिनको कहते हैँ जहाँ काले पत्थर होँ, इतने काले गोया आगमे जल गए होँ। उसका बहुवचन हर्रात आति है।

विधार्थीः बडा डरावना मन्जर रहता होगा वहाँ। लेकिन जब यहुदि ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के आने कि खबर दि तो मुसलमानो का क्या रद्दे अमल था ?

शिक्षकः मुसलमानो ने अपना हथियार उठाया और निकल पडे ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म को खुशआपदिद और मरहबा कहते हुवे पुरि गरमजोशि से स्वागत कर सकेँ और हथियार से हथियार के एशारे से आपकि आपद पर अपनि मोहब्बत और खुशि का इज्हार करेँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने बनि अम्र बिन औफ कि तरफ रुख किया जो कुबा मे रहते थे, यह रबिउल औव्वल, सोमवार का दिन दो तारिख का वाकया है। आपने वहा मस्जिदे कुबा तामिर कि और उस मे नमाज काएम कि, आप कुबा मे तक्रिबन 14 दिन तक ठहरे[1]रहे। मस्जिदे कुबा कि तामिर से मस्जिद कि अहमियत का अन्दाजा लगाया जा सकता है, क्यो कि आपने कुबा पहोँचने के बाद सब से पहला काम यहि किया कि वहाँ मस्जिद तामिर कि। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म अपने अस्हाब के साथ तामिरे मस्जिद मे खुद भि पत्थर ढोते और सहाबा का साथ देते थे।

विधार्थीः आपने कुबा हि से क्यो आगाज किया ?

शिक्षकः पहलि बात तो यह किः कुबा उस समय मदिना मे शामिल न था क्योँ कि लोगोँ कि संख्या कम थि, उस समयका मदिना आज कि तरह नहि था के घर आर इमारत करिब करिब आपस मे मिलि हुइ होँ। दुसरि बात यह किः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मदिना मे दाखिल हुवे थे तो आप जबले ऐर के रास्ते से दाखिल हुवे थे जो कुबा कि सिम्त मे पडता है। फिर यह कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का हर काम हिक्मत पर मब्नि हुवा करता था और आप जानते थे कि कौन सा रास्ता एख्त्यार करना ज्यादा बेहतर होगा। सब से बडि बात यह कि आपको बेहतर से बेहतर काम करने के लिए अल्लाह तआला कि तरफ से रहनुमाइ मिलति थि।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! आपने बहोत हि उम्दा कारण बयान किया। हमे आपका पेश करदा तौजिह पर फख है। शुक्रया उस्तादे मोहतरम

[1] बुखारिः(3/70-71) हदिस नः3906

शिक्षकः फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म अपनि उँटनि पर सवार हो गए और आपके साथ लोग भि चल पडे, वह बेहद खुश थे, अन्सारे मदिना के मर्द, औरतें, बच्चे और बच्चियाँ खुशि मे इस कदर डुबे हुवे थे कि घरोँ के छतोँ पर चढकर और बच्चे रासतोँ मे खडे होकरः या मोहम्मद ! या रसुलुल्लाह ! कि नेदा लगाने लगे और अश्आर के नगमे बिखेरने लगेः

अनुवादः उन पहाडोँ से जो दक्षिण कि तरफ हैं हमपर चौदहविं का चाँद निकल आया है।

क्या उम्दा दिन और तालिम है, हम पर अल्लाह का शुक्र वाजिब है।

ऐ हमारे लिए भजे गए नबि, आपकि एताअत हम पर फर्ज है।

ए बेहतरिन दाइ, यह मदिना के लिए बाइसे शर्फ है कि आप हमारे दरमेयान तशरिफ लाए।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम यह तो हद दरजे कि खुशि है जिसे हम अभि महसुस कर रहे हैँ तो भल उस समय अन्सारे मदिना और उनके आल-औलाद के खुशि का आलम क्या रहा होगा !

शिक्षकः यकिनन् यह ऐसि खुशि है जिस से दिल भर आता है ! और ऐसा हो भि क्योँ ना जब कि ऐसे शख्सियत कि आपद जो मदिना मे हुइ, मदसना रहने वाला, मदिना कि मिट्टि पर चलने वाला, मदिना मे नमाज पढने वाला, उसमे खाने, पिने, सोने वाला और उसकि मिट्टि मे दफन होने वाला सब से अफ्जल शख्स था।

विधार्थीः उसके बाद क्या हुवा उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म लोगोँ के हुजुम के बिच मदिना मे दाखिल हुवे और उस जगह पर आपकि उँटनि जाकर बैठ जहाँ आज मस्जिदे नबवि है उसि उँटनि के बैठने कि जगह पर मस्जिदे नबवि तामिर हुइ। जब आपकि उँटनि बैठ गई तो आपने फरमायाः इन्शाअल्लाह यह मेरि मन्जिल होगि।

चौथा अध्याय
इस्लामि हुकुमत का कयाम

मदिना के समाजिक जिवनकि एक झलकः

शिक्षकः समाजिक जिवन से मुराद यह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के जमाने मे लोग मदिना के अन्दर कैसि जिन्दगि गुजर बसर करते थे, उनका दिनचनर्य कैसा होता था।

जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मदिना तशरिफ लाए तो मस्जिदे नबवि कि तामिर कि जहाँ वह दिनो रात मे पाँ वक्त कि नमाज के लिए जमा हुवा कहते थे और वहि मुल्क का दारुल हुकुमत भि था, आपने मोहाजिरिन और अन्सार के दरमेयान भाइचारा काएम किया, मदिना के मुसलमा और गैर मुस्लिमोँ के दरमेयान मोआहिदा मुन्अकिद किया जिस कि वजाहत आइन्दा सफहात मे आएङगि इन्शाअल्लाह। इस तरह से समाजि जिन्दगि पर इस्लाम के असरात जाहिर होने शुरू हो गए।

विधार्थीः यह तो बहोत हि अच्छि बात है कि मदिना मे मुसलमानो कि नइ जिन्दगि शुरू हो रहि थि।

मस्जिद कि तामिरः

जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मदिना मे दाखिल हो रहे थे तो दुसरे लोग भि आपके साथ साथ चल रहे थे, यहाँ तक कि उस जगह पर जाकर आपकि उँटनि बैठ गई जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने मस्जिदे नबवि कि तामिर कि और फरमायाः यहि मेरि मन्जिल होगि इन्शाअल्लाह।

इस जगह पर कुछ मुसलमान नमाज पढा करते थे, वह जगह दो अनाथ बच्चोँ कि थि, जहाँ वह अपनि खुजुरेँ सुखाया करते थे, आपने उन दोनों बच्चो को बुलाकर उस जमिनकि किमत पुछि ताकि वहाँ मस्जिद तामिर करें, लेकिन उन्होंने किमत लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि हम यह जमिन आपको हदिया देना चाहते हैँ, लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने बतौर हदिया लेने से इन्कार कर दिया और उसकि किमत अदा कर के उनसे जमिन खरिदि और मस्जिद कि तामिर कि[1]।

विधार्थीः उन दोनो बच्चोँ ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के साथ सखावत और फैय्याजि करना चाहा।

शिक्षकः हाँ, उन्होने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के साथ अदब आर सखावत का मामला किया, लेकिन रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने भि उन कि सखावत कि कदर करते हुवे उनके साथ सखावत व फैय्याजि का मामला रवा रखा और उन्हे उसकि किमत अदा कि, चुँकि अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने यह किमत दि थि, इस लिए यह अध्यायरकत थि।

विधार्थीः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने मस्जिद कि तामिर कैसे कि ?

---

[1] बुखारिः(3/70-71)हदिस नः(3906)

शिक्षकः दिवारेँ इँट और गारे से बनाइ गईं। छतपर खुजुर कि शाखेँ और पत्ते डालवा दाए गए और खुजुर कि तनों के खम्बे बनाए गए[1]।

विधार्थीः खुजुर के तने और शाख से क्या मुराद ?

शिक्षकः शाखोँ से मुराद खुजुर का वह बालाइ हिस्सा है जो टहनियोँ कि शकलमे होता है। तना का मतलब वह हिस्सा है जो जमिन कि जडसे ले कर दरख्त के आखरि सिरे तक फैला हुवा होता है और उस पर शाखें बनति हैं। हर शाख पर कुछ हरे रङ्ग कि टहनियाँ होति हैं जो दरख्त के पत्तों कि तरह हुवा करति हैं।

विधार्थीः तामिर का काम किस ने अन्जाम दिया ?

शिक्षकः उस जमाने आजकि तरह मजदुर कम्पनियाँ, और सामन ढोने और लेजाने वालि मशिनेँ नहि थिं बल्कि सहाबा ए केराम रजियल्लाहु अन्हुम ने खुद से मस्जिद बनाइ और उनके साथ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म बजाते खुद तामिर के कामे शामिल हुवे[2]।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मने मदिना पहोँचते हिँ तामिरे मस्जिदका इस कदर एहतमाम किया, इस से पता चलता है कि इस्लाम मे मस्जिद कि कितनि अहमियत है। उसकि वजह यह है कि मस्जिद हि मुसलमानों के लाए मकामे इज्तेमा थि, जहिँ वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म से मुलाकात किया करते और आप उन्हें दिन कि तालिम देते थे। इस लिए आज तक मस्जिद को नमज, तालिम और मुसलमानों के बाहमि इज्तेमा कि जगह समझा जाता है।

उस समय मुसलमान अन्दाजे के मोताबिक नमाज के समय मस्जिद आया करते थे, फिर उसके बाद अल्लाह ने आजानको फर्ज करार दिया जिसे आज आप सुनते और दोहराते है। बेलाल बिज रेबाह मस्जिदे नबवि के मोअज्जिन थे[3]।

मदिना के अन्दर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का ठिकानाः

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मदिना तशरिफ लाए तो आपने अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु अन्हु के यहाँ कयाम किया, उनका घर दो मन्जिला था, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म पहलि मन्जिल पर थे और अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु अन्हु उपरि हिस्से पर।

विधार्थीः हजरत अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु तआला अन्हु के लिए यह बडे शर्फ कि बात थि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने उनके घरमे कयाम किया।

---

[1] साबिक हवालाः(77-78)हदिस नः(3932)

[2] इब्ने हजर, फतहुल बारिः(1/246)

[3] तिर्मिजिः(1/358-359) हदिस नः 189

शिक्षकः यकिनन् यह इन्तेहाइ शर्फ और बडे करम कि बात थि कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म उनके घर तशरिफ लाए।

लेकिन अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु जब उपरि हिस्से मे रहने लगे तो उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के मकामो मरतबा का एहसास होने लगा तो उन्होँ ने कहाः हम रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के सर के उपर चलते फिरें यह हमें गवारा नहि। इस लिए उन्होंने एक किनारे रात गुजारि। यानि वह घर के एक कोने मे जाकर सो गए और उस रात डर से घरके अन्दर चलने फिरने से बाज रशे कि कहिं उस जगह के उपर उनके पाँव ना पड जाएँ जिस के निचे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कयाम कर रहे हैं, जिस के नतिजे मे सुबह तक वह घर के एक गोशे मे सोते रहे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मको उसकि खबर दि गई तो ने फरमायाः (अस्सुफलु अर्फक) यानिः नचलि मन्जिल मे कयाम करना नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के लिए ज्यादा आसान है। हजरत अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु अन्हु ने कहाः मै उस मन्जिल के उपर नहि रह सकता जिस के निचे आप हों। यानि मैं उस छत पर नहि चढ सकता जिस के निचे आप ठहरे हों। उसके बाद आस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म उपरि हिस्से पर चले गए[1]।

विधार्थीः अल्लाह कि कसम यह तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के प्रति बडे अदब कि बात है। जिस से हम को पाठ मिलता है कि हम अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मसे किस तरह मोहब्बत करें, कैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का एहतराम करें, आपके सुन्नतोँ को कैसे अदा करें। सहाबिए रसुल अबु अय्युब रजियल्लाहु अन्हु ने हमें यह सकब दिया कि हम नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के साथ इन्तेहाइ अदबो एहतराम से पेश आएं।

शिक्षकः बल्कि अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के मनपसन्द चिजोँ से भि शदिद मोहब्बत करते थे, यहाँ तक कि खाने पिने मे भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि पसन्दका ख्याल रखते थे, वह आपके लिए खाना तैयार करते और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के खाना खा लेने के बाद जो कुछ बच जाता तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि उङ्गलियां जहाँ जहाँ पडि होतिं उनहि जगहोँ से अबु अय्युब रजियल्लाहु अन्हु खाना खाते[2]।यह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्मसे शदिद मोहब्बत कि निशानि है, सहाबाए केराम रजियल्लाहु अन्हुम आप स बेहद मोहब्ब्त रखते थे, हमे भि इसि तरह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म से मोहब्बत करना चाहिए और हजरत अय्युब जिस तरह खाने मे आपकि उङ्लियोँ के निशानात ढुन्डा करते थे इसि तरह हमैँ भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि सुन्नतोँ पर अमल करना चाहिए।

---

[1] मुस्लिमः(3/1623-1624)हदिस नम्बरः(2053)

[2] मुस्लिमः(3/1623-1624) हदिस नः (2053)

अन्सार व मोहजेरीन मे भाईचाराः

शिक्षकः मदिना मे रहने वाले वह मुसलमान अन्सार कहलाते हैं जिन्होनें मक्का से आए हुवे मोहाजिर सहाबा का स्वागत किया, मोहजिरीन सहाबा वह हैँ जिन्होनें मक्का से मदिना हिज्रत कि, अमने मालो दौलो दौलत, जाएदाद व मिलकियत को खैरबाद कह कर जिर्फ इस्लाम कि हिफाजत के लिए मदिना आए थे। अल्लाह तआला ने इस सुरते हालको कुरआन मे युँ बयान कियाः

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

अनुवादः (फै का धन) उन गरिब मुहाजिरों के लिए है जो अमने घरोँ से निकाल दिए गए और अपने सम्पत्ति से बेदखल कर दिये गए हैं, वे अल्लाह कि रहमत और खुशि के इच्छुक हैं और अल्लाह (तआला) कि और उस के रसुल कि मदद करते है, यही सच्चे लोग हैं।

और उनके लिए जिन्होने इस घर में यानि मदिने मे और इमान मे उनसे पहले जगह बना लिया है और अमनि तरफ हिजरत करके आने वालों से मोहब्बत करते हैं और मोहाजिरोँ को जो कुछ दे दिया जाए उस से वह अपने सिनोँ मे कोई संकोच नहि करते, बल्कि खुद अपने उपर उनको प्राथमिकता देते हैं

चाहे खुद उनको कितनि हि ज्यादा जरूरत हो। बात यह है कि जो भि अपने नफ्स कि कन्जुसि से बच गया वहि कामयाब है। (सुरतुल हश्रः8-9)

विधार्थीः मोहाजिरोँ के लिए तो यह निहायत हि तक्लिफदह बात रहि होगि ना उस्तादे मोहतरम ! आखिर उन्होने उस बेसरो सामानि कि स्थिति मे कैसे जिन्दगि गुजारि होगि ?

शिक्षकः वाकइ मोहाजिरीन के लिए यह बहोत हि तक्लिफ कि बात थि, खास तौर से जब वह मदिना आए तो देखा कि यहाँ के लोग खेति बाडि से अपनि रोजगारि का बन्दोबस्त करते है जबकि उन मोहाजिरिन के पास उसका बहोत थोडा तजरबा है। कयोँ कि उनहें अक्सरो बेश्तर तेजारत से सरोकार रहा करता था। उसमे भि वह लोग अपने जन्मभुमि को छोडने का गम भि उन्हे सताता था। गोया वह अति दायनिय स्थिति से गुजर रहे थे।

विधार्थीः यकिनन् बडे मुश्किल हालात रहे होंगे। लेकिन अल्लाह ने जरूर उनके साथ आसानि कि होगि। अल्लाह के रास्ते मे मोहाजिरीन कि यह कुरबानियाँ देख कर उनके लिए हमारि मोहब्बत और ज्यादा हो गई है।

शिक्षकः अल्लाह तआला ने अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म मर जिस धर्मको अवतरण किया था वह धर्म हमे मोहब्बत, एकजेहति, खैरो भलाई मे आपसि मदद कि तालिम देता है, यह धर्म अपने मानने

वालोँ कोँ मुश्किल हलात मे अपने भाइयोँ के काम आने पर उभारता है। अन्सारे मदिना ने अपने मोहजिर भाइयोँ के प्रति जो कुरबानियाँ दिँ वह बडे अहेम और काबिले जिक्र हैँ जिनसे आप अन्करीब वाकिफ होने वाले हैं। लेकिन उससे पहले आइए हम यह जानते है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने उस बोहरान और परेशानि को कैसे दफा किया, उसके दफा के लिए कौनसा तरीका अपनाया।

पहलि बात यह कि मक्का छोडने पर मोहाजिरीन को जो गम था और मक्का से उनकि जो दिलि मोहब्बत थि उस के इलाज के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने अल्लाह तआला से यह दुवा किः

अनुवादः ए अल्लाह जिस तरह तुने मक्का को हमारे लिए महबुब बनाया उसि तरह बल्कि उस से भि ज्यादा मदिना को हमारे लिए महबुब बना दे। उसे बिमारियोँ से पाक कर दे और उस के साअ मुद्द मे हमारे लिए बरकत नाजिल फरमा।

मोहाजिरिन के दिलोँ मे मक्का के लिए जो मोहब्ब्त थि आपने उसके इलाज के लिए अल्लाह तआला से यह दुवा कि के उनके दिल मे मक्का कि तरह या उस से भि ज्यादा मदिना कि मोहब्बत डाल दे उन्हेँ। उन्हें मदिना का हवापानि रास नहि आ रहा था उसका इलाज भि आपने उस दुवा से कि के अल्लात मदिनाको बिमारियोँ से कर दे। और उनके नाप-तौल के पैमाने साअ मे बरकत अता नाजिल फरमा। यह उनके यहाँ इसि तरह के पैमाने थे जैसे कि अपने यहाँ किलो और ग्राम होते है।

विधार्थीः क्या उसके बाद वह मदिना से मोहब्ब्त करने लगे ?

शिक्षकः हाँ उस दुवा का यह असर हुवा कि उनके दिल मे मदिना कि मोहब्बत बैठ गई, उनकि बिमारियाँ दुर हो गई और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के दुवा का नतिजा है कि आज तक मदिना के रिज्क मे बरकतेँ पाइ जाति हैँ।

दुसरि बात यह कि मोहाजिरीन कि जिन्दगि के दिगर परेशानियो का इलाज आपने युँ किया कि अन्सार व मोहाजिरीन के दरमेयान भाईचारा कायम किया। विध्दवान कहते हैँ कि भाईचारा काएम करने कि वजह यह थि कि उस के जरीए मोहानिरीन के दिलोँ से अजनबियत खत्म हो जाए और बेवतनि का खौफ मिट जाए। परिवार और घरबार छोडनेके गम से उबर
सकें और सब मिलकर एक दुसरे कि मदद कर सकें[1]। इस लिए हमे भि दुसरे मुसलमानो के साथ भाई कि तरह बरताव करना चाहिए[2]।

विधार्थीः उस्तादे मोहतरम ! अन्सारे मदिना ने उस भाई चारगि को किस तरह कुबुल किया ?

---

[1] इब्ने हजर, फतहुलबारिः(7/270)

[2] शिक्षक को इस जगह पर इस्लामि भाईचार और जिवनमे उसके अमलि नमुने को प्रश्ट करना बताना चाहिए और यह भि बताना चाहिए कि मुस्लिम समाजमे हमे एक दुसरे के एहतराम आपरि मदद और भलाई कि हर मुम्किन कोशिश करनि चाहिए।

शिक्षकः अन्सार सहाबा और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म के प्रति वफादार थे, उनके अन्दर सहाबाए केराम के प्रति मोहब्बतो उल्फत और जाँनेसारि पाया जाता था, मोहाजिरीन अपने परिवार और खानदानको अलविदा कह कर मदिना चले आए थे। अन्सारे मदिना ने इन्तहाई मोहब्बत, बेशरण इज्जतो एहतराम और हद दरजा तआउन के साथ उनका इस्तकबाल किया जिस के जरिए अल्लाह ने उनका गम दुर कर दिया, अल्लाह ने अन्सारे मदिना के बारे मे कुरआन मे फरमायाः

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا
وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِه فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

अनुवादः और उनके लिए जिन्होने इस घर में यानि मदिने मे और इमान मे उनसे पहले जगह बना लिया है और अमनि तरफ हिजरत करके आने वालों से मोहब्बत करते हैं और मोहाजिरोँ को जो कुछ दे दिया जाए उस से वह अपने सिनोँ मे कोई संकोच नहि करते, बल्कि खुद अपने उपर उनको प्राथमिकता देते हैं चाहे खुद उनको कितनि हि ज्यादा जरूरत हो। बात यह है कि जो भि अपने नफ्स कि कन्जुसि से बच गया वहि कामयाब है। (सुरतुल हश्रः9)

विधार्थीः अल्लाह कि कसम हमारे दिल मे अन्सारे मदिना के प्रति बहोत हि ज्यादा मोहब्बत हो गई है।

शिक्षकः मोहनिरीन सहाबा के प्रति अनसारे मदिना कि वफादारि व जाँनेसारि का अन्दाजा इस वाकया से बखुबि लगाया जा सकता है के जब नबि सल्लल्लाहु अलैहस व सल्लम ने अब्दुर रहमान बिन औफ और साअद बिन रबाअ रजियल्लाहु अन्हुम के दरमेयान भाईचारा काएम किया तो अन्सारि सहाबि अब्दुर रहमान बिन औफ से कहा किः मै अन्सारे मदिना मे सब से ज्यादा मालदार हुँ, मै अपना माल दो हिस्सोँ मे बाँट देता हुँ (आधा आपके लिए और आधा मेरे लिए)[1]।

विधार्थीः साअद बिन रबिअ अन्सारि रजियल्लाहु अन्हु ने तो बहोत हि सखावत और वफादारिका मोजाहेरा किया।

शिक्षकः इसि लिए तो अल्लाह तआला ने अन्सार कि तारीफ मे यह आयत नाजिल किः

अनुवादः खुद अपने उपर उनको प्राथमिकता देते हैं अगर चे उनको खुद कितनि भि जरूरत हो।(सुरतुल हश्रः9)

लेकिन दिलचस्प बात यह भि है कि अब्दुर रहमान बिन औफ ने उस नवाजिश और फैय्यानि मे अपनु दिलचस्पि नहि दिखाई और ना हि उसे गनिमत जानकर फौरन कुबुल कर लिया, बल्कि उनसे कहा किः अल्लाह तआला आपके मालो दौलत और आलो औलाद मे बरकत अता फरमाए। आप मुझे बाजार का

[1] बुखारिः(3/83) हदास नः(3780)

रस्ता बता दें बस। उसके बाद बाजार जाकर उन्हों ने खरिदो फरोख्त किया और बहोत सा मोनाफा साथ लेकर लाटे।
विधार्थीः इब्ने औफ रजियल्लाहु अन्हु का यह अन्दाज भि काफि निराला और पसन्दिदा है। अल्लाह कि कसम उन सहबा ने हमारे लिए सखावतो फैय्याजि और बे नेयाजि के अजिबो गरिब नमुने छोडे हैँ।
शिक्षकः सहाबा ए केराम कि जिन्दगि हमारे लिए एक मदरसा है, जहाँ हमे यह तालिमि है कि एक दुसरे के साथ किस तरह बरताव करें, आपस मे कैसे शफ्कतो मोहब्त के साथ पेश आएँ, और अपने भाइके माल का गलत इस्तेमाल करने और उसपर बुरि नजर रखने बजाए उसकि हिफाजत कैसे करेँ।
नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने मे मदिना का मुस्लिम मोआशरा आपसि उखुवत व भाईचारा, मोहब्बत व भलाईका बेहतरीन नमुना था, उनके के दरमयान किसि तरह कि अदावत व दुश्मनि और बुग्ज व नफरत ना थि, वह सहि मानोँ मे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहने का हकदार थे। उन तमाम सहाबा से मोहब्बत रखना हमारे इमानका वाजिबि हिस्सा है।

मिसाके मदिनाः

मदिना मे औस व खजरज कबिला के एलावा कुछ यहुदि भि बसते थे, अब चुँकि इक्तेदार मुसलमानोँ के हाथ मे आ चुका था इस लिए रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन यहुदियोँ के साथ एक मोआहिदा किया जिस मे उन्हेँ दिन व मजहब कि आजादि दि गई थि और उनके जानो माल को तहफ्फुज फराहम किया गया था, और मसो फरेब से बचने कि तरकिबे भि मद्देनजर रखि गई थि।
नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब से पहले अन्सार व मोहाजिरीन के दरमेयान अहदो पैमान कराया। उस अहदो पैमान के कुछ अंश निम्न प्रकार हैः
-हर मोमिन जालिम के खेलाफ होगा चाहे वह अन्सारि हो या मोहाजिर।
कोई मोमिन किसि मोमिनको काफिर के बदले कत्ल नहि करेगा और ना हि किसि इमानवाले के विरूद्ध किसि काफिर कि मदद करेगा। (ऐसा इस लिए कहा क्योँ कि तमाम सहाबाके सारे रिश्तेदार मुसलमान नहि थे)
-तुम्हारे दसमेयान जो भि इख्तेलाफ रौनुमा होगा उसे अल्लाह तआला और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तरफ पल्टा जाएगा। इसका मतलब यह है कि किसि मोआमला मे जब मुसलमानोँ के दरमेयान एख्तेलाफ हो जाए तो फैसला सिर्फ अल्लाह कि केताब और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके फरमान से होगा। उन दो के उलावा जाहिलियत के किसि भि फैसले और नेजामको नहि माना जाएगा।
आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहुदियोँ से भि एक मोआहिदा ताकि उन के उनके मकरो फरेब से महफुज रहा जा सके और उन्हें उनके अधिकार दिए जाएं, और सारि इन्सानियत अमनो सलामति कि

सआदतौँ और बरकतौँ से फाइदा उठा सके और उसके साथ हि मदिना और उसके आसपास का इलाका आपस मे मुत्तहिद हो जाएँ।

इस मोआहिदा के अहम अंश यह है:

यहुद अपने धर्म पर और मुसलमान अपने धर्म अनुसार चलेङ्गे। इसका मतलब यह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्लाम कुबुल करने के लिए उनको मजबुर नहि किया और नाहि उनसे इस्लाम या जङ्ग मे से किसि एकको एख्त्यार करने का मोतालबा किया, ब्लिक उन्हें अमने धर्म अनुसार चलकने मि आजादि दि सिवाए उन लोगों के जो अपनि मर्जि से इस्लाम कुबुल करना चाहता है तो उसके लिए कोई रूकावट न थि। यह उनके साथ अदल व इन्सास का बहोत बडा उदाहरण है जिसे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद करके दिखाया।

-कोई यहुदि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अनुमति के बिना मदिना से बाहर नहि जाएगा।

उसकि वजह यह थि कि उनकि मक्कारि से बचा जा सके और यह पता रहे कि कौन आरहा है और कोन जा रहा है।

जो मदिने से निकल गया वह अमन मे है और जो मदिना के अन्दर रहेगा वह भि अमन मे होगा सिवाए उसके जो त्याचार करे।

यानि जो मदिना से निकल जाए उसपर कोई मुसलमान जुल्म नहि कर सकता और ना हि उसके घरवालोँपपर या मालो दौलत पर कोई ज्यादति कि जाएगि। इसि तरह से जो मदिना के अन्दर हि रहेगा वह भि अमन मे है, कोई भि उसपर अत्याचार नहि करेगा, हाँ जो अत्याचार करेगा वह अमान मे नहि है उसको अत्याचार का बदला चुकाना होगा।

विधार्थिः यह एक बेहतरीन मोआहिदा है जिसमे किसि के भि खेलाफ अत्याचार कि इजाजत नहि दि गइ।

शिक्षकः यकिनन् इस्लाम अत्याचार के खेलाफ है चाहे वह किसिपर भि हो। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने अल्लाक कि तरफ से इस धर्मको दुनियाँ वालोँ के सामने पेश किया ताकि तमाम लोगोँ को कुफ्र कि तारिकि से निकालकर इस्लाम कि रोशनि कि तरफ लाएँ और सबके सब अमनो सलामति के साथ जन्नत मे प्रवेश कर सकेँ। आपका यह मकसद बिलकुल न था कि लोगोँ से लडाइ झगडा किया जाए।

वाधार्थिः इस्लाम एक सुन्दर और बेहतरिन धर्म है। हम अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करते हैँ कि उन्होने हमे मुसलमान बनाया। क्या नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरफसे से लिखा हुवा यह अहेदनामा सबने जुँ के तुँ मान लिया किसि ने उसकि मोखालेफत नहि कि ?

शिक्षकः उस मोआहेदे मे यहुदुयोँ के अधिकारको सुरक्षित किया गया था और उनके साथ अदल व इन्साफका मामला बरता गया मगर उन्हे उसके खेलाफ काम किया और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

के विरूध्द मुश्रिकीन से साँठगाँठ कि और खयानत पर उतर आए और मदिना के अन्दर बद अमनि और फसाद फैलाने लगे जिस के नतिजे मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उन्हे देश निकाला कर दिया। इस कि तफ्सिल आगे आएगि इन्शाअल्लाह

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका ठिकानाः

जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबु अय्युब अन्सारि रजियल्लाहु अन्हु के घर मेहमान थे उसि दौरान आपने अपना घर बनाया, जिसका दवाजा मस्जिदे नबवि कि तरफ खुलता था उसि घरमे आपने हजरत आईशा रजियल्लाहु अन्हा से शादि कि थि[1]। आपके घरमे सिर्फ एक हि कमरा था।

मदिना आने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई शादियाँ किं, आपकि बवियोँ कि तादाद नौ थि, अल्लाह उनसब से राजि हो। उनके नाम क्रमशः सौदाह, आईशा, हफ्सा, उम्मे सलमा, जैनब बिन्ते जहश, उम्मे हबिबा, जोवैरिया, सफिया और मैमुना था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात हुई तो यह नौ बिवियाँ जिन्दा थिँ[2] यह सब के सब तमाम इमानवालोँ कि माँ हैं।

आप आदमिको सिर्फ चार शादियाँ करने कि अनुमति है नेकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको अल्लाह कि तरफ से चार से ज्यादा बिवियाँ रखने कि इजाजत थि। यह आपके उन खुसुसियात मे से है जिन से अल्लात तआला ने आपको आम लोगोँ के मोकाबले फजिलत दि थि। यह अल्लाह तआलाका आपके प्रति खास फज्ल व इन्आम था।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिवियोँ के रहने कि जगह कहाँ थि ?

शिक्षकः वह अपने अपने हुज्रे मे रहा करति थिँ, यानि हर एक के पार एक खास कमरा था। जब जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नई शादि करते तब तब एक नया कमरा बनाते। अब उन हुजरोँ के स्थान पर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि कबर मोबारक और उसके आसपास कि जगह है।

विधार्थिः आपने ने हमे बताया था कि हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा से आपको कइ सन्तान थिँ, क्या आपकि और भि सन्तान थिँ ?

शिक्षकः आपका यह सवाल बहोत अच्छा है। हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हा के एलावा किसि भि बिवि से आपको कोई सन्तान न थि। लेकिन मिस्र का राजा मकोकस ने आपको मारिया किब्तिया नामि एक कनिज हदिया किया था जिन से सन 8 हिज्रि मे इब्राहिम पैदा हुवे थे, जो कि बचपने हि मे इन्तेकाल कर गए[3]।

अस्हाबुस सुफ्फाः

शिक्षकः सुफ्फा उस जगह को कहते हैँ जो मस्जिदे नबवि के आखरि हिस्से मे थि, इस जगह पर मुसलमानोँ कि एक जमात रहति थि जो इबादत व कुरआनो हदिस कि तालिम मे मश्गुल रहते थे। उनकि तादाद 70

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकात अलकुबराः(1/240)

[2] इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(9/113)

[3] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(1/202) इब्ने साद, अत्तबकात अल कुबराः(8/19-39)

के करिब थि। वह इबादत व इल्म के खातिर सब कुछ से अलग हो गए थे लेकिन उसके बावजुद भि जेहाद मे शरिक होने से पिछे नहि रहे। उन्हि मे से हजरत अबु हुरैरह रजियल्ल्हु अन्हु भि हैं।

वफुद कि तालिमः

शिक्षकः कुछ कबिले बाहर से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाकात के लिए आते थे और कुछ कबिले इस्लाम कुबुल करने का एलान भि करते।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! वुफुद का क्या मतलब ?

शिक्षकः जो कहिँ बाहर से आए उसे वारिद या वाफिद कहते हैँ, वफुद उसि का बहुबचन है, जिसका माना होता है अपनि कौम और कबिले कि नुमाइन्दगि करने वालि जमात और डेलिगेशन।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वफूदका स्वागत करते और उन्हे दिनि तालिम देते थे फर वह लोग अपने अपने कबिले मे जाकर लोगोंको इस्लाम कि बातें बताते थे। मदिना आने वाले उन्हि वफूद मे मालिक बिन होवैरिस का वफ्द भि था वह कहते हैँ किः मै अपनि कौम कि एक जमात के साथ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे हाजर हुवा और आपके पास 20 दिन ठहरा, आप बहोत हि रहेम दिल और मुश्फिक थे, जब आपने देखा कि हमेँ घरवालोँ कि याद आ रहि है और हम उनसे मिलने को बेताब हैँ तो आपने फरमायाः आप जाकर अपने घरवालोँ के से साथ रहेँ उन्हे दीन कि तालिम दें और नमाज काएम करें.....[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वफ्द अब्दुल कैसको भि यहि नसिहत कि केः (अपने अहले खाना से जा मिलेँ और उन्हे दीन कि तालिम दे[2]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! सहाबिए रसुल कि यह बात काबिले तवज्जोह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहेमदिल और मेहरबान थे।

शिक्षकः यकिनन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहेमदिल और मेहरबान थे, जो कोइ भि आपके साथ रहता या आप से मिलता या आपके साथ उठता-बैठता आप उसके साथ मोहब्बत व नरमि से पेश आते। आप लोगों के जरूरियत का पुरा पुरा ख्याल रखते थे, जब आपको लगता कि आपके पास आने वाले वफूद इस्लामि तालिम और शरई उमूर से वाकिफ हो गए तो आप उनसे कहते थे किः अपने कौम और अहले खाना के पार लौट जाएँ और उन्हे यह तालिमात सिखाएँ। क्योँ कि आप जानते थे कि लोग अपने घर वालोँ से मिलने के बेताब होते हैँ, हर किसि कि अपनि जरूरियात होति हैं और सब के साच काम काज

---

[1] बुखारिः (1/211) हदिस नः(628)

[2] बुलारिः(1/48) बाद नम्बरः(25)

और कमाई के मसाएल हैं इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ मोहफ्फत व नरमि का मोआमला करते।
इस से हमे यह भि यह तालिम मिलति है कि हम भि दुसरौँ के साथ कैसे पेश आएँ, उनके हालात जानने कि कोशि हरें और उनकि जरूरियात का पार लेहाज रखैं, उनके साथ नरमि और रहेम दिलि से पेश आएँ, जैसा कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न कबलौँ और वफूद के साथ किया करते थे।

लोगौँ को दीन की तालिमः

शिक्षकः इस्लाम कि आमद से पहले बहुत कम लोग पढना लिखना जानते थे, मक्का के अन्दर सिर्फ 17 ऐसा लोग थे जिन्हेँ पढना लिखना आता था, मदिना मे भि एसे लोगौँ कि तादाद बहोत कम थि[1]।
विधार्थिः गोया तालिम कि शरह बहोत कम थि।
शिक्षकः हाँ, तालिमि गिरावट बहोत ज्यादा थि, लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बेअसत और इस्लाम आने के बाद तालिम आम होने लगि और पढने लिखने वाले लोगों कि तादाद काफि बढ गई, क्यौँ कि इस्लाम ने तालिम पर उभारा है। अल्लाह तआला का फरमान है किः
अनुवादः पढें अपने रबके नाम से जिस ने पैदा किया। जिस ने इन्सान को खुन के लोथडे से पैदा किया। तु पढता रह, तेरा रब बडा करम कने वाला है। जिसने कलम के जरिए इल्म जिखाया। जिसने इन्सानको वह सिखाया जो वह नहि जानता था।(सुरतुल अलकः1-5)
नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः जो इन्सान शिक्षा प्राप्ति के लिए किसि राहपर चल पडता है अल्लाह उसे जन्नत के किसि एक रास्ते पर गला देता है[2]।
शिक्षकः उस्तादे गरामि ! शिक्षा प्राप्ति पर अल्लाह तआला इतना बडा सवाब से नवाजता है, यह लोगों के तालिम के लिए तलबे इल्म के लिए उभारता है, क्या ऐसा नहि है उस्तादे मोहतरम ?
शिक्षकः आपकि बात बिल्कुल दुरुस्त है, बेशक अल्लाह के नजदिक तलबे इल्म कि बडि अहमियत है, क्यौँ कि आलिम शख्स लोगौँ को खैरो भलाई कि तालिम देता है, जब कि कोई भि इन्सान उसि वक्त आलिम हो सकता है जब उसके पास वह इल्म मौजुद हो जिस से ओलमा लैस होते हैँ। इस लिए आप भि हुसुल इल्म के हरीस मन्द हैँ। अल्लाह का फरमान हैः
अनुवादः अल्लाह तआला तुम मे से उन लोगौँ का जो इमान लाएँ है दरजा बुलन्द कर देगा और अल्लाह हर उस काम से वाकिफ है जो तुम कर रहे हो खुब वाकिफ है।(सुरतुल मोजादलाः 11)

---

[1] अल बलाजरिः फत्हुल बुलदानः(660-663)
[2] अबु दाउदः(4/57-58) हदिस नः(3641)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगोँ को दीन के अहकाम व अवामिर जरूर सिखाते लेकिन उस में भि आप हिक्मत व दानिशमन्दि से काम लेते और इस्तेआत से ज्यादा उनपर बोझ नहि डालते थे ताकि उन्हेँ उक्ताहट और मलाल ना हो। अब्दुल्लाह रजियल्लाह रजियल्लाहु अन्हु जब लोगोँ को वाअज करते तो कहते किः
मै तुम्हे समय समय से नसिहत करता हुँ जिस तरह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमे समय समय से नसिहत करते थे ताकि उक्ताहट ना हो[1]। यानि तुम्हे वाजो नसिहत करने और दीन कि तालिम देने के लिए मै मोनासिब वक्त कि तलाश मे रहता हूँ और तुमपर जरूरत से ज्यादा बोझ नहि लादता। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यहि उस्वा रहा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेँ तालिम देने के लिए मोका कि तलाश मे रहते थे ताकि हमे मलाल ना हो।

भाला और तीरका खेलः

शिक्षकः सहाबाए केराम भाला और तीर से खेला करते थे, भाला और तीर जङ्ग के हतियार है। वह उस खेल के जरिए तिरबाजि कि मश्शाकि करते थे ताकि जब जङ्ग कि नौबत आए तो दीने इस्लाम का देफा और अपनि जानोँ का बचाव कर सकेँ।
आइशा रजियल्लाहु अन्हा कहति हैः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैने देखा कि आप मेरे हुजरे के दरवाजे पर खडे होकर मस्जिद के अन्दर जङ्गि हतियारोँ से खेल रहे हबशियोँ को देख रहे हैं। हबशि से मुराद वह सहाबा हैं जो इस्लामि मुल्क हबशा के बाशिन्दे थे।

बच्चोँ से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मोहब्बतः

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चोँ का खास ख्याल रखते थे, आप उनसे मोहब्बत करते, उन्हे प्यार करते, उनके साथ हंसते खेलते और उन्हे अपनि सवारि पर बिठाते थे।
विधार्थिः क्या बच्चे उस समय भि खेला करते थे ?
शिक्षकः हाँ बिल्कुल बच्चे खेलते थे, बल्कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हे अपने साथ खेलाते थे।
विधार्थिः यह तो बहोत हि अच्छि बात है, लेकिन उस्तादे मोहतरम उसका क्या तरिका होता था ?
शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चोँ से बहोत ज्याद प्यार करते थे, कभि जब उन्हे राह चलते देखते उन्हे प्यार देते और अपनि सवारि पर बिठाते थे।

---

[1] बोखारिः (1/42)

विधार्थिः यह बहोत दिलचस्प बात है । यकिनन् नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मोतवाजे और खाकसार इन्सान थे, क्या आप हमे इस सिलसिले मे मजिद तफ्सिल बता सकते हैं ?
शिक्षकः क्योँ नहि जरूर, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अब्दुल्लाह, ओबैदुल्लाह और हजरत अब्बास रजियल्लाहु अन्हु के दुसरे बेटोँ को लाइन मे खडा कर देते और फरमाते किः जो मुझसे जित (दौडमे) जाएगा उसको फलाँ चज इनाम मिलेगा। फिर यह सारे बच्चे आपके पिठ और सिने पर लद जाते और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको बोसा देते[1] ।
विधार्थिः बहोत खुब, हमे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तवाजो बहोत पसन्द आया।
शिक्षकः इस लिए आप सबपर भि यह अनिवार्य है कि अपने छोटोँ के साथ नरमि से पेश आएँ और घमण्ड से दूर रहे, बल्कि उनके साथ खेलेँ, उन्हे अपना प्यार देँ, उनके साथ नरमि बरतेँ, उन्हेँ हँसाए खेलाएँ, उन्हेँ खुशि देँ और उन्हे तक्लिफ पहोँचाने से बाज रहेँ जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका तरिका था।
विधार्थिः उस्तादे मोहतरम आपने बहोत हि अच्चदि रहनुमाइ कि।
शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चोँ को खेलाते और उन्हे अपनि सवारि पर बिठाया करते थे, सवारि से मुराद वह चौपाया है जिस पर इन्सान सवार होता है जैसे घोडा, उँट, गधा आदि।
अल्लाह तआल फरमाते हैः
अनुवादः घोडा, गधा, खच्चर कोसने तुम्हारि सवारि के लिए पैदा किया है जो जिनत के बाइस भि हैँ। और वह ऐसि चिजे पैदा करता है जिसका तुम्हे इल्म भि नहि।
बच्चे आपसे वैसि हि माहब्बत रखते थे जैसा कि आप उनसे मोहब्बत करते थे। जब आपकिसि सफर से वापर आते या आपको राह चलते देखलेते तो दौडते हुवे आपके पास आते और आप उन्हेँ अपनि सवारि पर बिठा लेते। अब्दुल्लाह बिन जाफर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ किः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसि सफर से वापर होते तो सबसे पहले हम हि आपक इस्तक्बाल करते। एक मरतबा आपकिसि सफर से लौटे हि थे कि मुझसे और हसन या हुसेन से मुलाकात हो गई, आपने अपनि सवारि पर एक को अपने आगे और दुसरेको अपने पिछे बिठा लिया[2] इस तरह आप दोनोँ के बिच मे बैठे रहे।
विधार्थिः यह बहोत हि बेहतरीन बात है, हालांकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मकाम व मरतबा बहोत बुलन्द था उसके बावजुद आप बच्चोँका स्वागत करते, उनका इस्तक्बाल करते, आप उन्हे गोद मे लेते और सवारि पर बिठाते, बेशक यह बहोत किमति और नफिस बात है।

[1] अहमदः(1/214)

[2] मुस्लिमः(4/1885) हदिस नः(1427-1428)

शिक्षकः यकिनन् यह निहायत हि किमति और उम्दा बात है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चोँ को इस कदर महबुब रखेँ और उनका इतना ज्यादा ख्याल रखे। हमे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस बरताव से यह सबक मिलता है कि हम भि अपने छोटोँ के साथ मोहब्बत व नरमि का ममला करेँ, उन्हे प्यार देँ और उनपर गुस्सा ना करेँ।

एक दिन आपकिसि सहाबि के यहाँ दावत मे जा रहे थे कि हजरत हुसेन रजियल्लाहु अन्हु रास्ते मे खेलते हुवे मिल गए, दौडकर आपके साथियोँ के सामने आगए, आपने अपना हाथ फैलाया और आपका इस्तक्बाल किया, वह इधर उधर दोडते रहे और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हे हँसाते खेलाते रहे। बाला आखिर आपने उन्हे गोद मे उठाकर सिने से लगा लिया और जो हुसेनको महबुब रखेगा अल्लाह उससे मोहब्बत करेगा[1]। हजरत हुसेन रजियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि प्यारि बेटि हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा के बेटे हैँ जिनसे हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु कि शादि हुइ थि।

गौर करने कि बात है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस बच्चे से कितनि मोहब्बत करते थे , आपने किस अन्दाज मे राह चलते हुवे उनको प्यार दिया और गोद मे उठाया। हमेँ भि इसि तरह बच्चोँ से प्यार करना चाहिए क्योँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे प्यार करते थे। हमे हुसेन रजयल्लाहु अन्हु से मोहब्बत रखना

चाहए क्योँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हेँ महबुब रखते थे, साथ हि साथ हमें तमाम सहाबा से मोहब्बत रखनि चाहिए।

वाधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! क्या छोटे बच्चे उस समय भि मस्जिदोँ मे जाया करते थे जैसा कि आजकर जाते हैँ ?

शिक्षकः हाँ बच्चे उस समय भि मस्जिद जाया करते, आप इस वाकया पर गौर करेँ कि आपके सामने हकिकत वाजेह हो जाए, अबुकतादा रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ किः हम मस्जिद मे बैठे हुए थे कि इसि बिच नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनि नवासि ओमामा बिन्ते अबिल आस बिन रबिअ (जो आपकि बेटि जैनब कि बेटि थिं) को लिए हुवे तशरिफ लाए, वह अभि छोटि थिं और आप उन्हें अपने कन्धे पर उठाए हुवे थे। जबप रूकु मे जाते तो उन्हे कन्धे से उतार देते और जब आप कयाम करते तो कन्धेपर उठालेते, इसि तरह आप अपने अपनि नमज मोकम्मल कि[2]।

विधार्थिः यह बहोत प्यारा वाकया है आप उन्हें कन्धेपर उठाते ? इसका क्या मतलब ?

शिक्षकः कन्धा उस जगहको कहते हैँ जो मोन्ढासे उपर और सर के निचे हो।

---

[1] बुखारि, अल-अदबुल मुफरदः(1/459-460) हदिस नः(463)

[2] अबु दाउदः सहि सुनन अबि दाऊदः 918

हजरत बुरैदा रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमे खेताब फरमाते और उस बिच हसन और हुसैन आजाते, वह लाल रङ्ग के कपडे पहने होते और चलते तो लडखडाकर गिर जाते, आर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर पर से उतरकर उन्हे उठाकर अपने सामने रखते, फिर फरमाते कि अल्लाह ने बिल्कुल सहि फरमायाः

तुम्हारे माल और औलाद फित्ना हैँ। जब मैने इन दोनो बच्चोँ को चलते और लडखडाते हुवे तो मुझसे रहा न गया, मैने अपनि बात छोडकर उनको जाके उठाया। आप गौर करेँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चोँ पर किस कदर ध्यान देते थे, यहाँ तक कि खुतबा और नमाज के अन्दर भि उनका ख्याल रखते और इबादत के दरमेयान भि उनपर शफकत व मोहब्बत करते[1]।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमके पार बच्चोँ को लाया जाता और उन्हें दुवा देते[2]। बच्चों के लिए बरकत कि दुवा करते और उनके सरपर हाथ फेरते, हजरत साएब बिन यजिदका बयान है किः मै अपनि खाला के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे हाजिर हुवा, मेरि खाला ने कहा किः ऐ अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह मेरि बहेन का बेटा है, हजरत साएब बिन यजिद कहते हैँ कि आपने मेरे सरपर अपना हाथ फेरा और मेरे लिए बरकत कि दुवा कि।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस प्यार व शफकत व मोहब्बत भरे अन्दाजा होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चोँ से कितनि ज्यादा मोहब्बत करते थे, उन्हे कितना प्यार करते और हँसाते खेलाते थे।

विधार्थिः जैसे हमे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी के बारे मे ज्ञान होरहा है वैसे वैसे हमे हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहम्मत बढति जा रहि है।

शिक्षकः हम तो उस वक्त तक इमान वाले नहि हो सकते जब तक कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनि जान से भि ज्यादा मोहब्बत ना करने लगें। और ऐसा क्योँ ना हो जब कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको हमारे दयावान बनाहर भेजा था बल्कि आप दोनो जहाँ के लिए और हर चिजके लिए रहमत बनाकर भेजे गए।

---

[1] तिर्मिजिः (3774)

[2] बुखारिः(4/163) हदिस नः(6355)

पाँचवाँ अध्याय

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गजवात

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गजवातः

शिक्षकः गजवात से मुराद दुश्मनों से कि जाने वालि वह लडाईयाँ हैं जिन मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद शरिक हुवे। सरिया उस लडाइको कहते हैं जिस मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद शरिक नहि हुवे बल्कि किसि सहाबिको उसका कमान्डर बना के भेजा।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको को मदिना हिज्रत के बाद जङ्ग कि इजाजत दि गई[1]। यह अल्लाह कि राहमे जेहाद कि इजाजत थि।

विधार्थिः जेहाद कि जरूरत क्यों पडि उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः मेरे प्यारे बच्चों ! आपने अच्छा सवाल उठाया है, अल्लाह तआलाने अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको जेहाद कि इजाजत इस लिए दि ताकि इस्लाम के दुश्मनो कि जानिब से जो अत्याचार किया जाता था उसको रोका जा सके। गोया अल्लाह तआला मोजाहिदों के जरिए काफिरों के अत्याचार को दुर करता है। इन्शाअल्लाह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जङ्ग के बारे मे सुनकर यह हकिकत बिल्कुल वाजेह हो जाएगा कि लडाई सिर्फ दिनके दुश्मनो कि मक्कारि और अत्याचार को रोकने के लिए किया जाता था नाकि किसि पर जुल्म करने के लिए।

इस्लाम ना तो जुल्मको पसन्द करता है और नाहि उसको जारि रखना गवारा करता है बल्कि उस से मना करता है, और मोजाहिदों को यह तल्किन किरता है कि उनके जेहादका मक्सद लोगों पर जुल्म करना या उनका मालो दौलत हडप करना नहि है। अल्लाह तआला फरमाता हैः

अनुवादः अल्लाह कि राह मे उनसे लडो जो तुम से लडते हैं और ज्यादति ना करो, बे शक अल्लाह तआला ज्यादति करने वालों को पसन्द नहि करता है।(सुरतुल बकरहः190)

विधार्थिः यह इस्लाम कि खुबि है कि वह अत्याचारको पसन्द नहि करता।

शिक्षकः यकिनन् इस्लाम कि तमाम तालिमात बहोत हि अच्छे हैं, चाहे वह व्यहार के सिलसिले मे हो या अहकाम के सिलसिले मे। इसका व्यवहारिक नमुना इन्शाअल्लाह लडाइ के दरमेयान पेश आनेवाले वाकयात से समझ सकेङगे।

तब आपको यकिन हो जाएगा कि इस्लाम जुल्म, अधिकार हनन और अत्याचारि को किसि भि सुरत मे गवारा नहि करता।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गजवात कि संख्या कितनि है ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गजवात कि संख्या 27 है औ रहि बात सराया कि जिन्हें नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा कि कयादत मे भेजा तो उसकि संख्या 47 है[2]।

---

[1] इब्नुल कैय्यिम, जादुल मआदः(3/71)

[2] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुबराः(2/5-6)

गजवात और सराया कि संख्या ज्यादा है इसि लिए हम उनमें से चंदएक के बारे मे हि बात करेङगे।

गजवाए बदरः

शिक्षकः सिरिया से मक्का जाने वाले लोग मदिना के रास्ते से होकर गुजरते थे, कमसे कम मदिना के नजदिकि रास्ते से होकर तो उन्हेँ गुजरना हि पडता था।

चुँकि कोरैश ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबाए केराम को तक्लिफें पहोँचाइ थि और उन्हे अपने माल व जाएदाद, घर-बार और बाल बच्चोँ को छोडकर मक्का से निकल जाने पर मजबुर किया था इस लिए सहाबा ने इरादा किया कि जब कोरैश का तेजारति गिरोह मदिना से गुजरेगा तो वह उसे छेडेङगे।

जब मुसलमानोँ को मालुम हुवा कि कोरैशका तेजारति काफला सिरिया से आ रहा है तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से कहा किः कोरैशका यह काफला सामाने तेजारत के साच तुम्हारि तरफ आ रहा है, तुम उनकि तरफ निकल पडो[1]।

विधार्थिः हदिस मे "ऐरे कोरैश" (कोरैशका काफला) आया है इसका क्या मतलब ?

शिक्षकः ऐर का माना उँट होता है, इसका एक दुसरा माना काफला भि है, और काफला उँट कि सवारि करने वालि जमात को कहते हैँ जो उँटोँपर व्यापारिक सामान लादकर सफर कर रहे होते हैँ।

मुसलमान बदर कि तरफ निकल पडे जहाँ से कोरैशका तेजारति काफला गुजरता था।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अलि बिन अबि तालिब और अबु लुबाबा रजियल्लाहु अन्हुम बारि बारि से उक हि उँटपर सवारि करते थे, यहाँ तक कि वह बदर के मकाम पर पहोँच गए।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! यह तो बहोत हि मुश्किल और तक्लिफदह बात है।

शिक्षकः हाँ इसमे परेशानि तो जरूर थि लेकिन अल्लाह कि राहमे दीने इस्लाम कि बुलन्दि और लोगोँ को इस्लाम कि तरफ लाने के लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा ने खुशि खुशि उसको बरदाश्त किया। इससे हमे यह सबक मिलता है कि हम भि अपने दीनके लिए मेहनत व लगन से काम करें और इस रास्ते मे आने वाले हर मोशक्कत को झेलने के लिए तैय्यार रहेँ। इस्लाम कि खिदमत, हर फिल्डमे मुसलमानों कि रहनुमाई और अपने फन्ने महारत मे उनकि रहबरि के लिए तालिम कि राहमे पेश आने वालि हर तरह कि मुसिबतों पर सब्र से काम लेँ।

शिक्षकः इस तेजारति काफले का लिडर अबु सुफियान थे जो अभि इस्लाम नहि लाए थे, वह एक जेहिन और होशियार आदमि थे, इस लिए मदिना के मुसलमानों कि खबर लेते हुए आ रहे थे, यहाँ तक कि उन्हें मुसलमानोँ के उन अजाएम कि भि खबर लग गई, इस लिए अबु सुफियान जमजम बिन अम्र अल गेफारि

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/257-258)

नामि शख्सको मक्का भेजकर मक्का वालोँ को हालात से बाखबर कर दिया और उन्हे मकामे बदर पहोँने को कहा[1] ।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! क्या उन्होने यह खबर बदर के मकाम से भेजि थि ?

शिक्षकः नहि, बल्कि मदिना के रास्ते हि मे तो यह खबर भेज दि थि कि कौरैश अपने सब हतियार के साथ बदर के मकामपर जमा हो सकें ।

विधार्थिः क्या मुसलमानों को अबु सुफियान के यस काम कि खबर लग चुकि थि ?

शिक्षकः नहि, मुसलमानोँ को उसका कुछ इल्म न था के अबु सुफियान ने जमजमको मक्का भेजा है ताकि उनकि कौम को बुला भेजेँ।

गोया नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकलने का मकसद उन से लडाई करना नहि ता के आप पुरि तैय्यारि के साथ निकलते बल्कि आपका मकसद सिर्फ कोरैश के उस तेजारति काफलेको छेडना था इस लिए मुसलमान सिर्फ 313 कि संख्या मे निकले थे।

विधार्थिः यह एक खौफनाक हादसा है, क्या जमजम तेजि के साथ कोरैश के पार पहोँच गया था ?

शिक्षकः हाँ जमजम तेज रफ्तारि के साथ मक्का पहोँचा और उन्हेँ उसकि खबर दि, उसके बाद कोरैश के लोग अपने तमाम सरदारोँ और लोगोँ के साच बडि लश्कर कि शकल मे निकल पडे, उनमे से कोई भि मक्का मे नहि रहा सिवाए अबु लहब के, इस तरह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम को तक्लिफ पहोँचाने वाले तमाम कोरैश निकल पडे[2] ।

विधार्थिः क्या मुसलमानोँ को पता था कि कोरैश बदर के मकाम पर आ रहे हैँ ताकि वह भि मोकाबले कि तैय्यारि मे लग जाते ?

शिक्षकः हाँ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह मालुम हो चुका था कि कोरैश उनसे मोकाबला करने के लिए निकल चुके हैँ। आपके साच जो सहाबा थे आपने उनसे मशवेरा किया, उन्होँने आप से खैर कि बात कि।

जिन सहाबा ने उस मोके पर बात कि उनमे हजरत अबु बकर, हजरत उमर और मिक्दाद रजियल्लाहु अन्हुम भि थे। तमाम सहाबा ने इस बात पर इत्तेफाक किया कि जब कोरैश हमसे मोकाबला के लिए आएङ्गे तो हम भि पिछे नहि हटेङ्गे[3]।

जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बदर के मकाम पर पहोँचे तो कुछ सहाबा को दुश्मन के हालात पता लगाने के लिए बदर के भवँर पर भेजा, वहाँ दो गुलाम मक्कि लब्कर के लिए पानि भर रहे थे, उस से

---

[1] इब्ने हेशाम अस्सिरतुन नबवियाः(2/258)

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/262)

[3] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/262)

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह अन्दाजा हो गया कि कोरैश कसीब के पिछे हैं, कसीब से मुराद रेत का टिला है, जो कि मुसलमानों के पडाव के जगह से करिब हि था जिसे अल अद्वतुल कसवा कहा गया है जहाँ मुश्रीकिन पडाव डाले हुवे थे और यह मक्का कि दिशा मे वादि के आखरि सिरे पर था। जब कि मुसलमान मदिना कि दिशा से वादि के आखरि दहानेपर थे जिसे अलअदवातुद दुनिया कहा गया है।
आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पुछा कि कुरैश कितनि तादाद मे हैं? उन्होंने कहा किः बहोत हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया किः वह रोजाना कितना उँट जबह करते हैं? उन्होंने कहाः एक दिन नौ और एक दिन दस। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः तब उन लोगों कि तादाद नौ सौ से एक हजार के दरमेयान होगि[1]।
यह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बुद्धिमानि थि के आपने आपने उस तरिके से गौरो फिक्र करके अन्दाजा लगाया आर दुश्मनों के बारे मे जानकारि हासिल कि। उस से हमे यह भि फाइदा हासिल होता है कि अपने तमाम फिल्डमे हकिकत तक पहोंचने के लिए हमें भि सहि तरिके से गौर फिक्र करना चाहिए और अपने अकल कि बढोतरि पर तवज्जो देनि चाहिए और सोच विचार व भलाई के कामों मे उसे इस्तेमाल करना चाहिए।
विधार्थिः यह एक बहोत हि महत्वपुर्ण फाइदा है जो हमे अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि इस जिवनी से हासिल होता हे। लेकिन प्रस्न यह है कि जब मुसलमानो ने यह देखा कि उनके मोकाबले मे मुश्रिकिन कि संख्या काफि ज्यादा है तो क्या उन्हे डर नहि लगा?
शिक्षकः बिल्कुल नहि, मुसलमान हर गिज खौफजदह नहि हुए क्यों कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें कामयाबि कि उम्मिद दिला रहे थे और अच्छा गुमान कर रहे थे। आपने फरमायाः
अनुवादफ मक्का ने अपने जिगर के टुकडों को तुम्हारे सामने ला खडा किया है।
अफलाद के माना होते हैं कलेजि या गोश्त का वह टुकडा जिसे लम्बाइ मे काटा जाए। कलेजि को खास तौर से इस लिए जिक्र किय क्यों कि यह उँट के जिस्म का सब से बेहतरीन हिस्सा माना जाता है। गोयो जो लोग लडाई के लिए आए थे वह लोग कोरैश के सब से बडे सरदार और सब से रईस मालदार माने जाते थे जिस तरह कलेजि को उँटका सब से उम्दा और बेहतरीन हिस्सा समझा जाता है।
(अफ्लाज अक्बादहा) का मतलब यह है कि मक्का के सारे शरिफ और रईस आए थे। (व अल्कत इलैकुम) से यह मुराद है कि मक्का ने उन्हें तुम्हारे सामने ला खडा किया है। इस वाक्य के अन्दर एक तरह से उन शरिफों कि शिकस्त व नामुरादि कि तरफ इशारा भि है। इस पर भि बडि बात यह कि सहाबा बहादुर और निडर थे, उन्हे अपने रबपर पुरा भरोसा था और उसके साथ साथ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बजाते खुद भि मौनुद थे जिस कि वजह से उनके दिल मे इमानि जज्बा जोश मार रहा था।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(2/268-269)

विधार्थिः गोया नेक गुमान बहोत अहेम चिज है।

शिक्षकः यकिनन् नेक गुमान बहोत हि अहम चिज है। खास तौर से इस तरह के मुश्किल हालात मे। इन्सान जब बिमार हो तो शेफायाबि के लिए नेक फाल ले सकता है ताकि इलाज फाइदामन्द हो सके और ठिक होने कि उम्मिद बाकि रहे। विधार्थि याद करने कि क्षमता और पाठ समझने कि कुव्वत से अच्छा गुमान कर सकता है ताकि मेहनत और लगन से तालिम हासिल करे और उसके बुलन्दि हासिल करने मे उसको हौसला मिले। लेकिन जो व्याक्ति बार बार यह बात दोहराए कि वह पाठ समझ नहि पाता है या उसे सबक याद नहि होता है वह दरअसल खुदको भ्रम मे डाल लेता है जिस के नतिजे मे कभि कभार वह उसका शिकार भि हो जाता है।

विधार्थिः कोरैश के बारे मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात मालुम हो गई तो आपने क्या किया ?

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह जानकिरि मिलि तो आपने अल्लाह से दुवा कि और रब के सामने सज्दा मे गिर गए। हमे भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस अमल को अपनाते हुवे नेक शगुन के साथ साथ दुवा का भि एहतमाम करना चाहिए फिर उसके बाद आगे बढकर कोशिस करनि चाहिए।

उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु ने कहाः बदर के दिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने मुश्रिकिनको एक हजार कि संख्या मे देखा, जब कि आपके साथियोँ कि तादाद 319 हि थि, अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किब्ला कि तरफ रूख कर के अमने दोनोँ हाथ उठा लिए और अपने रब से यह दुवा करने लगे किः ए अल्लाह ! मुझ से जो तुने वादा किया है उसे तु पुरा कर दे .....[1]।

विधार्थिः कोरैश के आने के बाद उनके तेजारति काफले ने क्या किया ?

शिक्षकः बहोत खुब ! आप इन वाकयात कि तफ्सिल तवज्जोह से सुन रहे हैँ। जब अबु सुफियानको मालुम हो गया कि मुसलमान काफला कि तरफ आ रहे हैँ तो उन्होने काफले का रूख साहिल कि तरफ मोड दिया और मुसलमान काफलेको न पा सके।

लेकिन उसमे भि एक बडा औफ अहेम फाइदा छुपा हुवा था कि मुसलमान उस तेजारति काफले से मोकाबला करने के बजाए दुश्मन से रू-बरू होँ। आइन्दा सफहात मे यह प्रश्ट हो जाएगा इन्शाअल्लाह।

विधार्थिः यह तो बडि अच्छि बात होगि के कोरैश के तेजारति सामान हासिल करने से ज्यादा फाइदा मुसलमानोँ को दुश्मन का मोकाबला करने से हासिल हो। अल्लाह तआला हि बेहतर जानता है कि खैर व भलाई किस चिजमे है।

---

[1] मुस्लिमः(3/1383-1385) हदिस नः(1763)

शिक्षकः आपने इस बारिकि को बमझा यह भि उक उम्दा बात है। इस लिए मै औपको बताने जा रहा हूँ कि मुसलमानोँ के साथ क्या हुवा ?
अल्लाह तआला ने कुछ फरिश्ते नाजिल किए जो मुसलमानोँ के लाइन मे खडेहोकर कुफ्फार मुशिकिन से लडाई किया, अल्लाह तअला ने ऐसे एक हजार फरिश्ते जमिनपर उतारे।
विधार्थिः माशा अल्लाह ! इस का मतलब है कि मुसलमानोँको अल्लाह तआला कि तरफ से मदद व विजय प्राप्त हुवा।
शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा कि दुवाओं का नतिजा था कि अल्लाह तआला ने फरिश्ते उतारे, अल्लाह तआला फरमाता हैफ
अनुवादः उस वक्तको याद करो जब कि तुम अपने रब से फरियाद कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारि बात सुन लि (कबुल कर लिया) के मै तुमको एक हजार फरिश्तोँ से मदद करूंगा जो लगातार चले आएँगें।(सुरह अन्फालः 9)
विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! क्या हम उसकि तफ्सिल जान सकते हैँ ?
शिक्षकः जब मुसलमानोँ ने अल्लाह तआला से अपने मदद व विजय प्रप्ति के लिए इल्तेजा किया तो अल्लाह तआला ने लगातार एक के बाद एक फरिश्तोँ को भेज कर उनकि मदद कि। ताकि उनको खुशखबरि हासिल हो सके और उस खौफनाक मोका पर उनके दिल को अल्लाह कि मदद से इत्मिनन हासिल हो सके। जान लिजिए जित और विजय, फौज और संख्या से नहि हासिल होति है बल्कि यह अल्लाह कि तौफिक और उसकि मदद से हासिल होति है।
विधार्थिः क्या मुसलमान फरिश्तोँ को लडाइ करते हुए देख रहे थे ?
शिक्षकः मुसलमान उन्हेँ लडाइ करते हुए नहि देख रहे थे लेकिन लडाई मे उनकि शिरकत का आभास उनको एकदम हो रहा था। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंग के फिल्ड यह कहते हुवे सुने गए किः यह लो जिब्रिल अपने घोडेपर लडाई के हतियार से लैस होकर हाजिर हो गए[1]।
गोया नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि आँखों से हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को देखा जैसा कि हदिस के अल्फाज से पता चलता है। एक दुसरि हदिस मे आया है कि एक मुसलमान मैदाने जंग मे किसि मुश्रिक को कत्ल करना चाहता हि था कि उन्हेँ कोडे कि आवाज सुनाई दि और शहसवार को उन्होने यह कहते सुना किः हैजुम (घोडेका नाम) आगे बढ और चढ दौर। इतना सुनना था कि मुसलमान काफिरको अपने सामने जमिनपर ढेर होकर गिरते हुए देखा। उस सहाबि ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह वाकया सुनाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः तुमने बिल्कुल सहि कहा। यह

[1] बोखारिः(3/90-91) हदिस नः(3935)

आसमान से अल्लाह तआला कि तरफ से मदद थि यानि कोई फरिश्ता थे जो मुसलमानोँ कि सफमे मुश्रिकों से लड रहे थे। इस तरह मुसलमानोँ को जङगे बदर मे मुश्रिकोँ पर फतह हुई।

विधार्थिः अल्लाह कादिरे मुत्लक है जिसने मुसलमानोँ आर सहाबा केरामके साथ मुश्रिकोँ से मोकाबले के लिए फरिश्तोँ को जमिन पर भेजा।

शिक्षकः बल्कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को लडाई के पहले हि कुछ काफिरोँ के कत्ल होने कि जगह बता दि थि और फरमाया किः यह फलाँ काफिर के कत्ल होने कि जगह है और आप उस जगह पर हाथ रखते। यह फलाँ काफिर के ढेर होने कि जगह है आप उस जगह पर हाथ रखते। हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः उनमे से कोई भि काफिर उस जगह से अलत नहि मरा जिहाँ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद अपने हाथ से निर्धारित किया था[1]।

विधार्थिः अल्लाहु अक्बर- यह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक चमत्कार भि था।

शिक्षकः यकिनन् अल्लाह तआला ने वहि के जरिए अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको काफिरोँ के कत्ल होने कि जगह बता दिया था जिस तरह अल्लाह तआला ने वहि के जरिए आप को यह खबर दि थि कि उन कि मदद के लिए फरिश्ते उतारे जाएंगे।

उस लडाइ मे अबु जेहल और ओमैय्या बिन खल्फ जैसे वह कुफ्फार कत्ल हुए जो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा केराम रजियल्लाहु अन्हुम को तक्लिफेँ देते थे। यस लडाई मे सत्तर लोग कत्ल किउ गए।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 24 मोतशद्दिद काफरोँ के बारे मे यह आदेश दिया कि उन्हेँ एक पुराने बदबुदार कुवें मे फें दिया जाए और बाकि को दुसरि जगहोँ पर दफन कर दिया जाए[2]।

उस लडाइ मे कैद होने वाले मुश्रिकोँ कि संख्या 70 थि[3]। उन मे से कुछ से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने फिदया लिया और जिन के पस फिदया के लिए कुछ ना था उनके लिए यह शर्त रखा के वह मुसलमानो के बच्चोँ को पढाना लिखाना सिखाएँ।

विधार्थिः क्या यस लडाइ मे कोइ मुसलमान भि शहिद हुए ?

विधार्थिः बदर कि जङको मुसलमानोँ का सब से पहला जंग कहा जाता है, जिस कि वजह से मुसलमानों को बहोत बडे बडे फाएदे हुवे जो कोरैश के तजारति काफले के मालो दौलत के मोकाबले कई गुना ज्यादा फाएदे मन्द था।

---

[1] मुस्लिमः(3/1403-1404) हदिस नः(1779)

[2] इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(7/302)

[3] मुस्लिमः(3/1383-1385) हदिस नः(1763)

- इस गजवे मे कोरैश के वह बडे बडे बहादुर मारे गए जो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम को अजियतें दिया करते थे।
- इस जङ्ग से अरबोँ को मुसलमानोँ के ताकव व कुव्वत का अन्दाजा हो गया और उन के दिलमे मुसलमानो का डर बैठ गया।
- मुसलामनो को यह मालुम हो गया कि इतनि कम तादाद मे होने के बावजुद अल्लाह तआला ने किस तरह उनकि मदद कि।
- मुसलमानों को मुश्रिकोँ से बहोत ज्यादा माले गनिमत हासिल हुवा।
- कुछ मुसलमान शहीद हुवे, शहीद के लिए यह बहोत बडि कामयाबि है कि उसे अल्लाह तआलाकि राह मे शहादत नसिब हुई।
- इस अध्यायरकत गजवा मे शामिल सहाबा कि कद्र व मन्जेलत बढ गई और उन्हे बेशुमार अज्रो सवाब हासिल हुवा।
- कयामत के दिन तमाम बद्र (मे शामिल होने) वाले सहाबि को मआफ कर दिया जाएगा।

गजवाए उहुदः

शिक्षकः चुंकि बदर मे कोरैश को शिकस्त हुइ थि इस लिए उन्होने एरादा किया कि फिर से अरबि कबिले दरमेयान अपनि खोइ हुइ ताकत व इज्जत और मकाम व मरतबा वापर हासिल किया जाए इस लिए उन्होने तिन हजार लोगोँ का एक लश्कर तैय्यार किया[1]।

यह गज्वा हिज्रते नबवि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के 32 महिने बाद सन 3 हिज्रि मे हफ्ता के दिन साग शौव्वालको पेश आया।

विधार्थिः क्या नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को कोरैश कि इस तयारि का इल्म था ?

शिक्षकः हाँ नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को यह खबर लग गई थि कि कुरैश मोसलमानोँ के मोकाबले के लिए मक्का से बाहर निकल चुके हैँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने सहाबा से मशवेरा किया कि जङ्ग के लिए मदिना से बाहर निकला जाए मदिना मे रहा जाए[2]।

यहां गौर करने कि बात यह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने अपनि जानिब से कोई फैसला लेने के बजाए सहाबा से मशवेरा किया ताकि हमेँ यह तालिम मिल सके कि हम अपने समाजि मसाएल मे एक

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(1/70)

[2] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुबराः(2/36)

दुसरे के साथ कस गरह पेश आएँ। हमे आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के इस तरिके से यह पाठ मिलता है कि हम अपने इज्तेमाइ मसाइल मे आपस मे मशवेर करें आर अकेले फैसला लेने पर इक्तेफा ना करेँ।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम तवाजो पसन्द थे और अपने सहाबा का एहतराम करते थे।

शिक्षकः हा नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम खाकसार और बेहतरीन इन्सान थे, आप अपने सहाबा का एहतराम करते और उन से मोहब्बत करते थे। इस लिए हमें भि आपके तरिके पर चलते हुवे तवाजो और खाकसारि इख्त्यार करना चाहिए और अपने साथियोँ का एहतराम करना चाहिए, उनसे मोहब्बत करनि चाहिए और उक दुसरे कि मदद करनि चाहिए।

विधार्थिः उसके बाद क्या पेश आया ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने मुसलमानोँ कि लश्कर तयार किया जो एक हजार सहाबा केराम पर मुश्तमिल था[1]। जब कि मुश्रिन तिन हजार कि तादाद मे थे।

विधार्थिः मुसलमानोँ कि संख्या मुश्रिकोँ के मोकाबले मे बहोत कम था ?

शिक्षकः यह बात सहि है लेकिन अल्लाह तआला कि मदद तादाद से नहि मिलति है बल्कि अल्लाह इमान और सब्र कि बुनियाद पर अपनि मदद भेजता है। अल्लाह तआला ने बयान किया कि अगर 20 मुसलमान सब्र से काम लें तो वह 200 (दो सौ) पर भारि है)। और अगर 100 सब्र करने वाले मुसलमान हैँ तो 2000 (दो हजार) दुश्मनोँ पर भारि है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

يا أيها النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَي الْقِتَالِ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ

अनुवादः ए नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम मुसलमानोँ को जेहादका शौक दिलाओ, अगर तुम मे से बीस सब्र करने वाले होँगे तो भि दो सौ पर गालिब रहेङगे, और अगर तुम मे से एक सौ सब्र करने वाले होंगे तो एक हजार काफिरोँ पर गालिब रहेंगे इस लिए कि काफिर नासमझ लोग हैँ। (सुरह अन्फालः 65)

विधार्थिः यह मुसलमानोँ के लिए अल्लाह कि तौफिक है के अल्लाह ने सब्र और तहम्मुल के अन्दर उनके लिए ताकतो कुव्वत रखि है। यह सब्रकि अहमियतको उजागर कनेकि दलिल है। क्या ऐसा नहि है उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः बिल्कुल ऐसा हि है मेरे प्यारे बच्चो।

विधार्थिः फिर उसके बाद क्या हुवा ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम लश्कर सहित उहुद पहाड कि जानिब बढे। जबकि बिच रास्ते हि से अब्दुल्लाह बिन ओबइ बिन सुलुल एक तेहाई लोगोँ के साथ मदिना वापर आ गया।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/68)

विधार्थिः एसा क्या हुवा था ? यह तो बहोत खतरनाक बात है।

शिक्षकः मुसलमानोँ के बिच कुछ मोनाफकिन भि रहते थे, मोनाफिक उसे कहते हैँ जो जिहिरि तौर पर अपने आपको मुसलमान बत्लाए लेकिन अने बातिन मे कुफ्रको छुपाए रखे। उन्हिं मोनाफिकों का सरगना अब्दुल्लाह बिन ओबइ बिन सुलुल था, लेकिन अल्लाह का फज्ल देखिए कि उसके साथ लौटने वाले कुछ मुसलमान अपने इमान के साच फिर से इस्लामि लश्कर मे आकर मिल गए।

कुछ ऐसे नौजवान मुसलमान भि थे जो सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के साथ जंगमे शामिल होना चाहते थे लेकिन उनकि उम्र 15 साल से कम थि।

विधार्थिः वह बहादुर नौजवान रहे होंगे ना उसतादे मोहतरम ?

शिक्षकः हाँ, वह तुम्हारि तरह बहादुर तो थे हि साथ साथ हि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम से इन्तेहाइ ज्यादा मोहब्बत करते थे और यह तमन्ना करते थे कि अपनि जान देकर भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कि जान कि हिफाजत करें।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने उन नौजवानोँ के साथ क्या किया ?

शिक्षकः उनमेसे जो पन्द्रह साल के हो चुके थे उन्हेँ आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने जंग के मे शरिक होने कि इजाजत दे दि और जिन कि उम्र उस से कम थि उन्हेँ वापर कर दिया ताकि वह खतरे कि जद मे ना आएँ।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने समुरह बिन जुन्दुब अलफेजारि और राफेअ बिन खदिज को इजाजत दि क्योँ कि यह 15 साल के हो चुके थे। जब कि ओसामा बिन जैद, अब्दुल्लाह बिन उमर बिन खत्ताब, जैद बिन साबित, बराअ बिन आजिब, अम्र बिन हज्म और ओसैद बिन होजैर रजियल्लाहु अनहुम को वापिस कर दिया, लेकिन गज्वए खन्दक के मोका पर जब के उनकि उम्र 15 साल हो चुकि थि आपने उन्हे भि इजाजत दे दि[1]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! इस के बाद क्या हुवा ?

शिक्षकः उहुद पहाड के पास हि मुसलमानोँ और काफिरोँ का मोकाबला हुवा, उहुद पहाड के करिब हि एक छोटा सा बुलन्द पहाड था जिस पर नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने कुछ तीरअन्दाज बिठाए थे और उन्हे यह आदेश दिया था कि वह उस पहाडको किसि भि हालत मे ना छोंडें चाहे मुसलमानो कि जित हो या किफिरोँ कि[2] इस पहाडिका नाम बादमे जबले रोमात पडा।

विधार्थिः क्या हम आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के उस आदेश का कारण जान सकते है ?

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/70)

[2] बोखारिः(3/102-103)

शिक्षकः हाँ ! यह पहाड जंग के एतबार से बडि हि अहमियत का हामिल था क्योँ कि यह पहाड मैदाने जंग को झांकता था और दोनों लश्कर उस पहाडके निचे थे, तिरबाजों के लिए उस पहाड से मुश्रिको को निशाना बनाना आसान था क्योँ कि यह बुलन्द मकाम पर था और मुश्रकिन बिल्कुल उस के निचे थे, साथ हि उस पहाड पर तिर अन्दाजो कि मौजुदगि मुश्रिकोँ को उसकि अहेम जगह पर काबिज होने से रोक सकति थि। नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम का चुनाव बहोत हि बेहतरीन और ला जवाब था।

शिक्षकः हाँ यह अल्लाह तआला कि तौफिक से था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने उस जगह को चना, शुरू मे मुसलमानोँ को फतह मिलि, लेकिन जब तीरबाजों ने देखा कि मुसलमान जित गए है तो वह पहाडि से निचे उतर गए। खालिद बिन वलिद जो अभि इस्लाम न लाए थे और मुश्रिकोँ कि कमाण्डरि कर रहे थे, वह पिछे कि जानिब से उस पहाड पर चढ गए और उपर मुसलमानोँ पर तीर बरसाना शुरू कर दिया। इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ किः जब तीरअन्दाजोँ ने यह जगह छोड दि तो मुश्रिको के घोडे उस रास्ते से मुसलमानोँ पर चढ आए और घमासान कि लडाई शुरू हो गई जिस के नतिजे मे बहोत से सहाबा शहिद हो गए[1]।

विधार्थिः इस से पता चलता है कि जंग के मैदानमे पहाड कि अहमियत है,

शिक्षकः जैसा कि जंग कि जगह पहाड कि बडि अहमियत है। इसि लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने ताकिद के साथ तीरअन्दाजोँ को पहाड ना छोडने का आदेश दिया था चाहे मुसलमान जंग जित जाएं। इस से मालुम होता है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कि बात पर काएम रहना कितना जरूरि है और यह कि आपकि बात ना मानने से कितना बडा नुक्सान हो सकता है। चाहे वह दुनियवि मामला हो या आखेरत का मामला हो। इस लिए हर एक मामले मे बन्दाए मोमिन को अल्लाह और उस के रसुल कि फरमाबरदारि करनि चाहिए ताकि जिन्दगि के हर शोअबे मे कामयाबि मिल सके। इसि तरह जमाअत और काफले को भि चाहिए कि अगर हर मोडपर सरबुलन्दि और कामयाबि चाहता है तो काएद व रहबर और अमीर कि एताअत करे।

विधार्थिः उसके बाद क्या हुवा उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः उस गजवा मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के दाँत मोबारक शहिद हो गए और आपको जख्म खाने पडे। आपके जिस्मे मोबारक से खुन बहने लगा, नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कि बेटि हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा आईँ, अपने वालिद के खुनको धोईँऔर उनके शौहर हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के जख्म पर पानि उन्डेला[2]। मुश्रिकोँ के तिर से आपकि हिफाजत

---

[1] इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(7/150-151)

[2] बोखारिः(3/109) हदिस नः4075

के लिए बहोत से सहाबा नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को अपने घेरे मे लिए हुवे थे। उनमे से सात सहाबा शहिद हो गए, शहिद होने वाले यह सातौँ सहाबि अन्सारी थे[1]।
विधार्थिः अल्लाह कि करम यह तो बहोत बडि मुसिबत है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के साथ इतना बडा सानहा पेश आए।
शिक्षकः यकिनन् यह एक बहोत बडि मुसिबत है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम और सहाबा इस से मोतास्सिर हुवे बल्कि मुसलमानौँ मे यह भि बात फैफ गइ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कत्ल कर दिए गए। मैदाने जंग मे यह खबर सुनकर मुसलमान गम के मारे निढाल हो गए।
गम और शिकस्त, मुसलमानों कि शहादत, नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कि चोट और जख्म और उन सब पर सितम यह कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के मौत कि अफवाह जैसि कई बडि आजमाइशें एक साथ मुसलमानौँ पर बिजलि बनकर गिरिँ और अचानक से मैदाने जंग गोया मैदाने महशर हो गया। लेकिन अल्लाह तआला ने इस हादसे मे उनके लिए हमारे लिए बहोत सि नसिहतेँ पैदा कर दिया, आज जिस तरह उस हादसे से आपको बहोत से फाएदे हासिल हो रहे हैं उसि तरह सहाबा ने भि उस जंग से बहोत सि नसिहतें हासिल किं।
जब मुसलमानौँ को यह यकिनि खबर मिलि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम जिन्दा हैँ तो जैसे उनके जिस्म मे जान लौट आई और खुशि मे अपने जिस्मका जख्म और शिकस्तका गम भुल गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कि जिन्दगि हि उनके लिए बेशबहा नेमत व गनिमत थि जिस के साथ वह मदिना लौटे।
विधार्थिः यकिनन् जंगे उहुद के यह वाकयात खौफनाक और गमनाक होने के साथ साथ खुशि का भि बाइस रहा क्यों कि अल्लाह तआला ने हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम कि हिफाजत फरमाइ और आप सहाबा के साथ मदिना वापर लौटे।
शिक्षकः अल्लाह ने कुरआन मे मुसलमानो लिए मुख्तलिफ बातौँ कि वजाहत फरमाई, अल्लाह तआला ने फरमायाः
अनुवादः तुम हिम्मत ना हारो और ना फिक्र करो अगर तुम इमानदार हो तो तुम्हारि हि विजय होगि। इस जंग मे इस जंगमे अगर तुम जख्मि हुवे हो तो वह भि बदर कि जंग मे इसि तरह जख्मि हुवे हैं और इसको हम लोगौँ के बिच अदलते बदलते रहते हैं ताकि अल्लाह इमान वालौँ को अलग अलग करके देख ले और तुम मे से कुछको शहीद बना दे और अल्लाह जालिमौँ से मोहब्बत नहि करता। और ताकि अल्लाह तआला मोमिनौँ को अलग अलग कर दे और काफिरौँ का सत्यानाश कर दे। क्या तुमने सोँचा है कि तुम

[1] मुस्लिमः(3/1415) हदिस नः 1789

जन्नत मे दाखिल हो जाओगे हालाँकि अभि अल्लाह ने यह नहि देखा कि कौन तुम मे जेहाद करते हैँ और कौन सब्र करते हैँ।(सुरह आले इमरानः 139-142)
यहाँ अल्लाह ने उन्हे गम करने और कमजोर पडने से मना किया और खबरदार किया कि काफिरोँ पर वहि गालिब रहेंगे। और यह बताया कि अगर उनमे से कुछ लोग जख्मि और कुछ लोग शहीद हैँ तो उनकि तरह मुश्रिकीन भि जख्मि हुवे और मारे गए हैं। अल्लाह तआला ने यह वजाहत कि के अल्लाह तआला फतह व शिकस्तको अदलता बदलता रहता है।
अल्लाह तआला ने कुछ सहाबा को मैदाने जंग मे मौत देकर शहादत के दरजे पर फाएज किया, नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के चचा हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु और हजरत मुसूअब बिन उमैर रजियल्लाहु कअन्हु उसि जंग मे शहीद हुवे, उनके उलावा भि बहोत से सहाबा को शहादत नसिब हुइ उन शोहदा कि संख्या 70 है[1] अल्लाह उन सब से राजि हो।

गज्वा बनु नजीरः

शिक्षकः अरब के कुछ यहुदि मदिना मे रहते थे, जिनमे बनु नजीर, बनु कोरैजा भि थे। हम जान चुके हैं कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने उनके साथ एक मोआहेदा लिखा था जिस के अन्दर दीन व मजहब कि आजादि के साथ साथ बाइज्जत जिन्दगि जिनेका हक भि दिया गया था।
इस अहेदनामा के बावजूद उन यहुदियों ने कइ मरतबा उसकि मोखालफत कि।
विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के साथ उनका मोआहिदा हो चुका था और उन्होंने उस पर इत्तेफाक किया था उस के बावजुद उनलोगोँ ने क्यों उसकि मोखालफत कि ?
शिक्षकः उसकि वजह यह है कि वह अन्दर हि अन्दर नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम से हसद करते थे इस लिए उन्होने आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के साथ गद्दारि करनि चाहि। नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम दो आदमि कि दियत के सिलसिले मे उन से मदद और तआउन का मोतालबा किया, उन्होँने हामि भरि और कहा कि हम आपकि मदद करेंगे, जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम उनकि बस्ति मे आए और किसि यहुदि के घरके दिवारके साए मे बैठ गए, इधर यहुदियोँ ने उस घर के छत से आपके उपर से आपके उपर पत्थर गिराने कि शाजिस रच लि लेकिन
अल्लाह तआला ने वहि के जरिए अपने नबि को उनके उस बद नियति कि खबर दे दि और आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम उनकि बस्ति से निकल गए[2]।

---

[1] बुखारिः(2/110) हदिस नः4079
[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/199-200)

विधार्थिः तमाम तारिफ उस अल्लाह के लिए है जो दोनोँ जहाँ का मालिक है जिस ने हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को उनकि मक्कारि से महफुज रखा।

शिक्षकः यकिनन् अल्लाह तआला ने अपने नबि कि मदद कि और उन कि हिफाजत कि। हमे भि अल्लाह तआला हि से मदद और हिफाजत तलब करनि चाहिए, अल्लाह तआला हि अपने बन्दोँ को बुराइयोँ और मुसिबतोँ से महफुज रखता है।

एक दफा ऐसा हुवा कि कि कोरैश ने यहुदियोँ को यह धमकि दे मारा कि अगर तुम नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम से जंग नहि करोगे तो हम से जंग के लिए तैय्यार हो जाओ। ऐसि सुरत मे यहुदियोँ के लिए लाजिम था कि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को सुरते हाल से बाखबर करते लेकिन उन्होने कोरैश कि बात पर हाँ कह दिया और नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम से गद्दारि और बद अहदि का एरादा बना लिया। नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को इस बातकि खबर हो गई और आपने बनु नजिर से लडाई किया और उन्हे मदिना से बाहर निकाल दिया[1] उनमे से कुछ खैबर और कुछ सिरिया जाकर बस गए।

विधार्थिः बनु कोरैजा को नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने युँ हि छोड दिया ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने उन्हे छोडा नहि बल्कि आपने उन्हे बुलाया और उनसे यह अहेद लिया कि वह धोका नहि देंगे तो उन्होने यह कुबुल किया और वापस हो गए[2]।

उन्होने भि मोआहेदा के खेलाफ काम किया तो बतौरे अन्जाम नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने उन से भि जंग करनि पडि जिसकि तफ्सिल आगे आउगि इन्शाअल्लाह।

विधार्थिः वह यकिनन् इसि तरह के बुरे अन्जाम के हकदार हैँ।

शिक्षकः हाँ यह आखरि हरबा था जो उनके तइ इख्त्यार किया गया, बतौरे खास ऐसे हालात मे जब कि उन्हे नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने कोई तक्लिफ न दि थि फिर भि वह खेलाफवर्जि कर रहे थे, आपने तो उनके अधिकार को उन्हे दिया था उसके बावजुद उन्होने नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम से गद्दारि किया। आप गौर करेँगे तो मालुम होगा कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने कभि किसि पर जुल्म और अत्याचार नहि किया, बल्कि जंग के सबब भि खुद कुफ्फर हुवा करते थे। जैसा कि आप पहले भि ऐसा देख चुके हैं और आइन्दा भि उसके नमुने देखेने वाले हैं।

---

[1] अबु दाउदः(3/404-4-7) हदिस नः(3004)

[2] साबिक हवाला

गज्वए खन्दकः

शिक्षकः गज्वए अहजाब सन् 5 हिज्रि मे हुवा[1]।

यस गज्वा कि वजह यह बनि कि बनु नजिर के कुछ लोगोंको नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने मदिना से दरबदर कर दिया था, यह लोग बनु अवाएल के साथ मिलकर मक्का मे कोरैश के सरदारोँ के पार हाजिर हुवे और उन्हे रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम के विरूद्ध जंग पर उभारने लगे और अपनि मददका यकिन दिलाया, कोरैश ने उनकि बात मान लि। उसके बाद यहुदियोँ का यह वफ्द बनु गत्फान के पास गया और कोरैश हि कि तरह उन्हे भि जंगके लिए उभारा नतिजन वह भि तैय्यार हो गए। उसके बाद मोतअय्यन प्रोग्राम के मोताबिक कोरैश और दुसरे हलिफ कबाएल मदिना कि तरफ निकफ पडे जिनकि तादाद दस हजार थि और उन सब के सिपह सालार अबु सुफियान थे जो अभि इस्लाम कुबुल नहि किए थे[2]।

मुश्रिकिन मक्का, दुसरे अरबि कबिले और यहुदियों के दरमयान होने वालि इस गठबन्धनको गिरोहबन्दि कहा जाता है, यानि कि यहुदियोँ ने कुफ्फारके तमाम बडे बडे गिरोहोँ को नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम और मुसलमानोँ के खेलाफ भडकाकर जंग के लिए तैय्यार किया, इसि वजह से इस जंगका नाम गज्वए अहजाब पडा।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम और मुसलमानों के खेलाफ भडका कर इस तरह से जंग के लिए तैय्यार किया जा रहा था तो क्या नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लमको इस कि खबर मिला ?

शिक्षकः हाँ नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को इस कि इत्तेला मिलि और आपने हसबे आदत अपने सहाबा से मशविरा किया, हजरत सलमान फारसि रजियल्लाहु अन्हु ने मशवेरा दिया कि मदिना मे खन्दक खोद दिया जाए[3]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! यह खन्दक क्या चिज है ?

शिक्षकः मदिना कि जमीन पथरिलि थि, जो कोई भि इन्सान या हैयवान इस जमिन पर चलता उसे अपने कदमोँ के निचे नरम जगह महसुस न होति, जिस के जतिजे मे चलने मे भि परेशानि होति थि।

उत्तर पश्चिम दिशा के एलावा मदिना कि हर दिशा मे एसा हि था के बडे बडे पत्थर जमिनको सख्त बनाए हुए थे, जिस कि वजह से मदिना हर तरफ से महफुज था सिवाए शेमाल मगरिब दिशा के, इस लिए उन्होंने उस सिम्त मे खन्दक खोदा, यह खन्दक लम्बे और गहरे गढे होते थे जिन कि वजह से

उस दिशा से मदिना मे दाखिल होना मुम्किन न था, इस जेहत मे चुँकि बडे बडे पत्थर न थे जो आने वालेके लिए रूकावट बनते इसि लिए इधर खन्दक खोदा गया।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/224)

[2] साबिक हवालाः(3/226)

[3] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/66)

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! हजरत सलमान फारसि रजियल्लाहु तआला अन्हु कि यह राय बहोत हि बेहतरीन थि।

शिक्षकः बिल्कुल यह एक बेहतरीन राए थि, इस से मशवेरा कि अहमियत का अन्दाजा होता है। जब कोइ अपने साथियोँ से राय लेता है तो कभि कभार उनमे से कोइ इन्सान ऐसि राय जाहिर करता है कि उस से पुरि जमात फाइदा उठाति है इस लिए हमेर राय मशवेरा लेना चाहिए, अपने खास मामले पे घर वालोँ या उस्तादोँ से राय लेनि चाहिए और ऐसे तमाम मामले मे मशवेरा तलब करनि चाहिए जिन मे हमे जरूरत महसुस हो और इस सिलसिले मे शरमाना नहि चाहिए।

राय मशवेरा हि का नतिजा था कि जब कोरैश मदिना पहोँचे तो सहाबा कराम कि उस बेहतरीन तरकिब को देखकर हैरान रह गए और नाको चना चबानेपर मजबुर हो गए।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! सहाबा ने खन्दक कैसे खोदा ?

शिक्षकः आप जानते हैँ कि पुराने जमाने मे खोदाई के आलात नहि होते थे और ना हि आज कि तरह कम्पनियाँ काम करति थि और नाहि मजदूर हुवा करते थे थे जो सब काम अन्जाम दें। बल्कि लोग खुद हि सब काम किया करते। कुदाल और फावडा जैसे मामुलि आलात का इस्तेमाल होता था जो कि हाथ से चलाने वाले आलात है। सहाब खुद हि खन्दक से मिट्टि निकालते खुदहि ढोते थे, नबि सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम सहाबा के साथ बजाते खुद भि खन्दक कि खुदाई और मिट्टि उठाने मे शामिल थे यहाँ तक कि मिट्टि से आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम का पेट ढक गया था, आप सहाबा का हौसला बढाते और उनके बिच यह गुनगुनातेः

अनुवादः ऐ अल्लाह ! अगर तेरा फज्ल व करम न होता तो हम न तो हिदायत पाते और ना हि नमाज सदका अदा करते[1]।

विधार्थिः एस्तादे मोहतरमः कितना अच्छा लगता होगा जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद सहाबा के साथ के साथ खन्दक कि खुदाई मे साथ साथ काम कर रहे थे, और आप जब उनके साथ यह प्यारा जुमला गुनगुना रहे होंगे तो कितना प्यारा महसुस होता होगा।

शिक्षकः बिल्कुल सहि बोत हि प्यरा माहौल बनता होगा। इससे हमे पता चलता है कि सामुदायिक कामोँ मे भि हमे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरिके पर चलना चाहए और बाहम मिलजुल कर काम करना चाहिए, सुस्ति और काहिलि से परे रहना चाहिए और मेहनत व लगन से अपना काम अन्जाम देना चाहिए जैसे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया, यह भि पता चलता है कि इन्सान काम करते हुए अपने दिलको सुकुन देने और थकावट भुलाने के लिए गुनगुना भि सकता है, लेकिन शर्त यह है कि बातेँ अच्छि बेहतरिन मानि वाले होँ।

---

[1] बोखारिः(3/116-117) हदिस नः(4106)

विधार्थिः क्या खोदाई के दौरान आप अपने घर भि जाया कररते थे ?

शिक्षकः खोदाइ के दौरान कोई सहाबि अपने घर नहि जाते थे, हाँ जिनको कोई जरूरत होति तो वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यजाजत लेकर जाते मगर जल्द हि लौटकर वापस आजाते थे क्योँ कि उन्हे अल्लाह तआला कि तरफ से पुन्या कि उम्मिद थि, इस लिए बतगैर जरूरत के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से नहि जाते। लेकिन कुछ मोनाफेकिन ऐसे थे जो थोडा बहोत काम करते और चोरि छिपे अपने घरको निकल लेते थे[1]।

विधार्थिः इतनि व्यस्तता मे वह खाना कैसे खाते थे उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः उस समय जिवन यापन बहोत कठिन होता था, लेकिन चुंकि उनका इमान बहोत हि मजबुत था के वह भुक प्यास को बरदाश्त करते जाते थे, कभि एसा होता कि कोई एक कोइ जिन ले आता और सहाबा के लिए खाना तैय्यार करता, फाका कि यह नौबत थि कि खुद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भुक कि शिद्दत से अपने पेटपर पत्थर बाँधे हुवे थे[2]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतम ! आपने बिल्कुल सहि फरमाया हमे तो बहोत सारि नेअमत और बडि हि फरावानि कि जिन्दगि हासिल है , हमे इस बेशरण फज्लो करम पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

शिक्षकः इस मोका से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक मोअजेजा भि जाहिर हुवा, हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु ने जब देखा कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सख्त भुके हैँ और तीन दिन के भुके हैं तो वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इजाजत लेकर अपने घर गए, देखा कि उनके घरमे बहोत थोडा जव और एक छोटि बकरि है, उन्होने बकरिको जबह किया और जौव को पिस कर खाना तैय्यार किया, उसके बाद जाकर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस कि खबर दि। हजरत जाबिर ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा किः आप और कोई एक या दो आदमि और आपके साथ चलें और खाना खाएं।

क्योँ कि खाना इतना कम था कि तिन या चार आदमि हि खा सकते थे, लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः बहोत है और उम्दा है, उसके बाद आपने तमाम मोहाजेरिन व अन्सार को आवाज लगाई और फरमाया किः सब के सब मेरे साथ चल पडो। आप हजरत जाबिर के घर तशरिफ ले गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबाको खाना पेश करते रहे यहाँ तक कि सभ खा कर अघा गए लेकिन फिर भि खबाना वैसे के वैसे रहा, जब कि सहाबा कि तादाद एक हजार थि[3]।

---

[1] इब्ने हेशामः(3/116-117) हदिस नः(4106)

[2] बुखारिः(3/115-116) हदिस नः(4101)

[3] बोखारिः (3/115-116) हदिस नः4101-4102

इस मोअजेना पर गौर करेँ कि किस तरह अल्लाह तआला ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लिए थोडे खाना को इतना ज्यादा कर दिया कि सब ने पेट भरकर खाना खाया लेकिन फिर भि खाना वैसे हि रहा। और गौर करने कि बात यह भि है कि आपने शुरू मे हि अच्छा गुमान करते हुए फरमाया किः अच्छा है और बहोत है।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम यह तो बहोत हि बडा मोअजेजा है।

शिक्षकः यकिनन यह एक बहोत हि बडा मोअजेजा है लेकिन अल्लाह तआला के लिए कोइ बडि बात नहि, इस लिए हमेँ अल्लाह तआल से हर चिज मे बरकत कि दुवा करनि चाहिए क्योँ कि जब किसि चिज कि बरकत नाजिल होति है तो वह बहोत हि ज्यादा भलाई का खजाना बन जाति है। आप अपने रब से सेहतयाबि और रूस्ति, ज्ञान, मलो दौलत और हर एक चिज मे बरकत कि दुवा करेँ ताकि आपकि जिन्दगि अल्लाह तआल कि मेहरबानि और फज्फ व करम से अध्यायरकत बन सके।

विधार्थिः अल्लाह कि कसम यह बहोत हि बडा वाकया है और इस के अन्दर हमारे लिए बहोत सि नसिहतेँ पोशिदा हैँ।

सहाबा ने बडि मोशक्कत व तक्लिफे बरदाश्त कि और बहोत से मुश्किलातका सामना किया। लेकिन सवाल यह है कि क्या वह खन्दक कि खोदाई मोकम्मल कर सके और वह मुश्रिकिन जो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जंग करने कि नियात से निकले थे उन्होँने क्या हरबा अपनाया ?

शिक्षकः सहाबा ने खन्दक कि खोदाइ मोकम्मल कि, जब मुश्रिकिन का लश्कर आया तो देखा कि उनके सामने खड्डा है और रास्ता पार करना दुशवार है, वह दस हजार कि तादाद मे थे जब कि इस्लामि लश्कर कि तादा सिर्फ तीनहजार थि। मुश्रिकिन ने बीस दिनोँ से ज्याद मदिना का मोहासरा किए रखा। यानि वह खन्दक के करिब बीस दिनोँ तक बैठे रहे और मदिना दाखिल होने कि कोशिस करते रहे या इन्तेजार करते रहे कि मुसलामन हि मदिना से बाहर नकिल आएँ।

इसि दरमेयान उस सख्त तरीन हालतमे यहुदि कबिला बनु कोरैजा ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया हुवा वादा तोड कर गद्दारि पर उतर आए। यह यहुदि मदिना के अवालि मे रहते थे।

शिक्षकः इसका क्या मतलब ?

मुसलमान चुंकि मुश्रिकिन से निपटने और उनकि जंगि चाल कि पेशकदमि का जाएजा लेने मे मश्गुल थे और बनु कोरैजा मदिना के अन्दर हि मौजुद थे, इस लिए यह डल लग रहा था कि कहिँ यह यहुदि मदिना के मुसलमानोँ पर हमला ना कर देँ और मुसलमानोँ के औरतोँ, बच्चो और माल व जाएदाद को नुकसान न पहोँचाने लगें। इसिलिए हालत बहोत हि खतरनाक और संगिन व परेशानि वाले थे। उधर बाहर से आए हुवे दुश्मन मदिना के दरवाजे पर खन्दक का घेरा डाले बैठे हुवे थे और मदिना के अन्दर के यहुदि दुश्मन ताक मे बैठे हुवे थे। अल्लाह तआला ने सुरह अहजाब मे जिसका नाम इसि गजवा के नामपर है मे उस समय मोमिनोँ के हालात को युँ बयान कियाः

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا

अनुवादः जब दुश्मन तुम्हारे पार उपर से और जिचे से चढ आए और जब कि आँखें पथरा गइ और कलेजा मुह को आ गए और तुम अल्लाह के बनिस्बत तरह तरह के गुमान करने लगे। (सुरतुल अहजाबः 10)

उपर आने वालोँ से मुराद मुश्रिको का लश्कर है, और निचे से आने वालोँ से मुराद बनु कोरैजा हैं। उस मुश्किल घडि मे मुसलमान खौफ जदह थे।

इस आजमाइश से हमे यह मालुम होता है कि कभि कभार मोमिन को आजमाईश के जरिए आजमाया जाता है जैस कि अल्लाह तआला ने इस गज्वा मे मोमिनो को आजमाइश मे डाला। लेकिन अल्लाह तआला हमेशा मोमिनोँ के साथ होता है, और अन्जाम से सिर्फ अल्लाह तआला वाकिफ है।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस मोके पर यह दुवा किः

अनुवादः ए अल्लाह ! जिस ने केताब नाजिल किया, जो जल्द हिसाब लेने वाला है, इन दुश्मनोँ को शिकस्त दे। ए अल्लाह उनको पराजय कर दे उनके अन्दर जबरदस्त भोंचाल पैदा कर दे[1]।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका पहला हतियार दुवा हि था। मुझे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बदर के दिन भि दुवा कि थि जिस के बाद मुसलमानोँ को फतह व कामयाबि मिलि थि।

शिक्षकः हाँ यकिनन् नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला हतियार दुवा हि होता था जिस के बदौलत आप दुश्मनोँ, शैतानो और दुसरे हर चिजपर गलबा हासिल करते थे। यसि लिए हमे भि हर मामले मे दुवाको लाजिम पकडना चाहिए और कभि भि उस से गाफिल नहि होना चाहिए।

बनु कोरैजा से निपटने के लिए आपने यह तरिका अपनाया कि सलमा बिन अस्लमको दो सौ आदमि और जैद बिन हारसा को तिन सौ आदमि के साथ भेजा ताकि वह तक्बिर बुलन्द करते हुवे मदिना जाएँ और उसकि हिफाजत व हेरासत पर तैनात रहेँ[2]।

मुश्रिको का वह बडा लश्कर जो खन्दक के उसपार अपना पडाव डाला हुवा था, अल्लाह ने उनपर तुफानि आन्धि भेज दिया जिस के बाद वह वहाँ बैठे रहने के काबिल भि नहि रहे, उनके दिलमे खौफ व हरास बैठ गया और उनकि हांडियां पलट गईँ, आन्धि के झोँकों से चुल्हे बुझ गए और तुफानि हवा ने उनके खेमे उखाड दिए और वह मदिना छोडने पर मजबुर हो गए। इस तरह अल्लाह तआला ने हवा के जरिए जो अल्लाह कि फौजों मे से एक फौज है, अपने रसुल और मोमिनोँ कि मदद कि। इस वाकया को अल्लाहत तआल ने सुरतुल अहजाब मे इस तरह बयान कियाः

---

[1] बुखारिः(3/118) हदिस नः 4145

[2] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/67)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَاۗءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا

अनुवादः ए इमान वालोँ अल्लाह तआला ने जो एहसान तुम पर किया उसको याद करो जब कि तुम्हारे मोकाबले के लिए फौज पर फौज आई फिर हमने उनपर तेज और तुफानि आँधि और ऐसे लश्कर भेजे जिन्हे तुमने देखा हि नहि और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला सब कुछ देखरहा है ।(सुरतुल अहजाबः9)

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा करते थे किः अल्लाह के सिवा कोई भि सच्चा इबादत के लाएक नहि वहि है जिस ने अपने लश्करको इज्जत व शर्फ बखशा, अपने बन्दे कि मदद कि और तने तन्हा तमाम फौज पर भारि गालिब आ गया, उस के बाद किसि कि जरूरत नहि[1]।

गज्वा बनि कोरैजाः

शिक्षकः गज्वा अहजाब से लौटने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हतियार रखा और गुस्ल किया, उसके बाद हजरत जिब्रिल अलैहिस्सलाम आपके पार तशरिफ लाए और फरमायाः क्या आपने हतियार रख दिया ? अल्लाह कि कसम मैने अपना हतियार नहि रखा, आप भि हतियार न रखेँ बल्कि को बनु कोरैजा से जंग के लिए निकलेँ[2] ।

गज्वा बनु खन्दक के बाद जुलकाअदा सन 5 हिज्रि मे गज्वा बनि कोरैजा पेश आया[3] ।

इस गज्वा मे कुछ यहुदि कत्ल हुवे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानोँ मे माले गनिमत तक्सिम किया, कुछ यहुदियोँ ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर आपसे शरण तलब कि तो आपने उन्हेँ शरण दिया और वह इस्लाम मे दाखिल हो गए, बाकि तमाम यहुदियोंको आपने मदिना से निकाल दिया[4]।

विधार्थिः उनको यह सजा इस लिए मिलि क्योँ कि उन्होने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खयानत और मुसलमानाके साथ गद्दारि कि थि ।

शिक्षकः हाँ खयानत व गद्दारि एक बडा जुर्म है । उन्होने अल्लाह और रसूल के साथ खयानत कि और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किए हुवे वादे को, तडा और उसकि मोखालफत कि, जिस के नतिजे मे अल्लाह ने जिब्रिल अलैहिस्सलाम के साथ उनसे जंग करने का आदेश दिया ।

---

[1] गज्वा बनि कोरैजाः (3/118) हदिस नः(4114)

[2] साबिक हवाला, हदिस नः(4122)

[3] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/74)

[4] बुखारिः(3/97) हदिस नः(4028)

गज्वा होदैबिया:

शिक्षकः होदैबिया एक कुंवा का नाम है जो मक्का से 22 किलो मिटर के फासलेपर उत्तर पश्चिम दिशा मे पडता है, आजकल शुमैसि के नाम से जाना जाता है[1]।

जुल्काअदा सन् 6 हिज्रि मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के साथ उमरा के लिए निकले[2]।

विधार्थिः क्या उनहे कोरैशका डर न था ?

शिक्षकः कोरैश का डर तो जरूर था लेकिन आप जंग के लिए नहि बल्कि उम्रा के लिए निकले। मगर यह एहतमाल बहरे हाल मौजुद था कि कोरैश उन्हे उम्रा करने से रोकेंगे

उनसे जंग करेंगे आर यह भि एहतमाल था कि वह उन्हें उन्हे उम्रा करने से ना भि रोकें। यह सब एहतमाल मौजुद था।

विधार्थिः कोरैशको यह खबर कैसे मिल सकति थि कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्रा के लिए निकल रहे हैँ ?

शिक्षकः जब सहाबा एहराम पहेनकर हदि का जानवर लेकर निकलते तो कोरैश को तो खबर मिलनि हि थि के वह लोग उम्रा के लिए निकल रहे हैं। हदि के जानवर से मुराद वह जानवर है जो हरम मे कुरबानि के दिन जबह किया जाता है और गोश्त बाँटा जाता है। मुसलमान 1400 से कुछ ज्यादा कि संख्या मे मक्का रावाना हुवे[3] ।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कोरैश का हाल पता करने के लिए एक जासुस मक्का भेजा यह कबिला बनु खोजाआका आदमि था, उस कबिले के लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मदद किया करते थे, उस आदमि का नम बिश्र बिन सुफयान अल खोजाइ था[4]।

विधार्थिः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने यह अच्छा किया कि हालात का पता लगाने के लिए जासुस भेज दिया।

शिक्षकः एहतयात और बचाव के लिए यह निहायत हि नरूरि था कि आप कोरैश कि नियत का अन्दाजा लगा सकें कि वह आप से जंग करन और उम्रा से आपको रोकने के एरादे मे हैं या उनकि कुछ और शाजिस है। इस से हमे यह मालुम होता है कि हमारे अपने खास मसाएल मे भि जब हालात संगिन हों तो हमे एहतयाति तदबिर एख्त्यार करनि चाहिए।

---

[1] अकरम जिया उमरिः अस्सिरतुन नबवियाः(2/424)

[2] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/95)

[3] बुखारिः(3/127-128 हदिस नः(4115)

[4] बोखारिः(2/131) हदिस नः(4178,4179)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के रास्ते हि मे थे कि बिश्र बिन सुफयान अल खोजाइ ने आकर यह खबर दि किः कौरैश ने पुरि फोज तैय्यार कर रखि है और वह आपसे जंग करने और बैतुल्लाह से आपको रोकने के मुड मे हैं[1] । यनि कि उन्होने लश्कर तैय्यार कर रखा है वह आपको मक्का मे दाखिल नहि होने देना चाहते ।

विधर्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एसे मोकेपर क्या किया ?

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से साथ होदैबिया कि तरफ चल पडे, होदैबिया मे जाकर पडाव डाला, सहाबा को उस जगह पर पानि तो मिला पगर इतना कम था कि जल्द हि खत्म हो गया, सहाबा ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्यास कि शिकायत कि तो उस मकाम पर भि एक मोअजेजा जाहिर हुवा । वह इस तरह कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक तिर निकाल और सहाबाको देते हुवे कहा कि जिस जगह से पानि निकल रहा था उस जगर मर इले गाड दो, ऐसा करना हि था कि पानि के फौव्वारे निकलने लगे, सबने जि भर कर पिया और मश्किजा भि भर लिया[2] ।

विधार्थिः यह एक बडि नेअमत थि ।

शिक्षकः यकिनन् यह मोअजेजा से अल्लाह कि तरफ से मिलने वालि बडि नेमत थि । सहाबा ने जमिन मे तीर गाडा और उस से पानि का चश्मा फुटकर निकल पडा, यह अल्लाह कि तरफ से बरकत थि और अल्लाह तआला ने अपने नबि को सहाबा के बरकत वाला बनाकर भेजा था ।

विधार्थिः फिर क्या हुवा उस्तादे मोहतरम ?

शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा के साथ होदैबिया के मकाम पर थे कि बदल बिन वरका अल खोजाई नामि बनि खोजाआका एस शख्स आपकि खिदपत हाजिर हुवा और आपको यह खबर दि कि कौरैश भि होदेबिया पहोँच गए हैँ और वह आपसे जंग करने और आपको बैतुल्लाह से रोकने वाले हैं, आपने बताया कि आप जंग के लिए नहि बल्कि उम्रा करने कि गरज से आए हैँ । फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भि बताया कि जंग कि वजह से कौरैश के बहोत से लोग मारे जा चुके हैं, इस लिए आपने उन्हेँ सुलह का एख्त्यार दिया और कहा किः वह आपको लोगोँ तक दिने इलाहि पहोँचाने से ना रोकेँ, अगर यह दीन लोगोँ मे आम हो जाएगा तो उन्हेँ इख्त्यार होगा कि चाहेँ तो कुबुल करेँ और चाहेँ तो ना करेँ, अगर कौरैश को नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि यह प्रस्ताव कुबुल ना हो तो आपने फरमायाः कसम है उस जात कि जिस के हात मे मेरि जान है मै उन से इस दीन कि खातिर उस वक्त तक लडता रहुँगा जब तक कि मेरि गरदन न उतर जाए अल्लाह का आनेश न लागु हो जाए[3]।

---

[1] साबिक हवाला

[2] बुखारिः (2/279-280) हदिस नः.2731-2732)

[3] बुखारिः (2/279-284) हदिस नः 2731-2732

गोया नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह कि कसम खा कर यह कहा कि आप अपने दावति काम से बाज नहि आएंगे और अगर वह आपकि राह मे रूकावट बनेंगे तो आप उनसे जंग करेंगे यहा तक कि आपकि गरदन आपके जस्म से अलग हो जाए।

विधार्थिः यह तो बहोत बडि बात है, आपकि दावत से कोरैशको नुक्सान भि तो न था।

शिक्षकः यह एक मोनासिब और इन्साफ कि बात थि, क्योँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीने इस्लाम कुबुल करने के लिए उन से साथ कोई जोर जबरदस्ति नहि कि बल्कि उन्हेँ जंग से दुर रहने कि पेशकस कि, उन्हे बताया कि वह यह हरगिज न सोंचे कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह कि तरफ लोगों को बुलाने और उन तक दीने एलाहि पहोँभाने से बाज आजाएँगें, वह अपने मिशन से कभि भि पिछे नहि हट सकते चाहे उनकि जान हि क्योँ न चलि जाए, और फिर आपने उनसे यह भि कहा कि अल्लाह तआला अपने दिन को जरूर गालिब करेगा और अपना आदेश लागु कर के रहेगा।

विधार्थिः शायान कोरैश ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह प्रस्ताव मन्जुर कर लिया हो ?

शिक्षकः बदील अल खोजाई ने जाकर यह सारि बातें कोरैश को बताया।

उसि दरमेयान नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास यह खबर आई कि हजरत उस्मान बिन अफ्फन रजियल्लाहु अन्हु शहिद कर दिए गए हैँ, क्योँ कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि बात और अपना एरादा पहोँचाने के लिए उन्हें कोरैश के पास भेजा था। उसि मोका पर बैअते रिज्वान वाके हुवा। तमाम सहाबा कराम से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत लि, सिर्फ एक मोनाफिक रह गया जिस ने बैअत न कि वह अपने उँट के पिछे जाकर छुप गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दाहिने हाथ से एशारा करते हुवे फरमाया कि यह उस्मान का हाथ है और फिर उसे अपने बाएँ हाथ पर रखते हुवे यह फरमाया किः यह उस्मान के बदले है[1]। यानि कि आपने उस्मान रजियल्लाहु अन्हु के नाएब कि हैसियत से खुद बैअत लिया जिस तरह से तमाम सहाब ने बैअत लि, क्योँ कि हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु एक मिशन पर गए हुवे थे।

गौर करने कि बात है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने उन सहाबा कि भि किस तरह ख्याल रखते थे जो किसि वजह से आपके मौजुद ना होँ। बैअते रिज्वान एक अध्यायरकत बैअत थि जिस के बारे मे आपने सहाबा को मोखातब करते हुवे कहा किः आज तुम इस रूवे जमिन मे सब से बेहतर लोग हो। यह बहोत हि बडा और अहेम मकाम व मरतबा था जिस मे हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु भि शरीक थे लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तरफ से किसि मिशनपर जाने कि वजह से बैअत के वक्त मौजुद न थे, इस बैअतका जिक्र अल्लाह तआला ने कुरआने मजिद मे युं किया हैः

---

[1] बोखारिः (3/19) हदिस नः(3698)

अनुवादःयकिनन् अल्लाह तआला मोमिनोँ से खुश हो गया जब कि वह दरख्त के छावंमे तुझसे बैअत कर रहे थे। उनके दिलोँ मे जोथा उसे उसने मालुम कर लिया और उनपर इत्मिनान नाजिल फरमाया।
विधार्थिः क्या कोरैश ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि यह पेशकस कुबुल कर लि ?
शिक्षकः जाहिर तो ऐसा हि लगता है कि कोरैश ने यह पेशकस कुबुल ना कि, और उरवा बिन मसउद को नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात चित करने के लिए भेजा, वह आप से बात चित करने के बाद अपने कौम के वापर गया और उनके सामने यह अरजि रखि के वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बात मान लेँ, लेकिन उन्होंने मानने से इन्कार कर दिया, उसके बाद कोरैशका एक आदमि खडा हुवा और कहा किः मुझे इजाजत दि जाउ के जाके उनसे बात करूं, उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात कि और जाकर अपनि कौम से कहा किः मेरि राय यह है कि उनको बैतुल्लाह से ना रोका जाए। लेकिन कोरैश ने उनकि भि न सुनि, बाला आखिर सोहैल बिन अम्रको नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे हाजिर हुवा और आपसे सुलह के मोआमलात तै करने कि बात कि और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व कोरैश के दरमेयान सुलह का मोआहिदा लिखा गया[1]।
विधार्थिः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कोरैश के दरमेयान किस बात पर सुलह हुइ ?
शिक्षकः दोनो गिरोह का आपर मे जिस बात पर सुलह हुवा उसके अंश यह हैः

- रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस साल मक्का मे दाखिल हुवे बगैर वापस हो जाएँ, और अगले साल आकर उम्रा करेँ।
- कोरैशका जो आदमि अपने गारजियन कि इजाजत के बगैर यानि भागकर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाए उसे वापस करना होगा।
- जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहदो पैमान मे दाखिल होना चाहे वह दाखिल हो सकता है और जो कोरैश के अहदो पैमान मे दाखिल होना चाहे वह दाखिल हो सकता है।

विधार्थिः लेकिन यह कोई इन्साफ पर मब्नि अहेदनामा तो न था।
शिक्षकः सहि बात है, इस सुलह मे इन्साफ को मल्हुज नहि रखा गया था, जिस कि वजह से सहाबा को हैरानि भि हुई थि, और उनको इस बातपर तआज्जुब भि था कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस सुलहको कुबुल कैसे कर लिया। हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु बार बार रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यस बारे मे पुछते और हस बार आपका यह जवाब होता किः मै अल्लाह का रसुल हुँ अल्लाह कि नाफरमानि नहि कर सकता[2]।

---

[1] बोखारिः (2/279-284) हदिस नः(2731-2732)

[2] साबिक हवाला

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बात से यह अन्दाजा होता है कि आपने वहिय एलाहि कि रोशनि मे इस सुलहको कुबुल किया था, क्योंकि अल्लाह तआला कि मदद हमेशा आपको हासिल थि, और अल्लाह तआला हि आपकि रहनुमाई करता था, अल्लाह तआला को मालूम था कि यह सुलह कोरैश के हक मे फाइदा मन्द नहि है बल्कि मुसलमानो के लिए फाइदेमन्द है, यह अलग बात है कि हमारि कम सम्झि उसको समझ ना सके जिस कि वजह से हमने यह समझा कि यह मुसलमानो के लिए फाएदा मन्द नहि।

विधार्थिः उस से मुसलमानोँ को क्या फाइदा हुवा था ? क्या हमे बता सकते हैं ?

शिक्षकः उस मोआहिदे के बाद एक एसा वाकया पेश आया जिस से यह हकिकत वाजेह हो गइ और कोरैश खुद उस सुलहनामा को तोडने पर मजबुर हो गए। हुवा युँ कि जब भि कोइ कोरैशि इस्लाम कुबुल करता वह कोरैश से जिकल जाता लेकिन वह मोआहिदा कि वजह से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पार भि नहि जा सकता था, इसि लिए उन नए मुसलमानोँ ने एके बाद दिगरे अच्छि खासि मज्बुत जमात बना लि और वह मक्का और मदिना के रास्ते मे कोरैश के तेजारति काफलोँ से छेडछाड करने लगे जिस से कोरैश तंग आगए और हारमान कर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे हाजिर हुवे और आपसे गुजारिश कि के इस शर्तको को नामन्जुर और मन्सुख कर दिया जाए के (जब कोइ कोरैशि मुसलमान बनकर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पार आए तो उस वापर करें)

उन्हने आपसे यह तलब किया कि आप उन्हे वापर ना करेँ बल्कि अपनि जमात मे शामिल कर ले और अपने हि पार रखेलेँ।

गौर करेँ कि क्या यह मुसलमानोँ कि जित न थि ?

विधार्थिः यकिनन् यह मुसलमानोँ और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक कामयाबि और बडि जित थि कि कोरैश खुद आकर इस शर्तको खतम करने का मोतालबा कर रहे थे।

शिक्षकः जब उन शर्तोँ के साथ सुलह के अंश तै हो गए तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बाल मुडवाया और हदिय के जानवर को जबह किया, सहाबा भि चुंकि मदिनासे उम्राका एहराम पहेन कर आए थे और साथमे हदिय के जानवर भि हाँक लाए थे, इस लिए उन्होँने भि आपकि इत्तेबा करते हुए ऐसा हि किया, उसके बाद सहाबा केराम का यह काफला मदिना लौट आया।

इस तरह सुलह होदैबिया मुसलमानोँ के लिए फतह व कामरानि का पशखेमा साबित हुवा, क्योँ कि कोरैश खुद पिछे हटेने लगे और दिन प्रति दिन मुसलमानोँ कि तादाद बढति गई, और जंग कि नौबत आने से भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महफुज रहे, सुलह कि इस मुद्दत मे इसलाम लानो वालोँ कि संख्या, सुलह से पहले मुसलमानो कि संख्या के बराबर या उससे भि ज्यादा हो गई[1]। अभि सहाबा रास्ते हि मे थे कि सुरह फतह का नुजुल हुवा, अल्लाह तआला ने फरमायाः

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/336-337)

अनुवादः ए नबि ! बेशक हमने आपको खुलि फतह दे दि है ।(सुरतुल फतहः 1)

जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा के सामने इस सुरह को पढकर सुनाया तो एक अन्सारि सहाबि बोल पडेः ए अल्लाह के रसुलः क्या यह फतह है ? आपने फरमायाः कसम है उस रबकि जिस के हाथ मे मेरि जान है कि यह खुलि हुई फतह है[1] ।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! यह एक बडि और उम्दा और अच्छि बात है कि सुलह के बाद मुसलमानोँ कि तादा पहले से दुगनि हो गई ।

शिक्षकः सहि बात है मुसलमानोँ कि तादाद बहुत ज्यादा बढ गई, यह उस बात कि दलिल थि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि नुबुलत सच और हक है, और इस से यह पता चलता है कि हमारी अकलें हर चिज कि हकिकत को समझने से कासिर हैँ, उस लिए अल्लाह से मदद और मोआवनत तलब करनि चाहिए कि हमेँ नुरूस्त फहम और रास्त रवि अता करे ।

गज्वए खैबरः

शिक्षकः जब कबिला बनु कोरैजा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदिना से निकाल दिया तो वह खैबर मे जाकर बस गए, जब कि उनमेँ से कुछ लोगोँ ने मुल्के शामको अपना ठिकाना बनाया[2]।

खैबर एक बडा शहेर है जिस के अन्दर बहोत से किले और खुजुर के बागात भि थे ।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम किला का क्या मतलब है ?

शिक्षकः किला से मुराद वह बुलन्द व उँचि दिवारेँ हैं जो शहर के नवाहि मे बनाई जात हैं ताकि कोई दुश्मन शहेर मे दाखिल ना हो सके, शहेर मे आने जाने के लिए कुछ दरवाजे खुले होते थे जिन्हेँ रात होते हि बन्द कर दिया जाता था, एक शहेर मे कई एक किला भि हो सकते है, इस तरह कि हर सिम्त कि हिफाजत के लिए अलग किला हो, जैसे पुर्वि दिशा म एक किला हो जो उस दिशाको अपने घेरे मे लिए हुवे हो फिर दुसरि जेहत मे दुसरा किला हो ।

मोहर्रम सन 7 हिजरि को नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खैबर कि तरफ निकले[3]। खैबर के यहुदियोँ ने गज्वा अहजाब जिसे गज्वा खन्दक भि कहा जाता है, के मोका पर मुसलमानोँ के खेलाफ मुश्रिकोँ को जंग के लिए उभारने मे बडा किरदार अदा किया था ।

विधार्थिः क्या खैबर वालोँ से मुसलमानो कि जंग भि हुई थि ?

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/332)

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/201)

[3] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/342)

शिक्षकः हाँ, मुसलमान खैबर पहोंचैं और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खैबर वालों का मोहासरा कर लिया[1]।
विधार्थिः मोहासरा करने कया मतलब है ?
शिक्षकः मोहासरा का मतलब है कि लश्कर सहेर या गाँव के मदखल (दरवाजे) पर पडाव डाले ताकि शहेर के लोग न निकल सकैं और बाहर से कोई अन्दर न जा सके।
चुँकि खैबर मे बहोत से किले थे इस लिए मुसलमानों ने एक के बाद एक हर किले का मोहासरा करना शुरु कर दिया, जब एक किला फतह हो जाता तो दुसरे कि तरफ बढते, एक किला अपने जगह के एतबार से बहोत हि अहमियतका हामिल था, उस हैसियत से उसका फतहा करना बहोत मुश्किल था, अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः कल मै झन्डा एक ऐसे आदमि को दुँगा जिस के हाथों अल्लाह तआला हमे जित अता करेगा, वह अल्लाह और रसुल से मोहब्बत करता है और अल्लाह तआला और उस के रसुल उस से मोहब्बत करते हैं[2]।
विधार्थिः अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस सहाबि से मोहब्बत करते हों उन के लिए यह बडे मकाम व मरतबा कि बात है।
शिक्षकः यकिनन् यह एक बडा मकाम व बुलन्द मरतबा है, इस तआल्लुक से रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि गवाहि है। यहि वजह थि कि सहाबा पुरि रात उस विषय मे बात करते रहे कि यह आलि मकाम और खुश नसिबि किसे मिलने वालि है, हर एक यहि आरजु बान्धे हुवे और आस लगाए थे कि झण्डा उसे मिल जाए।
विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! हमे बताएँ कि वह खुश नसिब और बडे मरतबा वाले सहाबि कौन है ?
शिक्षकः जस सुबह हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः अलि बिन अलि तालिब कहाः ए अल्लाह के रसुल ! उनकि तो आँख आई हुवि है[3]। यानि कि वह आँख कि तक्लिफ कि वजह से उस मज्लिस मे हाजिर नहि हो सके हैं, इस लिए वह दुश्मन के मोकाबला करने कि जिम्मेदारि अदा नहि कर पाएँ गे।
विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! उसके बाद क्या हुवा ? आपने झण्डा किसि और को दे दिया ?
शिक्षकः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः उन्हें बुला लाओ, वहा बुलाए गए, रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकि आँखो मे लोआब दुहुन लगाया और दुआ किया, वह शेफायाब हो गए, गोया उन्हें को तक्लिफ थि हि नहि[4]।

---

[1] बुखारिः(3/134-135) हदिस नः4196)
[2] बुखारिः(3/137-138) हदिस नः(4210)
[3] साबिक हवाला
[4] साबिक हवाला

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! यह एक तो मोअजेजा था।

शिक्षकः हाँ यह एक मोअजेजा था जिसे अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए जाहिर किया, अल्लाह ने अपने नबि को बडा इज्जत व मकाम दिया और उनकि हर एक चिजमे बरकत दि।

हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु मुसलमानो कि फौज लेकर उसकिले के सामने पहोंचे, यहुदि किले से बाहर निकल कर मुसलमानोँ के मोकाबले मे आ खडे हवे और अलि बिन अबि तालिब रजियल्लाहु अन्हु ने उनसे जंग लगि। किला का एक दरवाजा भि था जिसे उठाने के लिए कई बहादुर मर्दोँ कि जरूरत थि, हजरत अलि ने

अकेले अप्ने हाथों पे उठा लिया और उस के जरिये दुश्मनोँ के तलवारोँ से बचाव करने लगे, वह लगातार लडते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन के हाथोँ उसकिला को फतह कर दिया, उसके बाद उन्होने उस दरवाजा को जमिन पर रख दिया[1]।

विधार्थिः इसका मतलब है कि हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु बहोत बहादुर और मजबुत थे।

शिक्षकः हाँ हाँ हजरत अलि रजियल्लाहु तआला अन्हु बहादुर और मजबुत इन्सान थे, लेकिन अल्लाह तआला ने उस जंग के मोका पर उनकि ताकत व कुव्वत को इतना दोबाला कर दिया था कि तने तन्हा उस दरवाजा को उठाए फिरते जिसे उठाने के लिए कई एक ताकतवर मरदोँ कि जरूरत पडति थि। यह तौफिके एलाहि कि देन थि क्योँ कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे मोहब्बत रखते थे और वह भि अल्लाह और रसुल से मोहब्बत रखते थे। हमे भि अल्लाह तआला और रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मो हब्बत करनि चाहिए, जब हम अल्लाह से मोहब्बत करेंगे तो अल्लाह हमारि ताकत व कुव्वत मे समाअत व बसारत मे, फहम व फरास्त मे अपनि तौफिक से नवाजेगा, हर तरह के शुरूर व फित्ने से हमारि हिफाजत करेगा और हमे हर किस्म कि भलाई कि तौफिक अता करेगा।

विधार्थिः रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानोँ को जब फतह मिल हो गई तो उन्होने आगे क्या किया ?

शिक्षकः जब खैबर वालोँ को शिकस्त हुवि तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हे खैबर से निकाल नहि, चुँकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नरमदिल और सखि थे इस लिए आपने उन्हेँ खैबर हि मे रहने दिया और इस शर्तमर उन्हे वहाँ खेति करने कि इजाजत दि कि पैदावार का निस्फ हिस्सा उनका बाकि निस्फ मुसलमानोँ का होगा।

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(3/359-350)

जब फिदक वालोँ को मालुम हुवा कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खैबर वालोँ के साथ इस तरह का मामला किया है तो वह भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह मोतालबा करने लगे कि उनके साथ भि खैबर वालोँ जैसा हि मामला कया जाए

तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ भि उसि शर्त के साथ मोआहिदा कर लिया के पैदावार मे आधा उनका और आधा मुसलमानोँ का होगा।

इसि गज्वा मे यह वाकया भि पेश आया कि जैनब बन्तुल हारिस ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पार भुना हुवा गोश्त भेजा जिस मे जहेर मिला हुवा था और चँकि वह जानति थि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बकरि का बाजु ज्यादा पसन्द है इस लिए उस ने उस हिस्से मे ज्यादा हि जहार डाला[1]।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके साथ इस तरह का बेहतरीन बरताव किया और वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एसि ओछि हरकत करने पर तुल आए।

शिक्षकः यकिनन् यह एक घटिया हरकत थि कि जबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उस तरह कि गद्दारि और घोखेबाजि कि जाए, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब बाजु को अपने मुहमे लिया तो आप को स्वाद कुछ खराब सा लगा और आपने उसे मुह से निकाल फैँका। आपके साच बिश्र बिन बराअ रजियल्लाहु अन्हो भि थे, उन्हो ने खा लिया, अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मुझे यह हड्डि बता रहा है कि इस मे जहेर मिलाया गया है[2]।

विधार्थिः अल्लाहु अक्बर ! यह कितनि बडि बात है कि हड्डि खुद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बता रहि है कि उस मे जहेर मिलाया गया है।

शिक्षकः हाँ, चुँकि हड्डि को भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत थि तो अल्लाह तआला ने हड्डि को बोलने कि शक्ति प्रदान कर दिया और उसने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको हकिकत से बाखबर कर दिया, तरिका एसा था जिसे हम नहि समक्ष सकते लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसकि खबर मिल गई। रहि बात हजरत बिश्र रजियल्लाहु अन्हु कि तो वह जहरिला गोश्त निगल गए थे इस लिए उनकि मौत हो गई।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस औरतको क्या सजा दि ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस औरतको बुलवाया और उस से पुछा कि आखिर उसने ऐसा क्योँ किय ? उसने कहाः क्यो कि आपने मेरि कौम से जंग लडि, तो मैने सोचा किः अगर वह बादशाह होँगे तो हमेँ उनसे नजात मिल जाएगि और अगर वह नबि हुवे तो उनका रब उनको हकिकत से बाखबर कर देगा, यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस औरतको माफ कर दिया।

[1] साबिक हवालाः(3/352-353)

[2] साबिक हवाला

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको माफ कर दिया जब कि वह उनको कत्ल करने के फिराक मे थि, यकिनन यह बडे अखलाक कि बात है।
शिक्षकः बेशक नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बुलन्द अखलाक के हामिल इन्सान थे, आप पर जो जुल्म करता और आपको जो तक्लिफ देता आप उसे नजर अन्दाज करते, यकिनन् आप अपने बरताव और मोआमलात मे बहोत हि बेहतरीन इन्सान थे। हमेँ भि अपने अख्लाक व किरदार मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरिके कि पैरवि करनि चाहि और आपको अपना नमुना बनाना चाहिए।

बादशाहोँ और हाकिमोँ को चिट्ठिः

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होदैबिया से मदिना वापस आए तो आपने मुख्तलिफ बादशाहोँ के नाम खत लिखकर उन्हे इस्लाम कि दावत दि। आपने नजाशि हबश के राजा, हिरक्ल रोम के राजा, किसरा फारस के राजा, मकोकस इस्कन्दरिया के राजा और इन जैसे दिगर बादशाहोँ और हाकिमोँ को खत लिखा[1]।
विधार्थिः क्या राजाओं कि भाषा भि अरबि थि ?
शिक्षकः आपने मालुमात रखने वाले तजरबाकार सहाबाको बतौरे सफीर उस राजाओं और हाकिमों के पास चिट्ठि देकर के भेजा था, वह सहाबा उन कौमो के भाषा जानते थे जिन कि तरफ उन्हेँ भेजा गया था, जिका मतलब है कि उन्होँ ने उन बादशाहोँ से उनकि भषा मे बात कि, जब आपने चिट्ठि लिखने का एरादा किया तो कहा गया कि बादशाह उसि सुरत मे कुबुल करेंगे जब उनपर मोहर लगि हो इस लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चाँदिकि अंगुठि बनवाई जिस पर मोहम्मद रसुलुल्लाह, तिन लाईन मे लिखा हुवा था[2]।
विधार्थिः यह बहोत अच्छि बात है कि सहाबा को दुसरे देशोँ कि भाषा भि जानते थे।
शिक्षकः आप पहले जान चुके हैं कि शुरुवात दौर मे पढना लिखना बहोत कम लोगोँ को आता था। आप गौर करेँ कि किस तरह अहदे नबवि मे मुसलमानोँ के अन्दर तालिमि बेदारि और दिगर कौमो कि भाषा सिखने क जज्बा पैदा हुवा। इस से पता चलता है कि इस्लाम तालिम को फरोग देता है बल्कि दुसरि जुबानोँ को सिखने पर उभारता भि है ताकि हम दुसरे भाषा बोलने वालोँ तक इस्लाम को पहोँचाएँ।

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः (1/258-291)
[2] साबिक हवाला

कजा उमराः

शिक्षकः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुफ्फारे कौरैश के दरमेयान सुलह होदैबिया के अंश तै पागए और इस बात पर इत्तेफाक हो गया कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा किए बगैर हि इस साल मदिना लौट जाएँ, और अगले साल सन 7 हिज्रि मे आकर उम्र करें। उस के बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आइन्दा साल उस उमरे के कजा के लिए उन तमाम सहाबा केराम के निकले जिन्हें सन् 6 हिज्रि मे होदैबिया के मकाम पर बैतुल्लाह से रोक दिया गया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कुछ दुसरे सहाबि भि चल दिए और सहाबा कि कुल संख्या 2000 हो गई[1] ।

विधार्थिः सुब्हानल्लाहिल अजीम ! सुरह होदैबिया मे मुसलमान सिर्फ 1400 थे, और सिर्फ एक सालकि कलिल मुद्दत मे उम्रा के अन्दर संख्या बढकर 2000 हो गई, यकिनन् यह तौफिके रब्बानि हि से हुई।

शिक्षकः तुमने अच्छा अन्दाजा लगाया, लेकिन मालुम होना चाहिए कि उस दरमेयान कुछ सहाबाए केराम कि वफात भि हो गई और कुछ गज्वए खैबर मे शहिद भि हो गए थे।

विधार्थिः उसके बाद क्या हुवा मोहतरम ?

शिक्षकः जब कौरैश को मुसलमानौं कि आमद कि खबर मिलि तो वह मुसलमानौं का तमाशा देखने लिए घरौं से निकल कर काबा के उत्तर दिशा मे कैकआन कि पहाडि पर जा बैठे और उन्होने आपस मे बातें करते हुवे कहाः तुम्हारे पास एक ऐसि जमात आई है जिसे यसरब (मदिनाका पुराना नाम) के बोखर ने तोड (कमजोर कर) दिया है। इस लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को हुक्म दिया कि वह पहले तिन चक्कर दौर कर पुरा करें, लेकिन रुक्ने यमानि और हजरे अस्वद के दरमेयान सिर्फ चलते हुए गुजरें[2]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! क्या इस कि कोई खास वजह थि के उन्हे तिन चक्कर दौडकर पुरा करने का हुक्म दिया ?

शिक्षकः हाँ इस आदेस का मकसद यह था कि मुश्रिकिन आपकि ताकतका अन्दाजा कर लें और जान लें कि उन्हें बुखार जैसि किसि चिज ने कमजोर नहि किया है। इस लिए तवाफ के शुरू के तीन चक्कर मे रम्ल (तेज चलना) सुन्नत है।

इस वाकया से हमे यह फाईदा मिलता है कि हमे दुश्मन के सामने अपनि ताकत का मोजाहेरा करना चाहिए और उन से डरा सहमा नहि रहना चाहिए, और हमे अपने जिस्मानि ताकत का ख्याल रखना चाहिए।

विधार्थिः क्या मुश्रिकौं ने अहदो पैमान को पुरा किया और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा को तक्लिफ देने से बाज रहे ?

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः (2/120) इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/12)

[2] मुस्लिमः(2/923) हदिस नः(1266)

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का मे तीन दिन गुजारा, फिर मुश्रिकोँ ने आपसे यह मोतालबा किया कि आप चले जाएँ तो आप चले गए[1]। इस उम्रा मे मुसलमानोँ और मुश्रिकिन के दरमेयान कोई बात नहि हुई।

गज्वा फत्हे मक्काः

शिक्षकः सुलह होदैबिया के जिक्र मे हम बता चुके हैँ कि उस मोआहेदा के अंश मे यह भि था कि जो कोई मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहदो पैमान मे दाखिल होजा चाहे दाखिल हो सकता है और जो कोई कोँरैश के अहदो पैमान मे दाखिल होना चाहे दाखिल हो सकता है।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! अहदो पैमान मे दाखिल होने का क्या मतलब ?

शिक्षकः इसका मतलब यह है कि जो कबिला नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ होना चाहे आपके साईड मे हो कर आपकि मदद करना चाहे और आपकि हिमायत करना चाहे तो वह कर सकता है, इसि तरह जो कोँरैश के साथ करना चाहे वह उसे भि इस कि आजादि होगि।

इस अंश के तहत बनु बकर कोँरैश के अहदो पैमान मे दाखिल हो गए और बनु खोजाआ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहदो पैमान मे दाखिल हो गए। इस तरह दोनो कबिले एक दुसरे से अमनो अमान और खतरे से बाहर हो गए लेकिन बनु बकर ने उस मोका को गनिमत जान कर चाहा कि बनु खोजाआ से पुराना बदला चुकाएँ, इस लिए बनु बकर ने बनु खोजाआ पर रात के अन्धेरे मे हमला कर दिया, रात कि तारिकि का फाईदा उठाकर कोँरैश के कुछ लोग भि लडाई मे शामिल हो गए।

इस लाडाई के जरिए बनु बकर और कोँरैश ने मिल कर बनु खोजाआ से किया हुवा वादा और सुलह तोड दिया। उस के बाद बदिल बिन वरका खोजाई कि सरपरस्ति मे एक जमात मदिना आई और रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बत्लाया कि कौन लोग मारे गए और किस तरह कोँरैश ने बनु बकर कि हेमायत कि[2]।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हेँ क्या जवाब दिया ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकि मदद और हिफाजत का वादा किया। क्योँ कि इस्लाम कि अख्लाकि तालिमका हिस्सा है कि अहदो पैमानका एहतराम किया जाए, उन अहदो पैमान मे सुलह भि शामिल है, इस्लाम कि अख्लाकि तालिम यह भि है कि जो कोई मुसलमानोँ के अहदो पैमान मे दाखिल हो उसकि मदद कि जाए और कभि उसे रुसवा होने ना दिया जाए, चुँकि इस्लाम वफादारी कि

---

[1] बुखारिः (3/144) हदिस नः(4252)

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः (4/31-37) इब्ने हजर, फत्हुल बारिफ(7/519-520)

तालिम देता है इस लिए हमे उन तमाम अहदो पैमान का एहतराम करना चाहिए जो इस्लामि हुकुमत मुसलमानोँ या गैर मुस्लिमोँ के साथ तै करति है।

विधार्थिः क्या नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे जंग कि ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुनखराबा बिल्कुल भि पसन्द नहि करते थे, यस लिए आपने कोरैश के पार एक सफिर भेजा और उन्हेँ तीन बातोँ का एख्तयार दिया, यातो वह बनि खोजाआ के कत्ल किए गए लोगोँ कि दियत अदा करेँ, या अपनि बराअत का इज्हार कर के बनि बकर कि मदद और पुश्तपनाहि से अलग हट जाएँ, या नहि तो जंग के लिए तैय्यार हो जाएँ।

विधार्थिः अल्लाह कि कसम उन एख्तयारात मे कोरैश और बनु खोजाआ हर एक के लिए अद्ल व इन्साफ का भरपुर ख्याल किया गया था, ऐसा मालुम होता है कि वह दियात देने के लिए तैय्यार हो गए होँगे ताकि जंग कि नौबात न आए और अम्नो अमान व सलामति का माहौल बरकरा रह सके।

शिक्षकः यह तुम्हारि अपनि राय है जो बहोत बेहतर है, लेकिन कोरैश ने अमनि ताकत व कुव्वत का मोजाहेरा करते हुए दियत देने से इन्कार कर दिया और बनु बकर कि मदद से भि बाज ना आए, बल्कि जंगको हि तरजिह दिया।

इस लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भि सहाबाको जंगकि तैय्यारि का आदेश दे दिया और अल्लाह तआला से दुवा किया किः ए अल्लाह ! कोरैशके जासुसोँ कि गिरफ्त कर और हमारि खबरोँ को राज रख ताकि हम उनपर अचानक हमला करसकेँ[1]। उसके बाद लोगोँ ने जंग कि तैय्यारियाँ शुरू कर दि।

विधार्थिः जासुसोँ कि गरिफ्त कर और हमारि खबरोँ को राज रख इसका क्या मतलब ?

शिक्षकः यानि कोरैश के किसि आदमि को इस कि खबर ना लगने दे कि हम उनपर हमला करने आ रहे हैँ, हमारि खबर उनतक ना पहोँचने दे, ताकि हम अचानक बेखबरि मे उनपर हमला बोल देँ।

इस से हमे पता चलता है कि दुवा कि क्या अहमियत है, क्योँ कि जब तक अल्लाह कि मदद शामिल न हो तब तक हम अपने मकसद मे कामयाब नहि हो सकते। इस लिए हमेँ हर तरह के मोआमलात मे अल्लाह से दुवा करते रहना चाहिए।

विधार्थिः कोरैश से जंग के लिए नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदिना से कब निकले ?

शिक्षकः 10 रमजानुल मोबारक, सन 8 हिज्रि को रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का का रुख किया, यानि हिज्रत के नौवेँ साल के बिच मे, आपके साथ 10 हजार सहाबा थे[2]।

विधार्थिः माशा अल्लाह सुलह होदैबिया के मोकाबले मे मुसलमानोँ कि संख्या बहोत ज्यादा थि, क्योँ कि सुलह होदैबिया पे वह 1500 के करिब हि थे, क्या एसा नहि है उस्तादे मोहतरम ?

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/39-40)

[2] इब्ने कैय्यिम, जादुल मआद,(3/433-434)

शिक्षकः आपने बिल्कुल दुरूस्त अन्दाजा लगाया, सुलह होदैबिया मे मुसलमानोँ कि संख्या 1400 से कुछ हि ज्यादा थि, लगभग दो साल कि मुद्दत मे इतनि बढ गई, क्योँ कि सुलह होदैबिया सन् 6 हिज्रि मे हुवा था । यह इस बात का प्रमाण है कि लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि सदाकत व सच्चाई और उस के दीने अजीम के खुबसुरत उसुल व मनमोहक तालिम और उम्दा अख्लाक व किरदार बेहतरीन रहनुमाई से मोतआस्सिर होकर गिरोह के गिरोह इस्लाम मे दाखिल हो रहे थे, इस्लाम कि यह तमाम खुबियाँ हमसे भि यह मोतालबा करति हैँ कि हम इस दिन के उसुलोँ पर कारबन्द रहेँ और गैरोँ के सामने उसकि तालिमात कि सहिह अक्कासि करेँ ताकि वह इस्लाम कि खुबसुरत इबादतोँ और बुलन्द व बेहतरीन व्यवहार से प्रभावित होकर इस्लाम कुबुल करने पर आमादा हो जाएँ।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! प्रस्न यह है कि मुसलमान रमजान मे जंग के लिए निकले थे तो क्या वह रोजा कि हालत मे थे या उन्होने रोजा तोड दिया था ?

शिक्षकः बहोत हि अच्छा प्रस्न है आपका जिस से पता चलता है कि आप तवज्जो से सुनते हैँ।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा मक्का कि तरफ चलते रहे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा रोजा थे लेकिन अस्फान और कदिद के इलाके के दरमेयान चश्मे पर पहोँच कर आपने रोजा तोड दिया और आपके साथ सहाबा ने भि रोजा तोड दिया[1]।

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैँ किः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमजान मे सफर किया यहाँ तक कि जब अस्फान के मकाम पर पहोँचे तो पानि तलब किया और दिन मे लोगोँ को दिखा कर पानि पिया और रोजा तोड दिया यहँ तक कि आप मक्का पहोँच गए[2] ।

यस से हमे यह फाइदा हासिल होता है कि मोसाफिर के लिए रोजा तोडना जाएज है, लेकिन बाद मे उसका कजा करना वजिब है, और हमे यह भि मालुम होता है कि इस्लाम दया और नरमिका दीन है न कि मोशक्कत और कठिनाई का, इसि लिए विद्वानोँ ने कहा है किः मोशक्कत कि वजह से आसानि दि जाति है।

विद्वानोँ ने दिने इस्लाम के प्रमाण कि रोशनि मे हि यह कायदा कुल्लिया निकाला है।

विधार्थिः यकिनन् दीने इस्लाम नरमि और आसानि का दीन है, हमे इस्लाम से बे शरण मोहब्बत है।

शिक्षकः जब कोरैशको खबर मिलि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रास्ते मे हैं तो उन्होँ ने खबर लेने के लिए अपने अदमि रवाना कर दिए, अबु सुफियान खबर लेने के लिए कुछ लोगोँ के साथ खुद हि नकले और मक्का के करिब मर्रुज्जहरान नामि जगह पर इस्लामि फौज से सामना हो गया।

विधार्थिः जब उसने इस्लामि लश्कर को देखा तो जाकर कोरैश को खबर दि या कुछ और किया ?

---

[1] बुखारिः(3/148) हदिस नः(4276)

[2] बुखारिः (3/148) हदिस नः(4289)

शिक्षकः उसने एसा कुछ नहि किया, उस जगह पर इस्लामि लश्कर कि निगहबानि के लिए कुछ सहाबा तैनात थे जिन का काम था लश्कर कि हिफाजत व निगहबानि करना, इस्लामि लश्कर के निगहबानोँ ने अबु सुफियानको हिरासत मे ले लिया और उन्हेँ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकि खिदमत मे पेश किया।
विधार्थिः यह तो बहोत हि अच्छि बात थि कि सहाबा ने इस्लामि लश्कर कि निगरानि का बन्दोबस्त किर रखा था। लेकिन प्रस्न यह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबु सुफियान के साथ क्या किया ? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कतल कर दिया या यरगमाल बना लिया ? या उसके साथ कोइ और हि मामला किया ?
शिक्षकः हम ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी से यह नतिजा पाया है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मकसद कत्ल व खन खराबा हरगिज न था और ना हि औपका यह मनशा था कि उन्हे अपना गुलाम बना कर उनपर हुक्मरानि करेँ, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो सिर्फ उन्हे कुफ्र कि जिल्लत से निकाल कर जहन्नम कि आग से बचा कर जन्नत मे दाखिल करना चाहते थे।
इन्हि हकिकतोँ को जान कर अबु सुफियान[1] और उनके साथि हकिम बिन हेजाम और बदील[2] ने इसलाम कुबुल कर लिया।
उसके बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हे एजाज बख्शते हुवे फरमायाः जो अबु सुफियान के घरमे घुस जाउ उसे अमान है और जो अपना दरवाना बन्द कर दे उसे भि अमान है और जो मस्जिदे हराम मे दाखिल हो जाए उसे भि अमान है[3]। अगर आपका मकरद लोगोँ को कत्ल करना और खुन बहाना होता तो आप अबु सुफियान को हरगिज यह एअजाज न देते।
वधार्थिः बिल्कुल सहि कहा आपने उस्तादे मोहतरम, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी से उनका महसद और तरिका बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है।
शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फत्हे मक्का के दिन मक्का के उँचे वाले रास्ते से दाखिल हुवे[4] जो कि मक्का मोकर्रमा के दझिण पुर्वि दिशा मे पडता है, आपने लश्कर को आदेश दिया कि हाथ रोक के रखेँ और सिर्फ उसि से लडाई करेँ जो उनसे लडाई करे[5]।
इस से यह बात बिल्कुल वाजेह हो जाति है के जब तक कोई खुद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लडाई नहि करता आप उस से नहि लडते, और लडाई उन्हि से किया जाता था जो मुसलमानों को नुक्सान पहोंचाने के फिराक मे होते थे तो उनसे अपनि जान कि हिफाजत के लिए मुसलमान लडते थे।

---

[1] बुखारिः(3/149) हदिस नः(4280)
[2] इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(7/8)
[3] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः (4/46)
[4] बोखारिः(3/151) हदिस नः(4290)
[5] इब्ने हजर, फत्हुलबारिः(8/10)

विधार्थिः इस्लाम के यह तमाम व्यहारिक मआमले अपनाने के काबिल हैँ, लेकिन क्या किसि ने मुसलमानोँ पर ज्यादति कि और उस से लडना पडा ?

शिक्षकः जिस तरह जंग के मैदान मे लडाई होति हे उस तरह कि नौबत तो नहि पेश आई, बल्कि अल्लाह तआला ने कोरैश के दिलोँ मे खौफ डाल दिया, साथ साथ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने कमाण्डरोँ को जंगि पेशकदमि से मना भि कर दिया था, जब आपने हथियार कि चमक देखि तो फरमाया कि क्या मै ने लडाई से मना नहि किया ? सहाब ने कहाः खालिद बिन वलिद से मुश्रिकोँ ने लडाई कि तो उन्होने भि उनका मोकाबला किया, आपने फरमायाः अल्लाह ने खैर व भलाई मोहद्दर कि।

उस जंग मे सिर्फ 24 कोरैशि मारे गए[1], होजैल के 4 लोग मारे गए[2] और मुसलमानो मे से खालिद बिन वलिद के साथियोँ ने शहादत पाई[3]।

यह भि इस बात का प्रमाण है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मकसद लडाई और खुन खराबा हरगिज नहि था, बल्कि उस दिन के जरिए लोगोँ पर रहमो करम न्योछावर करना चाहते थे ताकि लोग इस्लाम कुबुल कर के जन्नत के भागिदार हो जाएँ।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मे दाखिल हुवे तो कोरैश के साथ क्या रवैय्या एख्त्यार किया ?

शिक्षकः मक्का वालोँ ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर मक्कि जिन्दगि मे बहोत अत्यार किया था और बहोत सितम ढाया था, इस के बावजुद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फत्हे मक्का के मोकापर सबको माफिनामा जारि कर दिया और फरमायाः कोरैश के लोगो तुम्हारा क्या ख्याल है मै तुम्हारे साथ कैसा सुलुक करने वाला हुँ ? उन्होँने कहाः आप दयावान भाई हैं और दयावान भाई के सपुत हैँ आप से अच्छे बरताव कि उम्मिद है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः मै तुम से वहि बात कर रहा हुँ जो हजरत युसुफ अलैहिस्सलाम ने अपने भाईयोँ से कहि थि किः ला तस्रीब अलैकुमुल यौम यानि आप तुमपर कोई कार्वाहि निह होगि, जाओ तुम सब आजाद हो[4]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम आपने फरमाया आज तुम सब आजाद हो ! इस्का क्या मतलब ?

शिक्षकः यानि तुम सब आजाद हो, मै तुमसे किसि भि चिजका मोतालबा या बदला नहि चाहता, आप जिसको चाहते उसे कत्ल कर सकते थे, जिस से चाहते माल तलब कर सकते थे लेकिन आपने अपने बेहतरीन बरताव का इज्हार करते हुवे सबको आजादि का परवाना जारि कर दिया क्योँ कि आप रहमत व शफकत और हिदायत के अलमबरदार थे।

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/136)

[2] साबिक हवाला, इब्ने हजर फत्हुल बारिः(8/11)

[3] बोखारिः(3/149) हदिस नः4280)

[4] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/55)

विधार्थिः उस के बाद क्या हुवा शिक्षकः लोग अबु सुफियान के घर कि तरफ चल पडे और कुछ लोगों ने अपने घर के दरवाजे बन्द कर लिए, क्यौँ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया थाः जो अबु सुफियान के घर मे घुस जाए उसे अमान है और जो अपना दरवाजा बन्द करले उसे भि अमान है और जो मस्जिदे हराम मे दाखिल हो जाए उसे भि अमान। उसके बाद आपने आगे बढकर हज्रे अस्वदको बोसा दिया, तवाफ किया और बैतुल्लाह के आसपास और उसके छतपर जो मुर्तियां लगि हुवि थिं उन्हे अपने कमान से ठोकर मारते जाते और कहते जातेः

अनुवादः हक आगया और बातिल मिट गया, बेशि बातिल मिटने हि वाला था।(सुरतुल इस्राः81)

तवाफ से फारिग होकर आप सफा पहाडि पर चढे और बैतुल्लाह कि तरफ मोतवज्जेह होकर दोनौँ हाच आसमान कि तरफ उठा लिया और अल्लाह कि हम्दो सना कि और जो चाहा अल्लाह से दुवा किया[1]। इस से तवाफ कि अहमियतका पता चलता है और यह भि मालुम होता है कि मक्का मे दाखिल होने के बाद सब से पहले बन्देको बैतुल्लाह का तवाफ करना चाहिए, साथ हि जब इन्सानको कोई नेमत हासिल हो तो अल्लाह का सुक्र अदा करना चाहिए और रब कि हम्दो सना बयान करनि चाहिए, और हर लम्हा अल्लाह से दुवा र इल्तेजा करते रहना चाहिए। इसि तरह शिर्क का नुक्सान और उसके खतरनाक नतिजे का भि अन्दाजा होता है वह इस तरह से कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन तमाम बुतौँ को तोड दिया जो बैतुल्लाह के इर्दगिर्द रखे थे और फरमाया कि यह बातिल हैं और अल्लाह तआला कादिन हि वाजेह है।

विधार्थिः जब अल्लाह तआला ने मक्का जता दिया तो आप मक्का हि रहने लगे या मदिना वापर आए ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक खेमे मे कयाम किया जो कि शेबे अबितालिब के करिब लगाया गया था, यह वह जगह थि जहाँ कौरैश ने मुसलमानों को उनके नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहित इसमे नजरबन्द कर दिया था[2]।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मे 19 दिन तक ठहरे रहे और इस दौरान आप कस्र नमाज पढते रहे[3]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! क्या वह सफर मे थे कि उन्होंने कस्र नमाज अदा किया ?

शिक्षकः हाँ सफर मे थे, सफर जेहाद के लिए भि किया जा सकता है, तेजारत कि गरज से भि सफर किया जा सकता है और कभि हज्ज और उमरा जैसि इबादत के लिए भि सफर किया जा सकता है, जब कि दुसरे

---

[1] मुस्लिमः (3/1405-1406) हदिस नः(1780)

[2] इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(8/19)

[3] बुखारिः (3/152) हदिस नः(4298)

मबाह मकासिद के लिए भि सफर किया जा सकता है। और जब भि इन्सान सफर मे होगा वह चार रकात वालि नमाज को कस्र करते हुवे सिर्फ दो रकात हि पढेगा।

विधार्थिः उसके बाद नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अगलि पेशकदमि क्या थि ?

उस के बाद लोगों ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि खिदमत मे हाजिर होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत लिया और जुक दर जुक मुख्तलिफ कबिले के लोग इस्लाम मे दाखिल हो गए[1]। इस मोके पर सुरह नस्र नाजिल हुई जिस मे अल्लाह ने फरमायाः

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللهِ اَفْوَاجًا فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّه كَانَ تَوَّابًا

अनुवादः जब अल्लाह कि मदद आ जाए और तु लोगों को अल्लाह के दिन मे गिरोह दर गिरोह शामिल होता हुवा देख ले तो अपने रब कि तसबीह और हम्द बयान करने के साथ साथ उससे मगफेरत कि दुवा मांग, बेशक वह बडा हि तौबा कुबुल करने वाला है।

गज्वए हुनैनः

शिक्षकः जब कबिला हवाजन को यह खबर मिलि कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का फतह कर लिया है तो उन्होंने मालिक बिन औफ नजरि के पार इक्ठा हो कर तय किया कि मुसलमानोँ पर हमला किया जाए, इस मुहिम मे उनके साथ कबिला सकिफ[2] और गत्फान[3] वगैरह भि शामिल थे।

मुसलमानोँ कि तादाद दस हजार थि[4] और आजाद होने वाले दो हजार कि संख्या मे थे[5] जबकि मुश्रिकिन कि संख्या मुसलमानोँ से दुगना बल्कि उस से भि ज्यादा था[6]।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन कबाएल विरूद्ध कोइ जंगि पेशकदमि तो नहि कि फिर उन्होँने क्यों हमला करना चाहा ?

शिक्षकः जब अल्लाह के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब जब मक्का फतह कर लिया तो ताएफ के कबिले वालों को यह डर सताने लगा कि कहिँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंग के लिए अब

---

[1] साबिक हवाला, हदिस नः(4203)

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/80)

[3] बुखारिः (3/159) हदिस नः(4337)

[4] साबिक हवाला

[5] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/83)

[6] इब्ने हजर, फत्हुलबारिः(8/29)

उनकि तरफ रुख ना कर लें, इस लिए वह अपने बचाव के लिए खुद हि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमले कि तयारि करने लगे।

विधार्थिः इस गज्वा का नाम गज्वा हुनैन क्यों पडा ?

शिक्षकः इस गज्वा का नाम हुनैन इस लिए पडा क्यों कि उन कबाएल से मुसलमानो कि जंग मक्का और ताएफ के दरमेयान हुनैन नामि एलाके मे हि हुई थि।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको उन कबाएल कि जंगि तैय्यारियोँ के बारे मे खबर कैसे मिलि ?

शिक्षकः उन कबाएल के बारे मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह खबर मिलि कि यह जंग कि तैय्यारि कर रहे हैँ तो आपने अब्दुर्रहमान बिन अबि हदर असलमिको उनके हालात का पता लगाने के लिए भेजा, उन्होंने दुश्मन के ठिक ठिक हालत का पता लगाकर आपको खबर दि[1]।

इस से मालुम होता है कि खबर कि हकिकतका पता लगाना कितना अहेम है ताकि हम अन्जाने मे किसिपर जल्म ना कर बैठें। यह रवैय्या हमे दुश्मनों के साथ भि अपनाना चाहिए और अपनि समाजि जिन्दगि मे भि तमाम मुसलमान और दोस्त अहअध्याय के साथ हर मामले मे इसि तरिकाए नबवि को अपनाना चाहिए ताकि हम कोई एसा फैसला ना ले लेँ जो हकिकत दूर हो।

विधार्थिः यह बहुत अच्छि तालिम है जो हमेँ इस वाकया से हासिल होता है। जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको खबर मिल गई तो आपने क्या किया ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इस्लामि लश्कर के साथ मक्का से कुच किया और दस शौव्वालको हुनैन पहोँचे[2]।

रास्ते मे एक शख्स ने कहा कि आज हम कम संख्या कि वजह से पराजय का मुह नहि देखेंगे। यानि आज हमारे फौज कि संख्या इतना ज्यादा है कि यह कबिले हमे हरा नहि सकते। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको यह बात अच्छि नहि लगि[3]। यानि आपको यह अन्देशा सताने लगा कि कहिँ इस बात कि वजह से उन्हे किसि खराब अन्जाम का सामना न करना पडे।

हाँ मेरे अजिजो ! कुछ बातैँ बोलने मे तो बहोत हल्कि होति हैँ लेकिन उनका अन्जाम बहोत गम्भिर होता है।

उस सहाबि कि बात से पता चलता है कि उन गोगोँ संख्या ज्यादा होने कि वजह से उनके अन्दर खुशफहमि आ गई थि, जब कि खुशपसन्दि एक खतरनाक चिज है, इस लिए कि उस से घमण्ड और गुरूर पैदा होता

---

[1] हाकिम, अल मुस्तदरकः(3/48-49)

[2] इब्ने हजर,फत्हुल बारिः(8/27)

[3] साबिक हवाला

है, और अल्लाह तआला मोतकब्बिरोँ और अपनि कुव्वत पर इतराने वाले लोगों को पसन्द नहि करता है बल्कि अल्लाह तआला नरमि और खाकसार लोगोँ को पसन्द करता है।

चुँकि यह बात नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नापसन्द लगि थि इसि लिए आप यह दुवा पढने लगेः

अनुवादः ए अल्लाह मै तेरि हि तौफिक से कोशिस करता हुँ, तेरि हि कुव्वात से जित पाता हुँ, और तेरि हि मदद से जंग लडता हुँ।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानोँ के सामने उस नबि का किस्सा बयान किया जो अपने मानने वालोँ कि बहोत ज्याद संख्या कि वजह से खुदपसन्दि के शिकार हो गए थे, हजरत सोहैब रजियल्लाहु से मरवि है किः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गज्वए हुनैन के दोनोँ मे फजर कि नमाज के बाद कुछ एसि दुवाएं पढा करते जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको पढते न देखते थे, हम ने कहा कि ए अल्लाह के रसुल ! हम आपको एक ऐसा काम करते हुवे देख रहे हैँ जो कि पहले आप नहि किया करते थे, यह कौन सि दुवा है जो आप पढ रहे हैँ ? आपने फरमायाः तुम से पहले एक नबि गुजरे है जो अपने उम्मति कि संख्या ज्याद होने कि वजह से खुशपसन्दि मे मुब्तला होकर कहने लगे कि हमारि कौम को कोई चिज भि निचा नहि कर सकति। तो अल्लाह ने उनपर वहि कि कि तुम्हारि उम्मत को तीन मे किसि एक बात का एख्त्यार दिया जाता हैः यातो हम उनपर उन के एलावा किसि दुश्मनको मोसल्लत कर देते हैं जो उनके खुनके प्यासे होंगे। या उनपर तंगि और भुक मोसल्लत कर देते हैं, या उन्हे मौत के शिकन्जे मे ले लेते हैं। आप अपनि कौम से मश्वेरा कर लेँ कि वह इन तिनोँ मेसे किसे एख्त्यार करना चाहते हैं। उनकि कौमने कहा किः दुश्मन से मोकाबला कि हमारे अन्दर ताकत व कुव्वत हि नहि, भुक और तंगि पर हम सब्र नहि कर सकते, इस लिए हमारे उपर मौत हि भेज दिया जाए यहि हमारे लिए बेहतर है, लेहाजा अल्लाह ने उनपर मौत तारि कर दिया और वह तीन दिन मे सत्तर हजार लोग मौत के मुह मे चले गए। ए अल्लाह हम तेरि तौफिक से हि कोशिस करत हैँ, तेरि ताकत व कुव्वत से हि गल्बा पते और तेरि मदद से हि जंग लडते है[1]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! यह बडा हि मुफिद किस्सा है।

शिक्षकः यकिनन् इस किस्से मे हमरे लिए फाएदे कि बहुत सि बाते हैं, इसमे इस बात पर तम्बिह किया गया है कि इन्सान को अपने ताकत व कुव्वत, मालो दौलत, ओहदा व मन्सब पर गुरूर करे या इस बात पर फख्र करे कि वह जेहनि सलाहियत से मालामाल है और उसकि जरूरते पुरि करने के लिए उसके पास मदद करने वालोँ कि कसरत है, वह अपनि पढाइ मे कामयाब है या जिन्दगि कि रेस मे दुसरोँ से आगे है।

---

[1] अहमद, मुस्नदः(4/333) शोएब अरनाउत और दिगर माहक्को ने मुस्नद के इस हदिस कि सनदको मुस्लिम कि शर्तपर सहि करार दिया हैः(31/262-263)

बल्कि उसे यह जान लेना चाहिए कि उसकि ताकत व कुव्वत और उस के सारे अस्सअध्याय और हिले ख्वाह वह ताकत व कुव्वत मे जितने भि ज्यादा होँ, उसे अल्लाह तआला से जहा भि बेगाना नहि कर सकति। जो इन्सान सिर्फ अपने अस्बाब और तदाबिर पर हि कुल्लि एअतमाद करता है और उसे अल्लाह पर बिल्कुल भरोसा नहि होता, तो कभि कभार अल्लाह तआल सजा के तौर पर उसको उसकि मकसद मे नाकाम कर देता है, या उन अस्बाब से हि उसको महरूम करदेता है जिस मालो दौलत, मन्सब व ओहदा, जेहानत व बुद्धिमानि और इन जैसि जिन नेअमतोँ से भि वह मालामाल था, अल्लाह उससे वह तमाम तेअमतें उस से छि न लिया जाता है।

इस किस्सा से हमे यह फाईदा भि हासिल होता है कि अल्लाह तआला एसे व्याक्ति को नापसन्द करता है जिस का पुरा एअतमाद व भरोसा महज अस्बाब व वसाएल पर हो, और अल्लाह के नजदिक पसन्दिदा वह है जो अस्बाब व वसाइल तो जरूर अपनाता है लेकिन उसका भरोसा अल्लाह तआला हि पर होता है और वह यह अकिदा रखता है कि जब तक अल्लाह न चाहे तब तक कोई भि अस्बाब बजाते खुद कोइ फाईदा नहि पहोँचा सकते हैँ और न किसि किस्म का नुक्सान कर सकते है, हम अल्लाह तआल से तवक्कुल व एतमाद के जरिए यह तलब करते हैँ कि हमारे अस्बाब को हमारे लिए फाईदा मन्द और भलाई का कारण बना।

इस किस्सा मे हमारे लिए यह भि सबक है कि अस्बाब देखने मे कमजोर हि क्योँ ना होँ, अल्लाह अपनि ताकत व कुव्वत से जब चाहे उन के जरिए ऐसे मकासिद पुरा करा सकता है जो बडे बडे अस्बाब व वसाएल से ना मुम्किन होँ। उसकि मिसाल आप गज्वए बदर मे पढ चुके है कि मुसलमानो कि संख्या कितन कम होने के बावजुद अल्लाह तआला ने उन्हे फतह से सरफराज किया।

इसि तरह से नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमल से हमेँ यह भि मालुम होता है कि हमें ज्यादा से ज्याद ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह मढते रहना चाहिए।

विधार्थिः इस वाकया से हमे बहोत से दरूस हासिल हुवे, अल्लाह आपको जजाए खैर से नवाजे उस्तादे मोहतरम, यह जंग कैसे हुई ?

शिक्षकः वादिए हुनैन मे दुश्मन जंग के लिए पुरि तैय्यारि कर चुके थे, जिस दिन जंग बरपा हुई उसकि सुबह दुश्मन लाईन मे जंग करने लिए खडे थे और मोका पाते हि मुसलमानोँ पर अपनि पुरि कुव्वत व ताकत से मुसलमानों पर हमला बोल दिया।

मैदाने जंगमे पहोँचने के समय कुछ मुसलमान जंग के लिए अपने हथियार तैय्यार भि नहि किए थे, जिस कि वजह से शुरूवात मे उन्हें शिकस्त का सामना करना पडा[1]।

---

[1] अहमद, अलमुस्नदः(3/376-377) बोखारिः(2/340) हदिस नः(2930)

इसमे भि अल्लाह तआला कि बहोत बडि हिक्मत कारफरमा थि, वह यह कि मुसलमान यह सकेँ कि फतह व कामरानि लश्कर कि तादाद से नहि मिलत बल्कि अल्लाह तआला कि तरसे हासिल होति है, गज्वए हुनैन कि शुरूआत मे मुसलमानोँ कि जो हालत थि उसको अल्लाह तआल ने इस तरह बयान कियाः
अनुवादः यकिनन् अल्लाह तआला ने बहोत सि मैदान मे फतह दि है और हुनैन वाले दिन भि जब कि तुम्हे अपनि संख्या मर नाज था, लेकिन उसने तुम्हे कोई फाईदा न दिया बल्कि जमिन बावजुदे अपनि कुशादगि के तंग पड गई फिर तुम पिठ फेरकर मुड गए।
इस आयत मे अल्लाह ने मोमिनो को अपने फजल व एहसान कि याद दिलाई है कि अल्लाह तआला ने उन्हे अपने फज्लो करम से बहोत से गज्वात और सराए मे फतहो कामरानि से सरफराज किया, लेकिन उसकि वजह यह न थि कि वह कसरत मे थे बल्कि सिर्फ अल्लाह कि मदद से।
हुनैन कि लडाई के दिन उन्हें अपने कसरत मर नाज था फिर भि वह पिठ फेरकर मुड गए, सिवाए चन्द लोगोँ के जो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ साबित कदमि का मोजाहेरा करते रहे और आप यह कलेमात दोहराते रहेः मै नबि हुँ इस मे कोइ झुठ नहि, मै अब्दुल मुत्तलिब कि सन्तान हुँ, ए अल्लाह अपनि मदद से नवाज[1]। फिर अल्लाह तआला ने अपने रसुल और मोमिनोँ को फतह से नवाजा ताकि वह जान लेँ कि फतह व कामरानि सिर्फ अल्लाह के फज्लो करम से हासिल होति है न कि फौज कि संख्या से।
विधार्थिः इस से पता चलता है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कितने बहदुर थे कि अखिर तक डटे रहे और पिठ नहि दिखाई, बल्कि आप सहाबा को आवाज लगाया और उन्हेँ जंग के लिए नए सिरे से आमादा किया।
शिक्षकः बहोत खुब, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहादुरि मे अपनि मिसाल आप थे, जब जंग घमासान कि शुरू हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ मे मिट्टि लि और दुश्मनोँ के चहरे पर उडाते हुवे फरमायाः यह चेहरे मस्ख हो जाएँ, चुनानचे उनमे से हर एक कि आँखें उस एक मुट्ठि से अट गईँ, और अल्लाह ने उन्हें शिकस्त व दोचार किया। उस के बाद अल्लाह के रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानो पे माले गनिमत तक्सिम कि[2]।

गज्वाए ताएफः

शिक्षकः गज्वए हुनैन के बाद इस्लामि लश्कर ताएफ कि तरफ चल पडि थि, खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भि ताएफ का रूख किया और ताएफ के करिब पहोँच कर पडाव डाला, इस्लामि लश्कर ने किला ताएफ के पार पहोँच कर इस का मोहासरा कर लिया, इस जगह तीर अन्दाजि और पत्थर बाजि से

---

[1] मुस्लिमः(3/1401) हदिस नः(1776-1779)

[2] मुस्लिमः(3/1402) हदिस नः(1777)

बहोत से सहाबा शहिद हुवे, और मुसलमान किला के अन्दर दाखिल नहि हो सके। और उन्हे अपना केम्प ताएफ मे उस जगह ले जाना पडा जहाँ रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म ने मस्जिद तामिर कराई[1]। ताएफ का मोहासरा चालीस दिन पर रहा[2], एक कौल के मोताबिक मोहासरा बीस दिन तक जारि रहा, और एक कौल यह भि है कि उसकि मुद्दत बीस दिन से भि कम थि।

विधार्थिः यह तो बडि लम्बि मुद्दत है उस्तादे मोहतरम !

शिक्षकः मुद्दत तो लम्बि जरूर है, लेकिन जेहाद फि सबिलिल्लाह इस किसम के कुरबानि का मोतालबा भि करता है, ताकि लोगोँ को इस्लाम कि हिदायत मल सके। गौर करने कि बात है कि जब ताएफ के करिब पहोँच कर इस्लामि लश्कर खैमा लगाया तो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब से पहले मस्जिद तामिर कि जिस से मस्जिद कि अहमियत का अन्दाजा होता है। इसि तरह से खुशहालि हो के तंगि, हर हाल मे नमान कि पाबन्दि कि अहमियत का पता चलता है।

इस तविल मोहसरे से हमे यह पता चलता है कि बडे बडे मुहिम अन्जाम देने के लिए सब्र व तहम्मुल नेहायत जरूरि है, इसि लिए हमे जल्दबाजि से काम नहि लेना चाहिए या सुस्ति और काहिलि का शिकार नहि होना चाहिए, बल्कि अपने तमाम आमाल मे सब्र के साथ साथ नशात व फुर्ति से भि काम लेनि चाहिए ताकि हमेँ अल्लाह तआला अज्रो सवाब से नवाजे। कबिला बनु सकिफ कि जानिब से सहाबा कराम पर तीर चलाया गया तो किसि सहाबि ने रसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा किः ए अल्लाह के रसुल ! आप उनपर बददुवा कर दाजिए। आपने फरमायाः ए अल्लाह सकिफ वालोँ को हिदायत अता फरमा[3]।

विधार्थिः माशा अल्लाह यह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बुलन्द अखलाक कि मिसाल थि कि आपने उनपर बददुवा करने के बजाए उन्हे हिदायत कि दुवा दि जब कि उन्होंने आप से जंग और लडाई कि थि।

शिक्षकः यह बहोत प्यारि बात है मेरे अजिजो ! कि आपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि इस बुलन्द किरदार को समझा और अपने दामन मे सिरते नबवि का यह नायाब गौहर समेटा। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मकसद कभि भि यह न था कि आप दुश्मनोँ पर सिर्फ जित हासिल करें बल्कि आपका असल हदफ यह था कि लोगोँ को जहन्नम कि तरफ ले जाने वाले कुफ्र से नजात दिलाकर जन्नत कि रहनुमाई करने वाले दिने इस्लाम और अल्लाह कि मग्फेरत से फैजयाब कराए।

हमे भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमुनेको अपनाना चाहिए और इस बातका हरिस होना चाहिए कि लोगोँ को हक और सच कि तरफ रहनुमाई करेँ, इस्लाम कि तरफ बुलाएं, गुनहगार मुसलमानोँ

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/124-125)

[2] मुस्लिमः(2/737) हदिस नः(1059)

[3] तिरमिजिः(4/685) हदिस नः(3942)

को सिधे रास्तेपर लाए, हमें सिर्फ अपनि जाति कामयाबि के लिए हि फिक्र मन्द नहि रहना चाहिए बल्कि खैर व भलाई और सच्चाई का तलबगार होना चाहिए।

विधार्थिः उस मोहासरे के बाद क्या हुवा ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने ताएफ के बाद जाअराना कि तरफ जाने का इरादा किया जहाँ हुनैन के मालो गनिमत रखे गए थे, आपने उस उम्मिदपर माले गनिमत कि तक्सिम करने मे देरि कि के कहिँ कबिला हवाजन इस्लाम कुबुल कर लेँ और आप उनका माल लौटा देँ, इसि लिए आपने माले गनिमत बांटने मे देरि कि, गनिमत के माल को तकसिम करने बाद कबिला हवाजन का एक गिरोह आपके पास आया और आपने उनके कैदि और गुलामों और औरतों को वापस दे दिया[1]।

विधार्थिः वाकइ नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहोत हि दयावान थे।

शिक्षकः यकिनन् आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से ज्यादा दयावान और फैय्याज थे, आपका मकसद लोगोँ का माल लुटना या हडप करना न था, बल्कि आपका मक्सद सिर्फ यह था कि लोगों को कुफ्र और आजाब से नजात मिल जाए, आपने माले गनिमत कि तक्सिम मे सिर्फ इसि लिए देरि कि के कबिला हवाजन के लोग इस्लाम कुबुल कर लेँ और आप उन्हेँ तमाम गनिमत के माल वापस लौटा देँ, लेकिन अल्लाह का करना एसा हुवा कि कबिला हवाजन का वफद उस वक्त आपकि खिदमत मे हाजिर हुवा जब आप माल तक्सिम कर चुके थे, भिर भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हे अपनि सखावत और दया से नवाजते हुवे उन के गुलाम और औरतेँ उन्हे वापर कर दिया।

इस गज्वासे हमे यह फाइदा हासिल होता है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्तजाबुद दावात थे क्योँ कि आपने कबिला हवाजन के लिए हिदायत कि दुवा कि थि और हुवा भि यह कि अल्लाहने अपने रसूल कि दुवा कबुल कि और हवाजन का वफ्द आपकि खिदमत मे हाजिर होकर इस्लाम कुबुल किया।

गज्वा तबूकः

शिक्षकः रजब सन 9 हिज्रि को गज्वाए तबुक पेश आया[2]। मदिना मे लगातार नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको यह खबर मिलने लगि कि रोम कि फौज मुसलमानों के खेलाफ शाम मे फैसलाकुन मोकाबले के लिए तयारि कर रहि है, और उनके साथ रोमियो के हलिफ कबाएल भि हैं। इस जंग मे इस्लामि लश्करों का नाम जैसुलउसरा पडा।

विधार्थिः जेसुल उस्रा क्योँ नाम पडा ? उस्रा के क्या माने हैं ?

---

[1] बुखारिः (3/155) हदिस नः4318

[2] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/159)

शिक्षकः उस्रा के माने तक्लिफ और परेशानि के होते हैँ। यह गज्वा सख्त गरमि के मोसम मे हुवा था और उस वक्त मुसलमानोँ के पास बहुत कम जंगि तयारि और नियहात बे सरो सामानि थि उस लिए उन्हे जैसुल उस्रा का नाम दिया गया। इस गजवा का नाम भि गज्वतुल उस्रा पड गया। नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदिस मे इरशाद फरमाया किः जो शख्स जो शख्स साजो सामान और अस्लहा (हतियार) से जंग के लिए तयार करेगा उस के लिए जन्नत कि बशारत है, तो हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु ने उस लश्कर को जंगि हतियार तयार किया[1]।

विधार्थिः अल्लाह तआला हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हुको जन्नत मे आला मकाम अता फरमाए जिन्होँ ने इस्लामि लश्कर को जंगि अस्लहाजात से मालामाल किया।

शिक्षकः हजरत उस्मान बिन अफ्फान रजियल्लाहु अन्हु ने जंगि तयारि मे हिस्सा लेकर जन्नत मे अपना मकाम बना लिया, हमे हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हस कि इस बेशरण सखावत से यह सबक मिलता है कि अल्लाह कि राह मे और भलाई कि जगह मे खर्च करने मे बखिलि से गुरेज करना चाहिए। इस वाकया से हमें यह भि मालुम होता है कि जेहाद और दावत के काम मे मालो दौलत कि भि अपनि एस अहमियत है, जिस से इन्सानि जिन्दगि मे कस्बे मोआश कि अहमियत का अन्दाजा होता होता है, ताकि इन्सान अपनि कमाई से भलाई के काम मे खर्च कर सके, हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह के राह मे सौ उँट सदका किया औ। उन्हेँ जंगि अस्लहों से मैदाने जंग के लिए तैय्यार किया, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर लोगोँ को राहे खुदा मे इन्फाक कि तरगिब दि, फिर हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु ने दो सौ उँट दिए, फिर आपने सदका कि तरगिब दिलाई तो हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु ने उस दफा तिन सौ उँट का सदका पेश किया और उँटो को जंग के लिए तैय्यार किया[2]।

इस वाकया से हमे यह भि मालुम होता है कि तंग हालि व परेशानि का मतलब हमेशा यह नहि होता कि अल्ला तआला बन्दाए मुस्लिम से या मुसिबत मे मुब्तला कौम उम्मत, और समाज से नाराज है, क्योकि बसा औकात तंगि और परेशान हालि अज्रो सवाब मे बढोतरि का सबब होत है, जब कि कभि कभार तंगि के जरिए अल्लाह तआला मुसलमानोँ को आजमाता भि है, यह एक इस्लामि लश्कर था जो नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने मे जंग कि तयारि कर रहा था और उसे हर तरफ से परेशानियों का सामना करना पडा। एक तरफ शदिद गर्मि का मोसम जिस मे जमिनपर पैर जलता, तो दुसरि तरफ मालो मताअ और साज सामान कि इतनि कमि कि इस्लामो लश्कर बे सामानि कि शिकायत कर रहा था।

विधार्थिः क्या हजरत उस्मान के एलावा भि किसि सहाबि ने जंग कि तयारि मे हिस्सा लिया ?

---

[1] बुखारिः (3/18)(2/298-299) हदिस नः(2778)

[2] तिरमिजिः(5/584) हदिस नः(3700)

शिक्षकः हाँ, हर सहाबि ने अपनि ताकत के मोताबिक हिस्सा लिया, यहाँ तक कि किसि के पार आधा किलो कोई चिज देने कि सलाहियत थि तो उसने उतना भि दिया। जिस सहाबि के पार कुछ भि न था वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पार आकर कहता कि उन्हे दुश्मनों से जंग के लिए लश्कर के साथ सवारि पर बिठा लिजिए, उन मे कुछ ऐसे भि थे जिन्हे आप सवारि कि कमि के सबब जंग मे न लेजा सके और उन्हें मजबुरन भरि हुई आखों के साथ वपस छोडना पडा। वह इस लिए रो पडे कि उनके पास सवारि न थि के उसपर सवार होकर मुसलमान भाईयों के साथ दुश्मन से मोकाबला करं[1]।

जेहाद मे हिस्सा लेनेका उनका जज्बा इस कदर ज्यादा था और उनके दिल मे इस कदर अल्लाह और उसके रसुल कि मोहब्बत थि कि अल्लाह तआला ने उसको कुरआनका हिस्सा बना दिया[2] । अल्लाह तआला ने फरमायाः

अनुवादःकमजोरों पर, बिमारों पर और उनपर जिनके पास खर्च करने के लिए कुछ भि नहि, कोई हरज नहि है बशर्ते कि वह अल्लाह और उसके रसुल कि खैरख्वाहि करते रहें, ऐसे नेक लोगों पर इल्जाम कि कोई गुन्जाईश नहि, अल्लाह तआला बडि मग्फेरत व रहमत वाला है।(सुरह तौबाः91-92)

हाँ उनपर कोई हरज नहि जो आपके पास आते हैं कि आप उन्हें सवारि उपलब्ध करा दें तो आप जवाब देते हैं कि मै तुम्हारे वास्ते सवारि के लिए कुछ भि नहि पाता हुँ तो वह गम और मलाल मे अपने आँखों से आँसु बहाते हुवे लौट जाते हैं के उनके पास खर्च करने के लिए कुछ भि मोयस्सर नहि।

विधार्थिः क्या उन सहाबा को भि अल्लाह ने अज्रो सवाब दिया जो दुसरे सहाबा के साथ जंग मे शरिक न हो सके ?

शिक्षकः उनके बारे मे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मदिना के अन्दर कुछ ऐसे भि लोग रह गए हैं जो हर वादि और हर मोडपर तुम्हारे साथ शरिक हैं, सहाबा ने कहाः वह तो मदिना मे हैं ?आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः हाँ, उन्हे कुछ वजुहात ने रोक रखा हे[3]। यह इस बात का प्रमाण है कि जब इन्सान कि नियात नेक और दुरुस्त हो और वह शरई वजह कि वजह से भलाई के काम मे शरिक ना हो सका हो तो अल्लाह तआल उसे नेक नियत कि वजह अज्रो सवाब से नवाजता है। इसि लिए हमे अमनि नियतो का जाएजा लेते रहना चाहिए ताकि अल्लाह तआला के नजदिक हमे अपनि नियत पर सवाब मिल सके।

विधार्थिः क्या मुसलमानों ने तबुक कि जंग लडि ?

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/1611)

[2] इब्ने तफसिर, तफहिमुल कुरआनः(2/396)

[3] अहमद, अलमुस्नदः(3/182)

शिक्षकः जंग कि तयारि का एलान हुते हि मोनाफिकों कि अस्लियत जाहिर हो गई और वह लोगोँ को जंग से डराने और खौफ दिलाने लगे और कहने लगे कि इस चिलचिलाति धुप मे जान जोखिम मे ना डालेँ, वह इन्हे यह सुझाव भि देते कि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पार जाकर कोई बहाना बना दे। लेकिन अल्लाह तआला तो दिलोँ के भेद से वाकिफ है, उसने उनका पोल खोल दिया और सारि हकिकत सामने आ गई, अल्लाह तआला ने फरमायाः

अनुवादःपिछे रह जाने वाले लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चले जाने के बाद अपने बैठे रहनाजे पर खुश हैँ, उनहों ने अपने माल और अपने जानो के जरिए अल्लाह कि राह मे जेहाद करना ना पसन्द किया और कह दिया कि इस गर्मि मे न निकलो। कह दिजिए कि दोजख कि आग इस से भि बहोत सख्त गरम है, काश वह समझ पाते। पस उन्हेँ चाहिए कि कम हंसे और बहोत ज्यादा रोएँ उसके बदले जो यह लोग करते है।(सुरह तौबाः 81-82)

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! मुसलमानों कि जमात मे अगर मोनाफिक मौजुद होँ तो यह बहोत बडि परेशानि वालि बात है।

शिक्षकः यकिनन् मोनाफकत और मोनाफिक मुसलमानो के लिए बहोत परेशानि और मुसिबत हैं, उसकि वजह यह है कि बजाहिर तो वह इसलाम का गुन गान करते हैँ लेकिन बातनि तौर पर कुफ्रको छुपाते हैँ। मुसलमानोँ को उन मोनाफिकों के आदत व व्यवहार से होशियार रहने कि जरूरत है, मोनाफिक लोग मुसलमानोँ को आपसि नफरत पर उभारते और इत्तेहाद व एकजेहति से नफरत दिलाते हैँ, वह एताते एलाहि मे इस कदर सुस्त व काहिल होते हैँ कि रूख्सत और आसानियाँ हि ढुण्डते फिरते हैँ।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! क्या मुसलमान मोनाफिकोँ के बहकावे मे आकर उनकि बात मान गए ?

शिक्षकः मुसलमानों पर मोनाफिकों के बहकावे का कोई असर नहि हुवा, बल्कि वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिवानावार हाजिर हुवे और जंग के लिए निकल गए, हजरत काअब बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु उनका नक्शा खिंचते हुवे कहते हैः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सहाबा इतने ज्यादा संख्या मे थे कि उनका शुमार किसि फाईल मे भि मुम्किन न था[1]। यानि संख्या ज्यादा होने कि वजह से उनका नाम किसि दफ्तर मे भि नहि लिखा जा सकता था।

विधार्थिः यह कितनि अच्छि बात थि कि कोई भि सहाबि जेहाद से पिछे नहि रहना चाहते थे।

शिक्षकः हाँ कोई भि सहाबि जेहाद से पिछे नहि रहे सिवाय उनके जिनके पास शरई वजह थि, इस जंग से पिछे रह जाने वाले सहाबियोँ मे हजरत काअब बिन मालिक, मुरारा बिन रबिया और हेलाल बिन ओमैय्या रजियल्लाहु अन्हुम भि शामिल थे[2]।

---

[1] बुखारिः (76-180) हदिस नः(4418)

[2] मुस्लिमः(4/2120-2128) हदिस नः(2769)

उन सहाबा का किस्सा बहोत हि दिलचस्प है, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंग से लौटकर मदिना आए तो पिछे रह जाने वाले सहाबि आपके पास आते और अपना उज्र पेशकर के चले जाते, आप भि उनका उज्र सुनकर कुबुल करते और उनके लिए मगफेरत कि दुवा करते[1]। सिवाए उन तीन सहाबि के, जब वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आइ तो यन्होने खुल कर यह एतराफ किया कि हमारे पास जंग मे शरिक न होने का कोई वजह नहि था, हजरत काअब रजियल्लाहु अन्हु ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा किः अगर मे आप से झुठ बोलुं आर आप मेरि बात से राजि भि हो जाएँ तो अनकरिब अल्लाह तआला आपको आगाह कर देगा और आप मुझसे नाराज हो जाएँगे। अल्लाह कि कसम मेरे पार जंग मे शामिल न होने का कोई शरई उज्र न था.....[2]।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! यह तो अजिब और बहोत बडि बात है।

शिक्षकः हाँ उन्हे मालुम था कि अल्लाह तआला उनकि हरेक हरकत को जानता है, इस लिए अगर वह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास झुठ बोल भि देंगे तो उन्हे उसका कोई फाइदा नहि मिलने वाला, यहि वजह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भि उन्हे उनके हालपर छोड दिया, और उनके लिए अल्लाह के फैसले का इन्तेजार करते रहे, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे बाइकाट कर लिया और लोगों को भि यह आदेश दिया कि उनसे बातचित ना करेँ और कोई तआल्लुक ना रखें यहां तक कि जमिन उनपर तंग हो गई। चालीस दिन के बाद अल्लाह ने उनका तौबा कुबुल किया और उनके सच्चे नियत कि सबब उनके माफि का परवाना जारि कर दिया। कुरआन कि यह आयतें उन्हि के सिलिसले मे नाजिल हुई हैः

अनुवादः और तीन लोगोँ के हाल पर भि जिन का मामला बाद के लिए छोड दिया गया था, यहाँ तक कि जब जमिन इतना कुशादा होने के बावजुद उनपर तंग हो गई और वह खुद अपनि जान से तंग आ गए और उन्होँ ने समझ लिया कि अल्लाह से कहिँ शरण नहि मिल सकति सिवाए इसके कि उसकि तरफ रूजु किया जाए, फिर उनके हाल पर तवज्जोह किया ताकि वह आईन्दा भि तौबा कर सकेँ, बेशक अल्लाह तआला तौबा कुबुल करने वाला बडा मेहरबान है।(सुरह तोबाः 118)

विधार्थिः गज्वा के बारे मे आपने नहि बताया कि इस मे लडाई हुइ कि नहि ?

शिक्षकः अल्लाह तआला ने अपने रसुल और सहाबाको लडाई से महफुज रखा और दुश्मन से मुडभेड न हुई, अल्हम्दुलिल्लाह सब के सब सहि सलामत लौट आए और अहले मदिना ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा का स्वागत किया[3]।

---

[1] साबिक हवाला

[2] साबिक हवाला

[3] बुखारिः (3/181) हदिस नः(4427)

गिरोहका सालः

शिक्षकः सन 9 हिज्रि को गिरोहका साल कहा जाता है, यस कि वजह यह है कि जब अल्लाह तआला ने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फत्हे मक्का से नवाजा, कबुल बनु सकिफ के लोगों ने इस्लाम कुबुल कर लिया और आप गज्वए तबुक से फारिग हो गए तो मुख्तलिफ जगहोँ से अरब के लोग आकर आपसे बैअत करने लगे।

शिक्षकः हा लोग बडि तादाद मे गिरोह व जमात कि शकल मे आकर इस्लाम कुबुल करने लगे, उन वफुद कि संख्या 60 से ज्यादा है[1]।

इस से पता चलता है कि सब्र व तहम्मुल को लाजिम पकडना, मेहनत और लगन से काम करना और जल्दबाजि से गुरेज करना कितना अहेम और जरूरि है, हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का कि जन्दगि पे अपनि कौम कि सारि तक्लिफें बरदाश्त करते रहे, तंग आकर मदिना हिज्रत करने पर मनबुर हो गए, आपकि कौम के एलावा दुसरे लोग भि आप से मोकाबला करते रहे, लेकिन आप हर महाज पर सब्र करते रहे और डटे रहे, लोगोँ को इस्लाम कि दावत देने मे कोई सुस्ति काहिलि नहि किया। आखिरकार इस तविल आजमाईशि सफर के बादको आपको कामयाबि और फतह नसिब हुई और लोगोँ ने फौज दर फौज कि शकल मे आकर इस्लाम कुबुल किया और अप से बैअत किया।

हमे पुरे इस जिवनी से यह सबक मिलता है कि हमे भि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक्शे कदम पर चलते हुवे हर महजपर भलाई के हर काम मे सब्र को लाजिम पकडना चाहिए।

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(1/291-359)

हज्जतुल वेदाः

शिक्षकः सन् 9 हिज्रि के अखीर मे अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल किः

अनुवादः जो इस घर कि राह पा सकते हों उन लोगों पर अल्लाह तआला ने हज्ज फर्ज कर दिया है, और जो कोई कुफ्र करे उस से बल्कि तमाम दुनिया से अल्लाह तआला बेनियाज है।(सुरह आले इम्रानः97)

इस आयत के नाजिल होते हि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्ज का अज्म कर लिया और जरा भि ताखीर नहि कि[1]। आपने 10 हिज्रि मे लोगों के दरमेयान हज्जका एलान किया, एलान होते हि बहोत से लोग मदिना आ पहोंचे ताकि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि रहनुमाई मे हज्ज का फरिजा अन्जाम दे सकें[2]।

विधार्थिः गोया लोग नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि पैरवि और अनुशरण के बहोत हरीस थे ?

शिक्षकः यकिनन् सहाबा के अन्दर आपके हर छोटे बडे अमलका इत्तेबा करने जज्बा मौजुद था, यहि वजह है कि उन्होंने हर वह चिज हम तक पहोंचा दि जो उन्होंने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को करते हुवे देखा या आपसे सुना, इसका तकाजा है कि हम भि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि सुन्नत पर अमल करें और उसमे किसि भि किसम कि कोई भि कमि या बेसि ना करें और ना हि कोई ऐसि बिदअत इजाद करने कि गलति करें जो न तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है और न सहाब से रजियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

विधार्थिः क्या यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका पहला हज्ज था ?

शिक्षकः सन् 9 हिज्रि से पहले हज्ज फर्ज हि नहि हुवा था इस लिए आपने इस से पहले कभि हज्ज नहि किया, यह हज्ज आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला और आखरि हज्ज था[3]। इस लिए कि इस हज्ज के बाद हि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तेकाल हो गया और आपको दुसरे हज्ज का मोका न मिला, इसि लिए इस हज्जका नाम हज्जतुल वेदा पडा।

विधार्थिः इस हज्जके काबले जिक्र चिजे क्या हा उसतादे मोहतरम ?

शिक्षकः अरफा के मैदान मे अल्लाह तआला ने यह आयत नाजिल कियाः

अनुवादः आज मैने तुम्हारे लिए दीनको मोकम्मल कर दिया और तमपर अपना इनाम पुरा कर दिया और तुम्हारे लिए इस्लामको मजहब कि हैसियत से रजामन्द हो गया।(सुरतुल माइदाः 3)

यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि अल्लाह तआला ने हमारे लिए दीन इस्लामको मोकम्मल कर दिया है, इस के अन्दर किसि तरह कि कोई भि ज्यादति या कमि कि कोई भि गुन्जाइश नहि है, वह हर तरह से

---

[1] इब्ने कैय्यम अल जौजि, जादुल मआदः(3/595)

[2] मुस्लिमः(2/886-887) हदिस नः(1218)

[3] बुखारिः (3/174) हदिस नः(4404)

मोकम्मल है, हमे सिर्फ इसे जानने, समझने और उसपर अमल करने कि जरूरत है। इस दीनको अल्लाह ने नेअमत से ताबिर किया है और हकिकत मे इस्लाम एक बहोत बडि नेअमत है, हमे इस नेअमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह ने हमे इस दीन कि हिदायत कि, हमे इस दीन के आदेशों पर अमल करने के साथ साथ लोगों को इसकि तरफ दावत भि देनि चाहिए।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हज्ज मे एक खुतबा भि दिया था जिस मे आपने फरमायाः

तुम्हारे खुन, तुम्हारे मालो व जाएदाद तुम्हारे उपर इसि तरह हराम हैं जिस तरह तुम्हारा यह दिन तम्हार यह महिना और तुम्हार यह शहेर हसाम है[1]।

हजरत जाबिर रजियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैः मैने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको यौमुन्नहर (कुरबानि के दिन) देखा कि आप अपनि सवारि पर सवार होकर जमरात को कंकरि मार रहे हैँ और फरमा रहे हैः मुझ से यह हज्ज के मनासिक सिख लो, मुझे नहि मालुम मै इस हज्ज के बाद दोबारा हज्ज कर पाउँगा या नहि[2]। इस के अन्दर इस बात कि तरफ इशारा था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफातका वक्त करिब आ गया है, साथ हि साथ यह भि पता चलता है कि आपको इस बात कि चाहत थि कि लोग आप से शरियत कि तालिम सिखकर तमाम इबादात आपके तरिके पर अन्जाम दें।

इस लिए हमारे उपर वाजिब है कि हम दिनि तालिम हासिल करने मे मेहनत व लगन से काम लेँ और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहिह पैरुकार बनकर जिन्दगि गुजारें।

सरिया ओसामा बिन जैदः

रोमियों से मोकाबले के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफर के महिने मे एक बड लश्कर तयार किया, और हजरत ओसामा बिन जैद रजियल्लाहु अन्हु को उसका कमाण्डर मोकर्रर किया, लश्करे ओसामा कि तैय्यारि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात से दो दिन पहरे हुइ थि, हजरत ओसामा बिन जैद रजियल्लाहु अन्हु के साथ इस लश्कर मे शरिक होने वाले मोहजरिन व अन्सार के केबारे सहाबा भि थे, जिम मे अबु बकर और अबु ओबैदा रजियल्लाहु अन्हुम भि थे, यह आखरि सरिया था जिसे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बजाते खुद तैय्यार किया था[3]।

विधार्थिः हदिस मे नुदुब शब्द आया है उसका क्या मतलब ?

शिक्षकः इसका मतलब है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को रोमियों से जेहाद करने कि दावत दि।

---

[1] मुस्लिमः(2/886-892) हदिस नः1218)

[2] मुस्लिमः(3/943) हदिस नः(1297)

[3] इब्ने हजर, फतहुल बारिः(8/152)

इस सरिया मे गौर करने कि बात यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनि उम्मत कि सलामति और देफा कि फिक्र किस कदर रहति थि कि आप मरजुल मौत मे थे इस के बावजुद भि वफात से सिर्फ दो रोज पहले लश्कर को दुश्मन से मोकाबले के लिउ तैय्यार कर रहे थे। इस से हमे यह हौसला मिलता है कि हम आखरि सांस तक मेहनत और लगन से अपनि जिम्मेदारि अन्जाम देते रहेँ ताकि हमारि मेहनतोँ के फाएदे से उम्मते मुस्लेमा मुस्तफिद और हम खुद अल्लाह के खुशनुदि से मुस्तफिद होँ।

शिक्षकः हजरत ओसामा रजियल्लाहु अन्हु उस समय नौउम्र थे[1]।

यह इस बात कि दलिल है कि जरूरि नहि है कि काएद व कमाण्डर हमेशा उम्रदराज हि हो, बल्कि कयादत के लाएक और काबिल होना जरूरि है, क्यों कि रहबरि और रहनुमाई एक ऐसि जिम्मेदारि है जिस का तआल्लुक काबलियत और सलाहियत से है जो हर इन्सान के अन्दर मुख्तलिफ दर्जे कि होति है, अगर कोइ नवउम्र शख्स किसि गिरोह कि कयादत कर रहा हो तो उस जमात के बडे और उम्रदराज लोगोँ कि शान मे कोइ कमि नहि होति है।

इस का मतलब है कि हम से किसि कमउम्र इन्सानके पास अगर किसि मैदान और फन मे दुसरे लोगों से ज्यादा महारत हो तो हमें उस फनमे उस शख्स कि रहबरि व रहनुमाई कुबुल करने मे कोई हरज नहि होनि चाहिए, बल्कि उसे हि रहबरो रहनुमा मुन्तखब करनि चाहिए, उसकि मदद करनि चाहिए और उसका पुरा साथ देना चाहिए।

इस से यह बात भि समझ आति है कि कभिकभार किसि मैदान या फनमे कमउम्र इन्सान के अन्दर भि ऐसि महारत व काबिलियत पाई जा सकति है जो बडे लोगोँ के अन्दर न पाई जाति हो, जिसका हमे ख्याल करना चाहिए ताकि अपने मकसद को हासिल करने मे हमे कामयाबि मिल सके।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम ! उस सरिया कि जंगि तैय्यारियोँ कि रोशनि मे आपने हमे इतना सार फाइदा हासिल करने का मोका फराहम किया, इसपर अल्लाह तआला आपको बेहतर अज्र से नवाजे, लेकिन सवाल यह है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात पेश आजाने के बाद उस लश्कर का क्या बना ?

शिक्षकः शाम (मौजुदा सिरिया) कि तरफ जाने के एरादे से यह लश्कर मदिना से निकला और मकामे जुर्फ मे खेमा लगाया लेकिन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात पेश आजाने के सबब आगे ना बढ सका और मदिना वापस हो गया।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात के बाद हजरत अबु बकर खलिफा चुने गए और लश्करको तैय्यार कर के नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश को नाफिज करने का हुक्मनामा जारि किया,

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/190)

इस वजह से सरिया ए ओसामा बिन जैद अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु के दौरे खेलाफत कि पहलि फौजि मुहिम करार पाया। इस लश्कर मे मुसलमानोँ कि तादाद तीन हजार थि[1]।

इस से पता चलता है कि खलिफा ए औव्वल अबु बकर सिद्दिक रजिल्लाहु अन्हु नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्मको नाफिज कने के किस कदर हरीस थे, हमारे अन्दर भि यह जजबा पैदा होना चाहिए कि हम नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों कि पालना करेँ और आपमे मना किए हुवे चिजों से दुर रहेँ।

इस से एक फाइदा यह भि मालुम होता है कि काएद व रहनुमा कि वफात के बाद भि उसके खैर व भलाई पर मब्नि आदेशो का पालना करते हुवे उसे नाफिज करना चाहिए।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम यह बहोत बडे फाइदे हैं। एक प्रस्न यह कि क्या हजरत ओसामा के साथ तमाम सहाबा इस सरिया मे शरिक हुवे ?

शिक्षकः आप जान चुके हैँ कि इस लश्कर मे अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु भि शामिल थे, हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु खेलाफत के ओहदे पर फएज थे इस लिए मुसलमानोँ के मोआमलात कि देखभाल कि जिम्मेदारि छोडकर जंग मे नहि निकल सकते थे और खेलाफत के मोआमलात मे उन्हेँ हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु कि जरूरत होति थि इस लिए लश्कर के कमाण्डर हजरत ओसामा बिन जैद रजियल्लाहु अन्हु से उन्हों ने

हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु को साथ रखने के लिए इजाजत तलब कि और हजरत ओसामा बिन जैद ने यह इजाजत देदि कि हजरत उमर मदद के लिए हजरत अबु बकर के साथ रह सकते हैँ।

विधार्थिः यह कितनि अच्छि बात है कि हकिमे वक्त एक कमाण्डर से इजाजत तलब कर रहे हैँ।

शिक्षक इस्लाम एक मोनज्जम दीद है और हर एक को उसके शायानेशान एहतराम करने कि तालिम देता है, हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अन्हु मुसलमानों के वालि और खलिफा मोकर्रर हुवे तो वह पुरे दुनिया के मुसलमानो के हाकिम और इस्लामि सरदार थे, इस के बावजुद उन्होने ने हजरत ओसामा बिन जैद रजियल्लाहु अन्हु से यह इजाजत तलब कि कि हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु को मदिना मे हि रहने दिया जाए।

इस से हमे यह तालिम मिलति है कि अगर चे हम बडे ओहदे पर फाएज हो जाएँ फिर भि हमेँ हर एक के साच इज्जत व एहतराम के साथ पेश आना चाहिए, साथ हि साथ इस से यह भि सिख मिलति है कि हमें हर हाल मे उसुल और नेजाम पर कारबन्द रहना चाहिए और हमारे अन्दर अगर नजाम कि खेलाफ करने कि कुदरत भि हो तब भि हमें कानुन कि पाबन्दि करनि चाहिए।

विधार्थिः इस सरिया का आखरि अन्जाम क्या हुवा ?

---

[1] इब्ने हजर, फत्हुल बारिः(8/152)

शिक्षकः यह सरिया मुल्के शाम कि तरफ रवाना हुवा और बहोत से माले गनिमत के साथ फतेहाना मदिना मे वापिस आया, इस जंग मे कोइ एक मुसलमान जख्मि भि नहि हुवा[1]।

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/191)

छठा अध्याय

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

का मरज़ुल मौत

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बिमारि और आपका इन्तेकालः

शिक्षकः सहाबा केराम रजियल्लाहु अन्हुम पर अल्लाह कि रहमत थि कि अल्लाह ने उन्हें यह इशारा दे दिया था कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात करिब आ चुकि है, क्योँ कि आपकि मौतकि खबर कोई मामुलि खबर न थि, यहि वजर थि कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद फरमायाः जब तुम मे से किसि को मुसिबत लाहिक हो तो वह उस मुसिबतको याद कर ले जो उसे मेरि वफात से लाहिक हुइ, क्योँ कि यह सब से बडि मुसिबत है[1]।

विधार्थिः यह बात तो बहि है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात सहाबा के लिए किसि मुसिबत से कम ना थि जो आपकि तरबियत मे रहे और आपके साथ उठते बैठते थे, बल्कि यह तो हमारे लिए भि एक मुसिबत कि तरह है गोया कि आज हि आपका इन्तेकार हुवा हो, उस्तादे मोहतरम ! प्रस्न यह है कि अल्लाह तआला ने अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा को कैसे इस बात कि खबर दि कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन्तेकाल का वक्त करिब आ यगया ?

शिक्षकः सहाबा करामको इसकि बहोत सारे एशारे मिल चुके थे कि आपकि वफात करिब आचिकि है, इन मे से एक इशारा सुरतुन नस्र के नुजुल कि सुरत मे था, हदिस मे आया है किः हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु से इस आयत के बारे मे पुछा तो उन्होने जवाब दियाः यह नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात कि खबर जिस से आप को बाखबर किया गया था। हजरत उमर रजियल्लाहु ने कहाः मुझे इस सिलसिले मे कहाः मुझे भि इतना हि ज्ञान है जितना आपको ह[2]।

एक इशारा भि था कि आप हज्जतुल वेदा के मोके पर फरमाया किः यह बडे हज्जका दिन है, इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई मरतब यह दोहराते रहे किः ए अल्लाह तु गवाह रह, इस के बाद आपे लोगों को अल्विदा कहा, इसि वजह से लोगोँ ने कहा किः यह हन्नतुल वेदा है[3]।

एक इशारा उस वाकया मे था कि जब आपने हजरत मोआज रजियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा तो उन्हेँ अल्विदा कहते हुवे फरमायाः ए मोआज ! हो सकता है कि इस साल के बाद हमारी मुलाकात न हो सके। शायद तुम आओ और तुम्हे मेरि मस्जिद और मेरा कब्र हि मिले। यह सुनते हि हजरत मोआज रजियल्लाहु अन्हु आपकि बात सुनकर रोने लगे[4]।

---

[1] इब्ने साद, अत्तबकातुल कुब्राः(2/275) हदिस का यह वाक्य इन्हो ने हि जिक्र किया है, इस हदिस को इमाम मालिक ने मोअता मे रिवायत किया हैः(1/236) हदिस नः(41)

[2] बुखारिः (3/181) हदिस नः(4430)

[3] बुखारिः(1/529) हदिस नः(1742)

[4] अहमद, अल मुस्नदः(36/376) हदिस नः(33052)

यह सहबा और आले बैत पर अल्लाह तआलाकि मेहरबानि हि थि कि अल्लाह ने उन्हें आपकि वफात के मुताल्लिक मुख्तलिफ इशारे दे दिए ताकि फेराक का गम अचानक बिजलि बनकर गिरे कि वह उग गमको बरदाश्त ना कर सकेँ।

विधार्थिः अल्लाह कि कसम यह बहोत बडे एशारे थे।

शिक्षकः यकिनन् उन इशारोँ मे अजिब सि तासिर है, भला जो लोग आपके साथ दिनरात गुजारा हो, आपके साथ उठना बैठना रहा हो, जिन्होने आपको अपनि आंखो से देखा हो, आपसे बातेँ कि होँ, आपके साथ उनका खाना पिना रहा हो, उन खुश किस्मत सहाबा के लिए आपकि जुदाई कोई मामुलि बात न थि, इसि लिए अल्लाह ने उन एशारोँ के जरिए उनका गम हल्का किया और फिर उन्हें सब्र से नवाजता है ताकि उनका हुज्न व मलाल खत्म हो सके।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बिमारि के दिन कैसा गुजरा ?

सफर महिने के आखरि दिनोँ मे या रबिउल औव्वल के शुरूआति दिनों कि बात है कि नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिमार होने लगे[1] उम्मुल मोअमनिन आइशा रजियल्लाहु अन्हा कहति हैः जब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम काजिस्म भारि हो गया और आपकि तक्लिफ बढ गई तो आपने अपनि बिवियोँ से मेरे हुजरे मे रहने कि इजाजत तलब कि, बिवियोँ ने इजाजत दे दि, उस के बाद आप दो आदमियों के सहारे निकले जब आपके पावं जमीन से घिसट रहे थे[2]।

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनि बिवियोँ से इजाजत हासिल क्योँ कि ?

शिक्षकः यह एक अच्छा प्रस्न है, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनि बिवियों के दरमेयान इन्साफ काएम रखने का ख्याल रखते थे, इसि लिए हर एक बिवि के लिए आप खास दिन मोकर्रर कर रखा था, जब आपकि तक्लिफ बढ गइ और आप उन बिवियोँ से अलग अलग हुज्रे मे जाने के काबिल ना रहे तो आपने उनके अधाकार का ख्याल रखते हुवे और उनका रखने के लिए उनसे यजाजत मांगा कि आप बिमारि के दिनों मे हजरत आयशा रजियल्लाहु अन्हा के हुजरे मे गुजारें, और तमाम बिवियोँ ने आपको इजाजत दे दि। अल्लाह उन सब से राजि हो

विधार्थिः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको कोई खास बिमारि हुई थि ?

शिक्षकः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको उस जहेर कि वजह से तक्लिफ हो रहि थि जो गज्वए खैबर के मोका मर आपके खाने मे डाला गया था, बिमारि कि हालत मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

---

[1] इब्ने हेशाम, अस्सिरतुन नबवियाः(4/291)

[2] बुखारिः(3/183-184) हदिस नः(4442)

अम्मा आईशा रजियल्लाहु अन्हा से कहा करते थेः मुझे अब भि खैबरके जहरिले खाने कि तक्लिफ महसुस हो रहि है[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि तक्लिफ जब बहोत बढ गई तो आपने फरमायाः सात मश्किजे पानि भर कर लाओ और मुझपर उन्डेल दो, मुम्किन है इस तरह मै लोगोँ को कुछ नसिहत करने के काबिल हो जाउं..... आपके जिस्म मर पानि डाला गया और फिर आप लोगोँ के पास गए और नमाज पढाई फिर लोगोँ को नसिहत किया[2] ।

बिमारि कि शिद्दत कि वजह से अपना कमिज चेहरे पर डाल लेते और फरमातेः अल्लाह तआला ने यहुदियोँ को अपनि रहमत से दुर कर दिया के उन्होने अमने नबियो के कब्रों को सज्दागाह बना लिया था[3] ।

विधार्थिः उस्तादे मोहतरम क्या इसका मतलब यह है कि कब्रों पर मस्जिद बनाना सहि नहि है ?

शिक्षकः आपने बिल्कुल सहि समझा है, नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीदके तरफ बुलाने वालाते थे, आपने हमे यह तालिम दि कि हम एक अल्लाह कि इबादत करें और उसके साथ किसिको शरिक ना करेँ, और यह कि मस्जिदे सिर्फ अल्लाह कि इबादत के लिए है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः

अनुवादः और यह मस्जिदे सिर्फ अल्लाह हि के लिए खास हैं, तो इस मे अल्लाह के साथ किसिको ना पुकारो ।(सुहतुल जिन्नः 18)

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सख्त बिमारि के हालत मे भि हमे इस से तम्बिह किया जिस से इस बात कि अहमियत का अन्दाजा होता है ।

विधार्थिः यकिनन नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनि उम्मति को शिर्क से बचाने के लिए बहो फिक्रमन्द थे, और आपको यह फिक्र भि लगि रहति थि उम्मतको कैसे फाइदा पहोँचे, इस लिए आखरि वक्त तक नसिहत व खैरख्वाहि करते रहे ।

शिक्षकः यकिनन् नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनि उम्मत के तई बहोत हि फिक्रमन्द रहते थे, जैसा कि अल्लाह तआला ने बयान कयाः

अनुवादः तुम्हारे पार एक ऐसे पैगम्बर तशरिफ लाऐ हैँ जो तुम्हारि जाति से हैं जिनको तुम्हारे नुक्सान कि बातें बहोत हि भारि लगता है और वह तुम्हारे फाएदे लिए ख्वाहिशमन्द रहते है, इमान वालोँ के साथ बहोत हि शफिक मेहरबान हैं ।(सुरतुह तौबाः 128)

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने उस बिमारि मे जिस मे आपका इन्तेकाल हो गया, कह रहे थेः नमानका, गुलामोंका आर बांदियोका ख्याल रखना[4], बराबर यह जुमला कहते रहे, यहाँ तक कि

---

[1] बुखारि(3/181) हदिस नः4428)

[2] बुखारिः (3/183-184) हदिस नः(4442)

[3] बुखारिः(3/183) हदिस नः (4441)

[4] इब्ने माजाः (1/519) हदिस नः(1625)

आपकि जुबान मुबारक रूकने लगि। इस से नमाज कि अहमियत का अन्दाजा होता है और यह भि समझमे आता है कि आपको इस कि कितनि फिक्र थि, इस के एलावा इस से महिला अधिकार कि भि अहमियत मालुम होता है।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बार बार अपना हाथ पानि मे डुबोते और फिर अपने चहरे पर फेरते और फरमातेः "ला ईलाह इल्लल्ह"[1] । हजरत आइशा रजियल्लाहु अन्हा कहति हैः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वफात से कुछ पहले अपने पिठसे मुझपर टेक लगाए हुवे थे तब मैने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको कुछ कहते हुवे सुना, कान लगाया तो आप यह दुवा कर रहे थे किः "ए अल्लाह मेरि मग्फेरत कर दे और मेरे रफिकोँ से मुझे मिला[2]"। आप अपने मोत वालि बिमारि मे कुरआन कि वह आयत तेलावत कर रहे थे जिस मे उनलोगोँ का जिक्र है जिन पर अल्लाह तआला ने इन्आम किया[3] ।

नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सेहतमन्द थे तो कहा करते थे कि हर नबि को उनकि वफात से पहले उन्हे जन्नत में उनका मकाम दिखाया गया फिर इख्त्यार दिया गया। हजरत आइशा कहति है किः जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिमार हुवे और का सर मुबारक मेरि रानपर था, उस समय आपमर गशि तारि हो गई। जब आप होश मे आए तो आपने अपनि नजर घर के छत कि तरफ उठा लिया और फरमायाः ए अल्लाह मुझे अपने पास नबियोँ और से मिला दे। मै उसि वक्त समझ गई कि अब आप हमे पसन्द नहि कर सकते और मुझे वह हदिस याद आ गइ जो आपने हालते सेहत मे हमसे बयान किया करते थे। हजरत आइशा रजियल्लाहु अन्हा बयान करति है कि आखरि कलेमा जो आपकि जबान से निकला वह यहि थाः ए अल्लाह मुझे अमने पार नबियोँ जैसे बेहतरिन साथियों से मिला[4] । उस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि रूह परवाज कर गई।

वधार्थिः यह कोई आसान बात न रहि होगि।

शिक्षकः हा यह बहोत हि मुश्किल और कठिन घडि थि और यह एक बहोत हि बडा और संगीन मामल था। सहाबाए कराम को आपकि वफात कि खबर मिलि तो वह सब हैरान व परेशान हो गए और उसि हालत मे मस्जिद मे इकट्ठा हुवे। हजरत अबु बकर रजियल्लाहु अनहु उनके दरमेयान तशरिफ लाए और अल्लाह तआला कि हम्दो सना बयान कि फिर फरमायः जान लो कि जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि इबादत करता था तो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि वफात हो चुकि और जो अल्लाह तआला कि इबादत करता था तो बेशक अल्लाह तआला जिन्दा है और उसे मौत नहि आति।

उन्होंने यह आयत तेलावत किः

---

[1] बुखारिः (3/185) हदिस नः(4449)

[2] बुखारि(3/183) हदिस नः(4440)

[3] बुखारिः (3/182) हदिस नः (4435)

[4] बुखारिः (3/182) हदिस नः (4435)

अनुवादः यकिनन् आपको भि मौत आएगि और यह सब भि मरने वाले हैं ।(सुरह जुमरः 30)
और अल्लाह का यह फरमान भि उन्होने पढाः
अनुवादः हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो सिर्फ एक रसूल हैं, इस से पहले बहोत से रसुल गुजरे हैँ तो अगर वह मर जाएं या मार दिए जाएँ तो क्या तुम (इस्लाम) से एडियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनि एडि के बल फिर जाए वह अल्लाह को कोई नक्सान नहि पहोंचा सकेगा और अल्लाह तआला शुक्रगुजारोँ को जल्द बदला देगा ।(सुरह आले-इमरानः 144)
यह सुनना था कि सहाबा रोने लगे[1] ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लगभग 13 दिनों तक बिमार रहे, आपका इन्तेकाल सोमवार 12 रबिउल औव्वल को हुई, मंगल के रोज आपको आपके कपडे हि मे गुस्ल दिया गया, आपको जिन सहाबा ने गुस्ल दिया वह यह हैः अब्बास, अलि, फज्ल, ओसामा बिन जैद, औस बिन खौलि और शकरान रजियल्लाहु अन्हुम[2]। आपको तीन सफेद यमनि चादरका कफन दिया गया, फिर आपको अपने बिस्तर पर रख दिया गया, लोग जमात दर जमात आते और बगैर इमाम के इन्फेरादि तौर पर आपकि नमाजे जनाजा अदा करके निकल जाते, उम्मुल मुअमुनिन आईशा रजियल्लाहु अन्हा के हुज्रे मे जिस जगह आपकि वफात हुवि थि उसि जगह आपको दफन किया गया[3] । वफात के वक्त आपकि उम्र 63 साल थि[4] । जिस वक्त आपका इन्तेकाल हुवा उस वक्त आपकि जिरह एक यहुदि के पार एक साअ जौ के बदले गिरवि रखि हुई थि[5] ।

आपने वेरासत मे दिरहम व दिनार न छोडे, अम्र बिन हारिस कहते हैं किः नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तरेका मे दिनारो दिरहाम नहि छोडा, नाहि आपके तरेका मे गुलाम या कनिज थि, सिवाए आपके सफेद खच्चर के जिस कि आप सवारि किया करते थे, आपके हथियार और उस जमिन के जिसे आपने अल्लाह कि राह मे सदका कर दिया था[6]।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊ, अल्लाह तआला हमे अपनि और अपने नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मोहब्बत अता फरमाए, अमनि केताब और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि सुन्नत पर अमल करने कि तौफिक बख्शे, हमे जन्नतुल फिरदौस मे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ

[1] बुखारिः (3/11) हदिस नः (3668)
[2] इब्ने साद, अत्तबाकातुल कुब्राः (2/292)
[3] इब्ने साद, अत्तबाकातुल कुब्राः (2/292)
[4] बुखारिः (3/187) हदिस नः (4466)
[5] बुखारिः (3/187) हदिस नः (4467)
[6] बुखारिः (3/186) हदिस नः (4461)

नसिब करे, हमे हिदायत याफ्ता रहबर व रहनुमा और अपनि केताब और नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि सन्नतोँ का दाई बनाए। आमिन

समाप्तिः

तमाम तारिफात उस रब के लिए है जिस के फज्लो करम से यह केताब मोकम्मल हो सका, और दरूदो सलाम हो हमारे नबि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

यकिनन् यह अल्लाह तआला कि फज्लो करम हि है कि उसने मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको हमारे लिए नबि और रसूल बना कर भेजा, जिन्होंने बेहतरीन गुण और कामिल नमुना हमारे सामने छोडा, आप अल्लाह कि तरफ से दोनो जहाँ के लिए रहमत बनाकर भेजे गए थे, आपके जरिउ अल्लाह तआला ने दिनको मोकम्मल किया इस्लाम जैसि नेमत पुरा किया, हमे आपने सिधे और रोशन रास्ते पर छोडा, हमे इबादात, अख्लाकियात और मोआमलात मे दुशहालि और तंगहालि हर हाल मे अपनाए जाने वाले तरिके और रस्ते कि तालिम दि, जिस के नतिजे मे आपकि बेहतरीन और मोकम्मल जिवनी हमारे कामयाबि और भलाई के लिए सबसे बेहतरीन नमुना करार पाया।

अल्लाह तआला का एक एहसान यह भि है उस ने हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी और सुन्नत को इस तरह महफुज कर दिया कि मुसलमान पुरे एहतमाम के साथ नसल दर नसल मुसलमानोँ मे मुन्तकिल करते रहे, यहाँ तक कि आज हम इस तरह से उन तालिमात को पढते और सिखते हैं जैसे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बजाते खुद हमारे दरमेयान मौजुद हों। हर किस्म कि तारीफ और शुक्र अल्लाह तआला हि के लिए लाएक वा जेबा है जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी को इस तरह महफुज किया कि हम तक अपनि सहि शकलो सुरत मे पहोँच सका।

अब हमारि यह जिम्मेदारि बनति है कि हम आपकि जिवनी को जानें और उसपर अमल करें, अपनि संतान, परिवार और तमाम मुसलमानोँ को इस कि तालिम दें और हर तबका के लोगोँ मे इसे फैलाने कि कोशिस करेँ तामि उन्हे भि हमारे नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जिवनी से वाकफियत हो सके और वह आपके आमाल और औसाफ व अखलाक से मोतास्सिर होकर दिने इस्लाम को कुबुल कर सकेँ, जिसे अल्ला ने लोगों को बुराई और फितना स निकालकर भलाई और कामयाबि कि तरफ और जहन्नम से निकाल कर जन्नत कि तरफ लाने के लिए नाजिल किया है, उस जन्नत कि तरफ जिस के जानिब नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मन्हज और तरिका के सिवा कोई भि रास्ता नहि जाता।

ए अल्लाह ! हमेँ अपने रसुल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि इत्तेबा कि तौफिक अता फरमा, हमे आपकि सिरत और सुन्नत का पैरोकार बाना, हमे जन्नतुल फिरदौस मे आपका साथ

नसिब फरमा, हमे हेदायत याफ्ता रहनुमा बना दे, अपने दिने हनिफ कि तरफ दावत देने और उसको फैलाने के लिए हमे चुन ले, हर मुम्किन तरिके से खैरो भलाई के तमाम कामोँ मे हमेँ दीन कि खिदमत करने के काबिल बना दे, नेक आमाल पर हमारा खात्मा फरमा, हमेँ जन्नतुल फिरदौस के बुलन्द मकामात पर उन नबियोँ वलियोँ, सिद्दिको और शहिदोँ के साथ जमा कर जिनपर तुने इनूआम किए, और ए अल्लाह ! तु यस केताबको अध्यायरकत, फाईदा मन्द और कयामत तक के लिए सदकाए जारिया बान दे।

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातो वस्सलामो अला नबियिना मोहम्मद व अला आलिहि व साह बिहि अज्मईन।

मोराजआ व हवालाः

- अल कुरआन
- इब्दुल असीर, इज्जुद्दीन अबुल हसन अलि बिन अबिल करमः असदुल गाबाः(दाल.मिम) अश्शोऔब,1970ई
- इब्नुल असीर, मोजद्दिदे दिनुल मुबारक बिन मोहम्मद अल जज्रिः अन्निहाया फि गरिबिल हदिस वल असर, तहकिकः ताहिर अहमद अज्जवावि और महमुद अहमद अत्तनाजि, बैरूतः दारूल फिक्र
- अल-अस्फहानि, अबुल कासिम अलहुसैन बन मोहम्मदः अलमुफरदात भि गरिबुल कुरआन, तहकिक मोहम्मद सैय्यद किलानि, बैरूतः दारुल मआरिफ (दाल, ता)
- अलअस्फहानि, अबु मुसा मोहम्मद बिन अबि बकर अबि इसा अल मदनि, अलमज्मुअ अल मुगिस फि गरीबिल कुरआन वल हदिस, तहकिक अब्दुल किरीम अलअज्बावि, ता1, मक्का मोकर्ररमा, मर्कजुल बुहुस अल इल्मि व अहर्याउत्तोरास अल इसलामि बिजामिया उम्मुल कोरा, 1406 हिज्रि, 1986 इस्वी
- अकरम जिया उम्रि, अस्सिरतुन नबविया अस्सहिहा, मदिना मुनौव्वरा, मक्तबतुल उलूमुल हेकम,1412 हिज्रि 1996 इस्वी
- अल अलबानि, मोहम्मद नासिरूद्दीन, सहीह सुनन अल तिरमिजि, ता1, रियाधः मक्तबा अत्तरबिया ले दुवल अल खलीज, 1409 हिज्रि, 1989 इस्वी
- अल अलबानि, मोहम्मद नासिरूद्दीन, सहीह सुनन अबि दाउद, ता1 रियाधः मक्तब अत्तरकियतुल अरबि ले दुवाल अल खलीज, 1409 हिज्रि, 1989 इस्वी
- अल अलबानि, मोहम्मद नासिरूद्दीन, सहीह सुनन नेसाई, ता1 रियाधः मक्तब अत्तरकियतुल अरबि ले दुवाल अल खलीज, 1409 हिज्रि, 1988 इस्वी
- अल अलबानि, मोहम्मद नासिरूद्दीन, सहीह सुनन इब्ने माजा, ता3, रियाधः मक्तब अत्तरकियतुल अरबि ले दुवाल अल खलीज, 140झ हिज्रि, 1988 इस्वी
- बुखारी, मोहम्मद बिन इस्माईलः अल जामेउस सहि, शरह व तहकिक मोहिब्बुद्दिन अल्खतिब, तरकिम मोहम्मद फवाद अल बाकि, मोराजआ व वितरणः कोसइ मोहिब्बुद्दिन अल खतिब, ता1, काहेरा, अल्मत्बअतुस सलफिया, 1400 हिज्रि
- अल बेहकि, अबु बकर मोहम्मद बिन हसन, दलाएलुन नुबुवह, तालिकः अब्दुल मोअति कलअजि, बैरूतः दारुल कुतुबुल इल्मिया, 1984 इस्वी

➢ तिर्मिजि, अबु इसा मोहम्मद बिन ईसा बि सौरा, अल जामेउस सहि, तहकिक अहमद मोहम्मद शाकिर, मक्का मोकर्रमाः दारुल बार (दाल, ता)

➢ इब्नुल जौजि, जादुल मोयस्सर फि अम अत्तफसीर, तहकिक मोहम्मद अब्दुर्रमान अब्दुल्लाह, बैरूत दारूल फिक्र, 1407 हिज्रि

➢ खालिद बिन हामिद अल हाजमि, अल फवाइदुस सुन्निया मिन सिरतुन नबविया, मदिना मुनौव्वरा, दारुज्जमान, 1427हिज्रि, 2006 इस्वी

➢ अल हाकिम, अबु अब्दुल्लाह अल हाकिम नेसापुरि, अल मुस्तदरक अला सहिहैन, व बजिलत तल्खीस लिल हाफिज जहबि, इश्राफ युसुफ अब्दुर्रहमान अल मुरअशलि, बैरूतः दारूल मआरिफा 1406 हिज्रि 1986 इस्वी

➢ इब्ने हजर, अहमद बिन अलि बिन हजर अस्कलानि, फत्हुल बारि बि शहर सहि बुखारि, तालिक अब्दुल अजीज बिन बाज, तब्विब मोहम्मद फुआद अब्दुल बाकि, बैरूतः दारुल मारेफा(दाल.ता)

➢ अबु दाऊद, सोलैमान बिन अशअस अल अज्दि, सुनन अबि दाऊद, आअदाद व तालिकः इज्जत ओबैद अद्दोआस, आदिल अस्सैय्यिद, ता2, बैरूतः दारूल हदीस 1388हिज्रि, 1969 इस्वी

➢ अज्जहबि, शमसुद्दीन मोहम्मद बिन अहमद, सेयर आअलामुन नोबला, तहकिकः शोऐब अरनाऊत और दुसरे मोहक्केकीन, ता6, बैरूतः मोअस्ससा अर्रेसाला, 1406 हिज्रि, 1986 यस्वी

➢ अस्साअदि, अब्दुर्रहमान बिन नासिरः तैसीरुल करीमुर रहमान फि तफसीरुल कलामुल मन्नान, जेद्दाः दारूल मदनि, 1408 हिज्रि 1988 इस्वी

➢ इब्ने साअद, अत्तबकातुल कुब्रा, बैरूतः दारूस्साद, 1405 हिज्रि, 1985 इस्वी

➢ अबु तैय्यिब आबादि, औनुल माअबुद शरह सुनन अबि दाऊद, तहकिक अब्दुर्रहमान मोहम्मद उस्मान, मोअस्ससा कुरतुबा, अल काहिराः ता6, 1388 हिज्रि 1968 इस्वी

➢ अल फयुमि, अहमद बिन मोहम्मद बिन अलि अल मुकरी, अल मिस्बाहुल मुनीर भि गरीबुश्शरहुल कबिर लिरेफाई, बैरूतः दारूल कलम, (दाल, ता)

➢ इब्नुल कैय्यीम अल जौजिया, शमसुद्दिन मोहम्मद बिन अबि बकर, जादुल मआद भि हुदा खैरुल इबाद, तहकिक शोएब अरनाउत और अब्दुल कादिर अरनाउत, ता13, मोअस्ससा अर्रेसाला, 1406 हिज्रि 1986 इस्वी

➢ इब्ने कसीर, एमादुद्दीन अबुल फिदा इस्माईलः तफ्सिर अल कुरआनुल अजीम, ता2, दारुल मारेफा, 1407 हिज्रि, 1987 इस्वी

- इब्ने कसीर, एमादुद्दीन अबुल फिदा इस्माईलः अल बेदाया वन्नेहाया, तहकिक अहमद अबु मुल्हिम व दिगर, ता1, काहेराः दारुल रैय्यान, 1408 इस्वि, 1988 हिज्रि
- इब्ने माजा, मोहम्मद बिन यजीद अल्कज्वीनि, सुनन इब्ने माजा, तहकिक मोहम्मद फौआद अब्दुल बाकि (दाल, मिम) दारूल अहयाउत्तोरसुल अरबि (दाल। ता)
- मालिक बिन अनस, अल मोवत्ता, तहकिक मोहम्मद फोआद अब्दुल बाकि, बैरूत, दार अहयाउत्तोरास अल अरबि, 1406 हिज्रि, 1986 इस्वी
- मुस्लिम, अबुल हसन मुस्लिम बिनिल हज्जाज अल कोरशि नेसापुरिः सहि मुस्लिम, तहकिक फोआद अब्दुल बाकि, काहेराः दारूल हदीस(दाल,ता)
- इब्ने मन्जूर, अबुल फज्ल जमालुद्दीन मोहम्मद बिन मोकर्रमः लेसानुल अरब, बैरूतः दारुस्साद(ता,साद)
- मेहदि रिज्कुल्लाह अहमद, अस्सिरतुन नबविया फि जौइल मसादिरुल अस्लियाः रियाधः मरकज मलिक फैसल, 1416 हिज्रि, 1996 इस्वी
- अन्नेसाई, अबु अब्दुर्रहमान अहमद बिन शोएब, सुनन नेसाई, शरह हाफिज जलालुद्दिन अस्सुयुति, हाशिया इमाम सिन्दि, तरकीम अब्दुल फत्ताह अबु गद्दह,ता1, बैरूतः मक्तबल मत्बुआत अल-इस्लामिया हल्ब, 1406 हिज्रि, 1986 इस्वी
- अन्नववी, मोहियुद्दीन अबु जकरिया यहया बि शरफ, अल मिन्हाज फि शरह मुस्लिम बिनिल हज्जाज, बैरूत, दारूल केताबुल अरबि, 1407 हिज्रि, 1987 इस्वी
- इब्ने हेशाम, अबु मोहम्मद अब्दुल मलिक मोहम्मद बिन होशाम बिन अय्युब अल हिम्यरीः अस्सिरतुन नबविया, तहकीकः मुस्तफा अस्सिका एव दुसरे मोहक्किकिन बैरूतः दारुल कलम(दाल,ता)
- अल हैसमि नुरूद्दीन अलि बिन अबि बकर, मज्मउज जवाएद व मम्बउल फवाएद, तहैय्युरल हाफिजीन अल इराकि व इब्ने हजर, काहेरा, बैरूतः दार अरैय्यान, 1407 हज्रि, 1987 इस्वी
- अल वाकदि, मोहम्मद बिन उमर, अल मगाजी, बैरूत आलमुल कुतुब (दाल, ता)
- अबु याअला, अहमद बिन अलि बिनिल मोसन्ना अत्तमिमि, अल मुस्नद, तहकीकः हुसैन सलीम असद, ता1 दिमश्क सिरियाः दारुल मामून लित्तोरास, 1407 हिज्रि, 1987 इस्वी

विषय सुचि

प्रस्तावना......4
-प्रथम अध्याय: जन्म से पैगम्बर बनाए जाने तक......5
-आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म......6
-जन्मभुमी......6
-जन्मतिथि 7
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वंशावलि......10
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनाथ होन......10
-दादा अब्दुल मुत्तलिब कि केफालत मे......14
-चचा अबुतालिब कि केफालत मे......15
-ब्यवहारिक जिवन......16
-आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विवाह......18
-हल्फुल फुजूल......19
-काअबा कि तामिर......20
-दुसरा अध्याय: बेअसत से हिजरत तक......22
-बेअसते नबवि......23
-दावतका पहला चरण......28
-जिन्नों का इस्लाम कुबूल करना......29
-दावतका दुसरा चरण......30
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमको बिभिन्न तरिकोँ से तक्लिफें दि गइ......32
-इस्लाम कुबुल करने वाले सहाबाको दि जाने वालि अजियते......36
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि दावत को रोकने के लिए सौदेबाजि......38
-आपके चचा अबुतालिब से बातचित......39
-उत्बा बिन रबिया कि बातचित......40
-मोअजेजा (चमत्कार) का मोतालबा......42
-हबशा कि तरफ हिजरत......45
-प्रस्थान के स्थान पर मुसलमानो का पिछा किया गया......46
-हजरत हम्जा रजियल्लाहु अन्हु का कुबूले इस्लाम......50
-हजरत उमर बिन खत्ताब का कुबुले इस्लाम......52

-शेअबे अबि तालिब मे नजरबन्द..........54
-अबु तालिब का देहन्त और हजरत खदिजा रजियल्लाहु अन्हाका स्वर्गवास..........56
-ताएफ का सफर..........57
-इस्रा व मेअराज..........62
-विभिन्न कबिला वालोँको इस्लाम कि दावत..........65
-पहलि बैअते उकबा..........68
-दुसरि बैअते उकबा..........69
-तिसरा अध्यायः मदिना कि तरफ हिजरत..........71
-मदिना कि तरफ प्रस्थान..........72
-प्रस्थान कि पृष्टभुमि..........72
-हिज्रत कि तैय्यारिया..........73
-सौर गुफा कि तफ्सिल..........77
-सौर के गुफा से समन्दर कि साहिल तक..........79
-एक चट्टान के साए मे..........80
-सोराका बिन मालिक नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म कि तलाश मे..........82
-उम्मे माअबद का खेमा..........84
-चरवाहे का कुबुले इस्लाम..........86
-हिज्रत के रास्ते मे आपको कपडे दाए जाते है..........87
-मदिना मे प्रवेश और पुरजोश स्वागत..........87
-चौथा अध्यायः इस्लामि हुकुमत का कयाम..........90
-मदिना के समाजिक जिवनकि एक झलक..........91
-मस्जिद कि तामिर..........91
-मदिना के अन्दर नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म का ठिकाना..........92
-अन्सार व मोहजेरीन मे भाईचारा..........94
-मिसाके मदिना..........97
-इस मोआहिदा के अहम अंश यह है..........98
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका ठिकाना..........100
अस्हाबुस्सुफ्फा..........100
-वफुद कि तालिम..........101
-लोगोँ को दीन कि तालिम..........102

-भाला और तीरका खेल..103
-बच्चोँ से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि मोहब्बत..103
-पाँचवाँ अध्याय नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गजवात..................................107
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गजवात..108
-गजवाए बदर..109
गजवाए उहुद..115
-गज्वा बनु अनजीर..120
-गज्वए खन्दक...122
-गज्वा बनि कोरैजा...127
गज्वा होदैबिया...128
गज्वए खैबर...133
-बादशाहोँ और हाकिमोँ को चिठ्ठि...137
-कजा उमरा..138
-गज्वा फत्हे मक्का...139
-गज्वए हुनैन..145
-गज्वाए ताएफ..149
-गज्वा तबूक..151
-गिरोहका साल..156
-हज्जतुल वेदा..157
-सरिया ओसामा बिन जैद..158
-छठा अध्याय नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमका मरजुल मौत..................................162
-नबि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि बिमारि और आपका इन्तेकाल..................................163
-समाप्ति..169
-मोराजआ व हवाला...171
-विषय सुचि...174

पैगम्बर मोहम्मद (ﷺ) कि संक्षिप्त जिवनी

الموجز في السيرة النبوية

النسخة الهندية